गिनती

[illegible]

आलमगीर यहूदी मसीही रिवायत मूसा को गिनती की किताब का मुसन्निफ़ होने के लिए मनसूब करते हैं — इस किताब में कई एक ए' दाद व शुमार, आबादी की गिनतियाँ, क़बीलों और काहिनों के शुमार और दीगर लोगों की ता'दाद की मा'लूमात है — गिनती की किताब बनी इस्राईल के ख़ुरुज के दूसरे साल से लेकर माजिद 35 साल यानी 40 साल तक भटकते हुए आखिर — ए — कार सीना पहाड़ पर ख़ेमा जन होने की बाबत बताती है उसवक्त नई पीढ़ी वायदा किए हुए मुल्क में दाखिल होने को तैयार थे इस के अलावा इस किताब में ख़ुरुज के दूसरे साल से लेकर चालीसवें साल का बयान मिलता है — बाक़ी 38 साल बयाबान में भटकने की बाबत है।

[illegible]

इस के तसनीफ़ की तारीख तक़रीबन 1446 - 1405 क़ब्ल मसीह है।

किताब के वाक़ियात इस्राईलियों के मिस्र से अलग होने के दूसरे साल से शुरू हुआ जब वह सीना पहाड़ के नीचे आकर खेमा जन हुए (1:1)।

[illegible]

गिनती की किताब बनी इस्राईल को लिखी गई थी ताकि वायदा किए हुए मुल्क की तरफ़ उन के सफ़र की तहरीरी शहादत हो सके — मगर यह इस बात को भी याद दिलाती है कि मुस्तक़बिल के तमाम बाइबिल के कारियीन मालूम करे की जिस तरह खुदा मुल्क — ए — कनान में पहुँचने तक उनके सफ़र में साथ रहा वैसे ही जन्नत पहुँचने तक के सफ़र में हमारे साथ रहेगा।

[illegible]

मूसा ने गिनती की किताब इस लिए लिखी क्यूंकि दूसरी पीढ़ी वादा किए हुए मुल्क में दाख़िल होने वाली थी (गिनती 32:2) उस पीढ़ी की हौसला अफज़ाई के लिए कि वायदा किया मुल्क को अपने मातहत कर ले — गिनती की किताब खुदा के बिला शर्तिया वफ़ादारी जो बनी इस्राईल के लिए थी उस को इज़हार करती है जबकि पहली पीढ़ी ने अहद की बर्कत का इनकार किया फिर भी खुदा दूसरी पीढ़ी के लिए अपने वादे में वफ़ादार रहा उन के शिकायत करने बग़ावत करने और सरकशी करने के बावजूद खुदा ने उस कौम को बरकत दी और दूसरी पीढ़ी को वायदा किए हुए मुल्क में पहुंचाया।

[illegible]

बनी इस्राईल का सफ़र।

बैरूनी ख़ाका

1 वादा किया हुआ मुल्क की तरफ़ रवाना होने की तैयारी — 1:1-10:10
2. सीना के जंगल से ले कर कादेश बरने'तक का सफ़र — 10:11-12:16
3. बग़ावत का अंजाम ताखीर होना — 13:1-20:13
4. कदेश बरने'से लेकर मोआब के मैदानी इलाक़े का सफ़र — 20:14-22:1
5. बनी इस्राईल मोआब में वादा किया हुआ मुल्क लेने का तवक्को — 22:2-32:42
6. कई एक बातों के साथ किताब का ज़मीमा — 33:1-36:13

[illegible]

1 बनी — इस्राईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकल आने के दूसरे बरस के दूसरे महीने की पहली तारीख़ को सीना के वीरान में ख़ुदावन्द ने ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में मूसा से कहा कि,

2 “तुम एक — एक मर्द का नाम ले लेकर गिनो, और उनके
नामों की ता'दाद से बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत की
मर्दुमशुमारी का हिसाब उनके क़बीलों और आबाई ख़ान्दानों के
मुताबिक़ करो।
3 बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के जितने
इस्राईली जंग करने के क़ाबिल हों, उन सभों के अलग — अलग
दलों को तू और हारून दोनों मिल कर गिन डालो।
4 और हर क़बीले से एक — एक आदमी जो अपने आबाई
ख़ान्दान का सरदार है तुम्हारे साथ हो।
5 और जो आदमी तुम्हारे साथ होंगे उनके नाम यह हैं: रूबिन
के क़बीले से इलिसूर बिन शदियूर
6 शमौन के क़बीले से सलूमीएल बिन सूरीशद्दी,
7 यहूदाह के क़बीले से नहसोन बिन 'अम्मीनदाब,
8 इश्कार के क़बीले से नतनीएल बिन ज़ुग़ार,
9 ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,
10 यूसुफ़ की नसल में से इफ़्राईम के क़बीले का इलीसमा'अ
बिन 'अम्मीहूद, और मनस्सी के क़बीले का जमलीएल बिन
फ़दाहसूर,
11 बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन जिदा'ऊनी
12 दान के क़बीले से अख़ी'अज़र बिन 'अम्मीशद्दी,
13 आशर के क़बीले से फ़ज'ईएल बिन 'अकरान,
14 जद्द के क़बीले से इलियासफ़ बिन द'ऊएल,
15 नफ़्ताली के क़बीले से अख़ीरा' बिन 'एनान।”
16 यही अश्ख़ास जो अपने आबाई क़बीलों के रईस और *बनी
— इस्राईल में हज़ारों के सरदार थे जमा'अत में से बुलाए गए।
17 और मूसा और हारून ने इन अश्ख़ास को जिनके नाम
मज़कूर हैं अपने साथ लिया।

---

* **1:16** वह बनी इस्राईल के क़बीलों के सरदार थे, वह एकएकहज़ार लोगों पर सरदार थे —

18 और उन्होंने दूसरे महीने की पहली तारीख़ को सारी
जमा'अत को जमा' किया, और इन लोगों ने बीस बरस और उससे
ऊपर — ऊपर की उम्र के सब आदमियों का शुमार करवा के अपने
— अपने क़बीले, और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़ अपना अपना
हस्ब — ओ — नसब लिखवाया।
19 इसलिए जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उसी के
मुताबिक़ उसने उनको दश्त — ए — सीना में गिना।
20 और इस्राईल के पहलौठे रूबिन की नसल के लोगों में से एक
— एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और
जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान
के मुताबिक़ अपने नाम से गिना गया।
21 इसलिए रूबिन के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह छियालीस हज़ार पाँच सौ थे।
22 और शमौन की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के
क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
अपने नाम से गिना गया।
23 इसलिए शमौन के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह उन्सठ हज़ार तीन सौ थे।
24 और जद्द की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने
के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।
25 इसलिए जद्द के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह
पैंतालीस हज़ार छ: सौ पचास थे।
26 और यहूदाह की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के
क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।

27 इसलिए यहूदाह के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह चौहत्तर हज़ार छ: सौ थे।
28 और इश्कार की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के
क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।
29 इसलिए इश्कार के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह चव्वन हज़ार चार सौ थे।
30 और ज़बूलून की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के
क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।
31 इसलिए ज़बूलून के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह सतावन हज़ार चार सौ थे।
32 और यूसुफ़ की औलाद या'नी इफ़्राईम की नसल के लोगों में
से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र
का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई
ख़ान्दान के मुताबिक़ गिना गया।
33 इसलिए इफ़्राईम के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह चालीस हज़ार पाँच सौ थे।
34 और मनस्सी की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के
क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।
35 इसलिए मनस्सी के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह बत्तीस हज़ार दो सौ थे।
36 और बिनयमीन की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के
क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।

37 इसलिए बिनयमीन के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह पैंतिस हज़ार चार सौ थे।
38 और दान की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने
के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।
39 इसलिए दान के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह
बासठ हज़ार सात सौ थे।
40 और आशर की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के
क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।
41 इसलिए आशर के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह इकतालीस हज़ार पाँच सौ थे।
42 और नफ़्ताली की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो
बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के
क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
गिना गया।
43 इसलिए, नफ़्ताली के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए
वह तिरपन हज़ार चार सौ थे।
44 यही वह लोग हैं जो गिने गए। इन ही को मूसा और हारून
और बनी — इस्राईल के बारह रईसों ने जो अपने — अपने आबाई
ख़ान्दान के सरदार थे, गिना।
45 इसलिए बनी — इस्राईल में से जितने आदमी बीस बरस
या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के और जंग करने के क़ाबिल थे,
वह सब गिने गए।
46 और उन सभों का शुमार छ: लाख तीन हज़ार पाँच सौ पचास
था।
47 पर लावी अपने आबाई क़बीले के मुताबिक़ उनके साथ गिने
नहीं गए।

48 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा था कि,
49 'तू लावियों के क़बीले को न गिनना और न बनी — इस्राईल
के शुमार में उनका शुमार दाख़िल करना,
50 बल्कि तू लावियों को शहादत के घर और उसके सब बर्तनों
और उसके सब लवाज़िम के मुतवल्ली मुक़र्रर करना। वही घर
और उसके सब बर्तनों को उठाया करें और वहीं उसमें ख़िदमत भी
करें और घर के आस — पास वही अपने ख़ेमे लगाया करें।
51 और जब घर को आगे रवाना करने का वक़्त हो तो लावी उसे
उतारें, और जब घर को लगाने का वक़्त हो तो लावी उसे खड़ा
करें; और अगर कोई अजनबी शख़्स उसके नज़दीक आए तो वह
जान से मारा जाए।
52 और बनी — इस्राईल अपने — अपने दल के मुताबिक़
अपनी — अपनी छावनी और अपने — अपने झंडे के पास अपने
— अपने ख़ेमे डालें;
53 लेकिन लावी शहादत के घर के चारों तरफ़ ख़ेमे लगाएँ,
ताकि बनी — इस्राईल की जमा'अत पर ग़ज़ब न हो; और लावी
ही शहादत के घर की निगाहबानी करें।”
54 चुनाँचे बनी — इस्राईल ने जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म
दिया था वैसा ही किया।

2

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि
2 “बनी — इस्राईल अपने — अपने ख़ेमे अपने — अपने झंडे
के निशान के पास और अपने — अपने आबाई ख़ान्दान के 'अलम
के साथ ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के सामने और उसके चारों
तरफ़ लगाएँ।
3 और जो पश्चिम की तरफ़ जिधर से सूरज निकलता है, अपने
ख़ेमे अपने दलों के मुताबिक़ लगाएँ वह यहूदाह की छावनी के

झंडे के लोग हों, और अम्मीनदाब का बेटा नहसोन बनी यहूदाह
का सरदार हो;
4 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह सब
चौहत्तर हजार छ: सौ थे।
5 और इनके क़रीब इश्कार के क़बीले के लोग ख़ेमे लगायें, और
ज़ुग़र का बेटा नतनीएल बनी इश्कार का सरदार हो;
6 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे चव्वन हज़ार
चार सौ थे।
7 फिर ज़बूलून का क़बीला हो, और हेलोन का बेटा इलियाब
बनी ज़बूलून का सरदार हो;
8 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह सत्तावन
हज़ार चार सौ थे।
9 इसलिए जितने यहूदाह की छावनी में अपने — अपने दल
के मुताबिक़ गिने गए वह एक लाख छियासी हज़ार चार सौ थे।
पहले यही रवाना हुआ करें।
10 “और दख्खिन की तरफ़ अपने दलों के मुताबिक़ रूबिन की
छावनी के झंडे के लोग हों, और शदियूर का बेटा इलिसूर बनी
रूबिन का सरदार हो;
11 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह
छियालीस हज़ार पाँच सौ थे।
12 और इनके क़रीब शमौन के क़बीले के लोग ख़ेमे लगायें, और
सूरीशद्दी का बेटा सलूमीएल बनी शमौन का सरदार हो;
13 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह उनसठ
हज़ार तीन सौ थे।
14 फिर जद्द का क़बीला हो, और र'ऊएल का बेटा इलियासफ़
बनी जद्द का सरदार हो;
15 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह पैन्तालीस
हज़ार छ: सौ पचास थे।
16 इसलिए जितने रूबिन की छावनी में अपने — अपने दल के

मुताबिक़ गिने गए वह एक लाख इक्कावन हज़ार चार सौ पचास
थे। रवानगी के वक़्त दूसरी नौबत इन लोगों की हो।
17 “फिर ख़ेमा — ए — इजितमा'अ लावियों की छावनी के
साथ जो और छावनियों के बीच में होगी आगे जाए और जिस
तरह से लावी ख़ेमे लगाएँ उसी तरह से वह अपनी — अपनी
जगह और अपने — अपने झंडे के पास — पास चलें।
18 'और पश्चिम की तरफ़ अपने दलों के मुताबिक़ इफ़्राईम की
छावनी के झंडे के लोग हों, और 'अम्मीहूद का बेटा इलीसमा'
बनी इफ़्राईम का सरदार हो;
19 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे, वह चालीस
हज़ार पाँच सौ थे।
20 और इनके क़रीब मनस्सी का क़बीला हो, और फ़दाहसूर का
बेटा जमलीएल बनी मनस्सी का सरदार हो;
21 उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे बत्तीस हज़ार दो
सौ थे।
22 फिर बिनयमीन का क़बीला हो, और जिद'औनी का बेटा
अबिदान बनी बिनयमीन का सरदार हो;
23 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह पैंतीस
हज़ार चार सौ थे।
24 इसलिए जितने इफ़्राईम की छावनी में अपने — अपने दल
के मुताबिक़ गिने गए वह एक लाख आठ हज़ार एक सौ थे। रवाना
के वक़्त तीसरी नौबत इन लोगों की हो।
25 'और शिमाल की तरफ़ अपने दलों के मुताबिक़ दान की
छावनी के झंडे के लोग हों और 'अम्मीशद्दी का बेटा अख़ी'अज़र
बनी दान का सरदार हो;
26 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे, वह बासठ
हज़ार सात सौ थे।
27 इनके क़रीब आशर के क़बीले के लोग ख़ेमे लगाएँ, और
'अकरान का बेटा फ़ज'ईएल बनी आशर का सरदार हो;

28 और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह, इकतालीस हज़ार पाँच सौ थे।

29 फिर नफ़्ताली का क़बीला हो, और 'एनान का बेटा अख़ीरा' बनी नफ़्ताली का सरदार हो;

30 और उसके दल के लोग जो शुमार किये गए, वह तिरपन हज़ार चार सौ थे।

31 फिर जितने दान की छावनी में गिने गए वह एक लाख सत्तावन हज़ार छ: सौ थे। यह लोग अपने — अपने झंडे के पास — पास होकर सब से पीछे रवाना हुआ करें।"

32 बनी — इस्राईल में से जो लोग अपने आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ गिने गए वह यही हैं; और सब छावनियों के जितने लोग अपने — अपने दल के मुताबिक़ गिने गए वह छ: लाख तीन हज़ार पाँच सौ पचास थे।

33 लेकिन लावी जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था, बनी — इस्राईल के साथ गिने नहीं गए।

34 इसलिए बनी — इस्राईल ने ऐसा ही किया और जो — जो हुक्म ख़ुदावन्द ने मूसा को दिया था उसी के मुताबिक़ वह अपने — अपने झंडे के पास और अपने आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़, अपने — अपने घराने के साथ ख़ेमे लगाते और रवाना होते थे।

3

[illegible]

1 और जिस दिन ख़ुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर मूसा से बातें कीं, तब हारून और मूसा के पास यह औलाद थी।

2 और हारून के बेटों के नाम यह हैं: नदब जो पहलौठा था, और अबीहू और इली'एलियाज़र और ऐतामर।

3 हारून के बेटे जो कहानत के लिए मम्सूह हुए और जिनको उसने कहानत की ख़िदमत के लिए मख़्सूस किया था उनके नाम यही हैं।

4 और नदब और अबीहू तो जब उन्होंने दश्त — ए — सीना में
ख़ुदावन्द के सामने ऊपरी आग पेश कीं तब ही ख़ुदावन्द के सामने
मर गए, और वह बे — औलाद भी थे। और इली'एलियाज़र
और ऐतामर अपने बाप हारून के सामने कहानत की ख़िदमत
को अन्जाम देते थे।
5 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
6 "लावी के क़बीले को नज़दीक लाकर हारून काहिन के आगे
हाज़िर कर ताकि वह उसकी ख़िदमत करें।
7 और जो कुछ उसकी तरफ़ से और जमा'अत की तरफ़ से
उनको सौंपा जाए वह सब की ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के आगे
निगहबानी करें ताकि घर की ख़िदमत बजा लाएँ।
8 और वह ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के सब सामान की और
बनी — इस्राईल की सारी अमानत की हिफ़ाज़त करें ताकि घर
की ख़िदमत बजा लाएँ।
9 और तू लावियों को हारून और उसके बेटों के हाथ में सुपर्द
कर; बनी — इस्राईल की तरफ़ से वह बिल्कुल उसे दे दिए गए
हैं।
10 और हारून और उसके बेटों को मुक़र्रर कर, और वह अपनी
कहानत को महफ़ूज़ रख्खे और अगर कोई अजनबी नज़दीक आये
तो वह जान से मारा जाए।"
11 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
12 "देख, मैंने बनी — इस्राईल में से लावियों को उन सभों
के बदले में ले लिया है जो इस्राईलियों में पहलौठी के बच्चे हैं,
इसलिए लावी मेरे हों।
13 क्यूँकि सब पहलौठे मेरे हैं, इसलिए कि जिस दिन मैंने मुल्क
— ए — मिस्र में सब पहलौठों को मारा, उसी दिन मैंने बनी —
इस्राईल के सब पहलौठों को, क्या इंसान और क्या हैवान, अपने
लिए पाक किया; इसलिए वह ज़रूर मेरे हों। मैं ख़ुदावन्द हूँ।"

[illegible]

14 फिर ख़ुदावन्द ने दश्त — ए — सीना में मूसा से कहा,
15 “बनी लावी को उनके आबाई ख़ान्दानों और घरानों के
मुताबिक़ शुमार कर, या'नी एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर
के हर लड़के को गिनना।”
16 चुनाँचे मूसा ने ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ जो उसने उसे
दिया, उनको गिना।
17 और लावी के बेटों के नाम यह हैं: जैरसोन और क़िहात और
मिरारी।
18 जैरसोन के बेटों के नाम जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं:
लिबनी और सिम'ई।
19 और क़िहात के बेटों के नाम जिनसे उनके ख़ान्दान चले
'अमराम और इज़हार और हब्रून और 'उज़्ज़ीएल हैं।
20 और मिरारी के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले, महली और
मूशी हैं। लावियों के घराने उनके आबाई ख़ान्दानों के मुवाफ़िक़
यही हैं।
21 और जैरसोन से लिबनियों और सिम'ईयों के ख़ान्दान चले;
यह जैरसोनियों के ख़ान्दान हैं।
22 इनमें जितने फ़रज़न्द — ए — नरीना एक महीने और उससे
ऊपर — ऊपर के थे वह सब गिने गए और उनका शुमार सात
हज़ार पाँच सौ था।
23 जैरसोनियों के ख़ान्दानों के आदमी घर के पीछे पश्चिम की
तरफ़ अपने ख़ेमे लगाया करें।
24 और लाएल का बेटा इलियासफ़, जैरसोनियों के आबाई
ख़ान्दानों का सरदार हो।
25 और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के जो सामान बनी जैरसोन
की हिफ़ाज़त में सौंपे जाएँ वह यह हैं: घर और ख़ेमा, और उसका
ग़िलाफ़, और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े का पर्दा,
26 और घर और मज़बह के गिर्द के सहन के पर्दे, और सहन के
दरवाज़े का पर्दा, और वह सब रस्सियाँ जो उसमें काम आती हैं।

27 और क़िहात से 'अमरामियों और इज़हारियों और हबरूनियों
और 'उज़्ज़ीएलियों के ख़ान्दान चले; ये क़िहातियों के ख़ान्दान हैं।
28 उनके फ़र्ज़न्द — ए — नरीना एक महीने और उससे ऊपर
— ऊपर के आठ हज़ार छ: सौ थे। हैकल की निगहबानी इनके
ज़िम्मे थी।
29 बनी क़िहात के ख़ान्दानों के आदमी घर की दख्खिनी सिम्त
में अपने ख़ेमे डाला करें।
30 और 'उज़्ज़ीएल का बेटा इलिसफ़न क़िहातियों के घरानों के
आबाई ख़ान्दान का सरदार हो।
31 और सन्दूक़ और मेज़ और शमा'दान और दोनों मज़बहे और
हैकल के बर्तन, जो इबादत के काम में आते हैं, और पर्दे और हैकल
में बर्तन का सारा सामान, यह सब उनके ज़िम्मे हों।
32 और हारून काहिन का बेटा इली'एलियाज़र लावियों के
सरदारों का सरदार और हैकल के मुत्वल्लियों का नाज़िर हो।
33 मिरारी से महलियों और मूशियों के ख़ान्दान चले; यह
मिरारियों के ख़ान्दान हैं।
34 इनमें जितने फ़रज़न्द — ए — नरीना एक महीने और उससे
ऊपर — ऊपर के थे वह छ: हज़ार दो सौ थे।
35 और अबीख़ैल का बेटा सूरीएल मिरारियों के घरानों के
आबाई ख़ान्दान का सरदार हो। यह लोग घर की उत्तरी सिम्त
में अपने ख़ेमे डाला करें।
36 और घर के तख़्तों और उसकी बेडों और सुतूनों और ख़ानों
और उसके सब आलात, और उसकी ख़िदमत के सब लवाज़िम की
मुहाफ़िज़त,
37 और सहन के चारों तरफ़ के सुतूनों, और ख़ानों और मेख़ों
और रस्सियों की निगरानी बनी मिरारी के ज़िम्मे हो।
38 और घर के आगे पश्चिम की तरफ़ जिधर से सूरज निकलता
है, या'नी ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के आगे, मूसा और हारून
और उसके बेटे अपने ख़ेमे लगाया करें और बनी — इस्राईल के

बदले हैकल की हिफ़ाज़त किया करें; और जो अजनबी शख़्स
उसके नज़दीक आए वह जान से मारा जाए।
39 इसलिए लावियों में से जितने एक महीने और उससे ऊपर
— ऊपर की उम्र के थे उनको मूसा और हारून ने ख़ुदावन्द के
हुक्म के मुवाफ़िक़ उनके घरानों के मुताबिक़ गिना, वह शुमार में
बाईस हज़ार थे।

[illegible]

40 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि "बनी इस्राईल के सब
नरीना पहलौटे, एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के गिन ले
और उनके नामों का शुमार लगा।
41 और बनी — इस्राईल के सब पहलौठों के बदले लावियों
को, और बनी — इस्राईल के चौपायों के सब पहलौठों के बदले
लावियों के चौपायों को मेरे लिए ले। मैं ख़ुदावन्द हूँ।"
42 चुनाँचे मूसा ने ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ बनी —
इस्राईल के सब पहलौठों को गिना।
43 तब जितने नरीना पहलौठे एक महीने और उससे ऊपर —
ऊपर की उम्र के गिने गए, वह नामों के शुमार के मुताबिक़ बाईस
हज़ार दो सौ तिहतर थे।
44 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
45 "बनी — इस्राईल के सब पहलौठों के बदले लावियों को,
और उनके चौपायों के बदले लावियों के चौपायों को ले; और लावी
मेरे हों, मैं ख़ुदावन्द हूँ।
46 और बनी — इस्राईल के पहलौठों में जो दो सौ तिहत्तर
लावियों के शुमार से ज़्यादा हैं, उनके फ़िदिये के लिए
47 तू हैकल की मिस्काल के हिसाब से हर शख़्स पाँच मिस्काल
लेना एक मिस्क़ाल बीस जीरह का होता है।
48 और इनके फ़िदिये का रुपया जो शुमार में ज़्यादा हैं तू हारून
और उसके बेटों को देना।"

49 तब जो उनसे जिनको लावियों ने छुड़ाया था, शुमार में
ज़्यादा निकले थे उनके फ़िदिये का रुपया मूसा ने उनसे लिया।
50 ये रुपया उसने बनी — इस्राईल के पहलौठों से लिया,
इसलिए हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक हज़ार तीन सौ
पैंसठ मिस्क़ालें वसूल हुई।
51 और मूसा ने ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ फ़िदिये का रुपया
जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया था, हारून और उसके बेटों
को दिया।

4

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि,
2 “बनी लावी में से क़िहातियों को उनके घरानों और आबाई
ख़ान्दानों के मुताबिक़,
3 तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने ख़ेमा
— ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की ख़िदमत में
शामिल हैं, उन सभों को गिनो।
4 और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में पाकतरीन चीज़ों की
निस्बत बनी क़िहात का यह काम होगा,
5 कि जब लश्कर रवाना हो तो हारून और उसके बेटे आएँ और
बीच के पर्दे को उतारें और उससे शहादत के सन्दूक़ को ढाँकें,
6 और उस पर तुख़स की खालों का एक ग़िलाफ़ *डालें, और
उसके ऊपर बिल्कुल आसमानी रंग का कपड़ा बिछाएँ, और उसमें
उसकी चोबें लगाएँ।
7 और नज़्र की रोटी की मेज़ पर आसमानी रंग का कपड़ा
बिछाकर, उसके ऊपर तबाक़ और चमचे और उँडेलने के कटोरे
और प्याले रख्खें; और दाइमी रोटी भी उस पर हो।

* **4:6** पढ़ें ख़ुरुज 25:5

8 फिर वह उन पर सुर्ख़ रंग का कपड़ा बिछाएँ और उसे तुख़स
की खालों के एक ग़िलाफ़ से ढाँकें, और मेज़ में उसकी चोबें लगा
दें।
9 फिर आसमानी रंग का कपड़ा लेकर उससे रोशनी देने वाले
शमा'दान को, और उसके चराग़ों और गुलगीरों और गुलदानों
और तेल के सब बर्तनों को, जो शमा'दान के लिए काम में आते
हैं ढाँकें;
10 और उसको और उसके सब बर्तनों को तुख़स की खालों के
एक ग़िलाफ़ के अन्दर रख कर उस ग़िलाफ़ को चौखटे पर धर दें।
11 और ज़रीन मज़बह पर आसमानी रंग का कपड़ा बिछाएँ
और उसे तुख़स की खालों के एक ग़िलाफ़ से ढाँकें और उसकी
चोबें उसमें लगाएँ।
12 और सब बर्तनों को जो हैकल की ख़िदमत के काम में आते
हैं लेकर उनको आसमानी रंग के कपड़े में लपेटें और उनको तुख़स
की खालों के एक ग़िलाफ़ से ढाँक कर चौखटे पर धरें।
13 फिर वह मज़बह पर से सब राख को उठाकर उसके ऊपर
अर्गवानी रंग का कपड़ा बिछाएँ।
14 उसके सब बर्तन जिनसे उसकी ख़िदमत करते हैं जैसे
अंगीठियाँ और सेख़ें और बेल्चे और कटोरे, ग़र्ज़ मज़बह के सब
बर्तन उस पर रख्खें, और उस पर तुख़स की खालों का एक ग़िलाफ़
बिछाएँ और मज़बह में चोबें लगा दें।
15 और जब हारून और उसके बेटे हैकल की और हैकल के सब
अस्बाब को ढाँक चुकें, तब ख़ेमागाह के रवानगी के वक़्त बनी
क़िहात उसके उठाने के लिए आएँ लेकिन वह हैकल को न छुएँ,
ऐसा न हो कि वह मर जाएँ। ख़ेमा — ए — इजितमा'अ की यही
चीज़ें बनी क़िहात के उठाने की हैं।
16 “और रोशनी के तेल, और ख़ुशबूदार ख़ुशबू और दाइमी नज़्र
की क़ुर्बानी और मसह करने के तेल, और सारे घर, और उसके
लवाज़िम और हैकल और उसके सामान की निगहबानी हारून

काहिन के बेटे इली'एलियाज़र के ज़िम्मे हो।”
17 और ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि;
18 “तुम लावियों में से क़िहातियों के क़बीले के ख़ान्दानों को
मुनक़ता' होने न देना;
19 बल्कि इस मक़सूद से कि जब वह पाकतरीन चीज़ों के पास
आएँ तो ज़िन्दा रहें, और मर न जाएँ, तुम उनके लिए ऐसा करना
कि हारून और उसके बेटे अन्दर आ कर उनमें से एक — एक का
काम और बोझ मुक़र्रर कर दें।
20 लेकिन वह हैकल को देखने की ख़ातिर दम भर के लिए भी
अन्दर न आने पाएँ, ऐसा न हो कि वह मर जाएँ।”

[illegible]

21 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
22 'बनी जैरसोन में से भी उनके आबाई ख़ान्दानों और घरानों
के मुताबिक़,
23 तीस बरस से लेकर पचास बरस तक की उम्र के जितने ख़ेमा
— ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की ख़िदमत के
वक़्त हाज़िर रहते हैं उन सभों को गिन।
24 जैरसोनियों के ख़ान्दानों का काम ख़िदमत करने और बोझ
उठाने का है।
25 वह घर के पर्दों को, और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ और
उसके ग़िलाफ़ को, और उसके ऊपर के ग़िलाफ़ को जो तुख़स की
खालों का है, और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े के पर्दे
को,
26 और घर और मज़बह के चारों तरफ़ के सहन के पर्दों को, और
सहन के दरवाज़े के पर्दे को और उनकी रस्सियों को, और ख़िदमत
के सब बर्तनों को उठाया करें; और इन चीज़ों से जो — जो काम
लिया जाता है वह भी यही लोग किया करें।

27 जैरसोनियों की औलाद का ख़िदमत करने और बोझ उठाने का सारा काम हारून और उसके बेटों के हुक्म के मुताबिक़ हो, और तुम उनमें से हर एक का बोझ मुक़र्रर करके उनके सुपुर्द करना।

28 ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में बनी जैरसोन के ख़ान्दानों का यही काम रहे और वह हारून काहिन के बेटे ऐतामर के मातहत होकर ख़िदमत करें।

[illegible]

29 “और बनी मिरारी में से उनके आबाई ख़ान्दानों और घरानों के मुताबिक़,

30 तीस बरस से लेकर पचास बरस तक की उम्र के जितने ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की ख़िदमत के वक़्त हाज़िर रहते हैं उन सभों को गिन।

31 और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में जिन चीज़ों के उठाने की ख़िदमत उनके ज़िम्मे हो वह यह हैं: घर के तख़्ते और उसके बेंडे, और सुतून और सुतूनों के ख़ाने,

32 और चारों तरफ़ के सहन के सुतून और उनके सब आलात और सारे सामान; और जो चीज़ें उनके उठाने के लिए तुम मुक़र्रर करो उनमें से एक — एक का नाम लेकर उसे उनके सुपुर्द करो।

33 बनी मिरारी के ख़ान्दानों को जो कुछ ख़िदमत ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में हारून काहिन के बेटे ऐतामर के मातहत करना है वह यही है।”

[illegible]

34 चुनाँचे मूसा और हारून और जमा'अत के सरदारों ने क़िहातियों की औलाद में से उनके घरानों और आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़,

35 तीस बरस की उम्र से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की ख़िदमत में शामिल थे, उन सभों को गिन लिया;

36 और उनमें से जितने अपने घरानों के मुवाफ़िक़ गिने गए वह
दो हज़ार सात सौ पचास थे।
37 क़िहातियों के ख़ान्दानों में से जितने ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ में ख़िदमत करते थे उन सभों का शुमार इतना ही
है; जो हुक्म ख़ुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' दिया था उसके मुताबिक़
मूसा और हारून ने उनको गिना।
38 और बनी जैरसोन में से अपने घरानों और आबाई ख़ान्दानों
के मुताबिक़,
39 तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने ख़ेमा
— ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की ख़िदमत में
शामिल थे, वह सब गिने गए;
40 और जितने अपने घरानों और आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़
गिने गए वह दो हज़ार छः सौ तीस थे।
41 इसलिए बनी जैरसोन के ख़ान्दानों में से जितने ख़ेमा — ए
— इजितमा'अ में ख़िदमत करते थे और जिनको मूसा और हारून
ने ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ शुमार किया वह इतने ही थे।
42 और बनी मिरारी के घरानों में से अपने घरानों और आबाई
ख़ान्दानों के मुताबिक़,
43 तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने ख़ेमा
— ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की ख़िदमत में
शामिल थे,
44 वह सब गिने गए; और जितने उनमें से अपने घरानों के
मुवाफ़िक़ गिने गए वह तीन हज़ार दो सौ थे।
45 इसलिए ख़ुदावन्द के उस हुक्म के मुताबिक़ जो उसने मूसा
के ज़रिए' दिया था, जितनों को मूसा और हारून ने बनी मिरारी
के ख़ान्दानों में से गिना वह यही हैं।
46 अलग़रज़ लावियों में से जिनको मूसा और हारून और
इस्राईल के सरदारों ने उनके घरानों और आबाई ख़ान्दानों के
मुताबिक़ गिना,

47 या'नी तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने
ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में ख़िदमत करने और बोझ उठाने के
काम के लिए हाज़िर होते थे,
48 उन सभों का शुमार आठ हज़ार पाँच सौ अस्सी था।
49 वह ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ मूसा के ज़रिए' अपनी
अपनी ख़िदमत और बोझ उठाने के काम के मुताबिक़ गिने गए।
यूँ वह मूसा के ज़रिए' जैसा ख़ुदावन्द ने उसको हुक्म दिया था
गिने गए।

5

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
2 "बनी — इस्राईल को हुक्म दे कि वह हर कोढ़ी को, और
जिरयान के मरीज़ को, और जो मुर्दे की वजह से नापाक हो, उसको
लश्करगाह से बाहर कर दें;
3 ऐसों को चाहे वह मर्द हों या 'औरत, तुम निकाल कर उनको
लश्करगाह के बाहर रक्खो ताकि वह उनकी लश्करगाह को
जिसके बीच मैं रहता हूँ, नापाक न करें।"
4 चुनाँचे बनी — इस्राईल ने ऐसा ही किया और उनको निकाल
कर लश्करगाह के बाहर रक्खा; जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म
दिया था वैसा ही बनी — इस्राईल ने किया।
5 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
6 "बनी — इस्राईल से कह कि अगर कोई मर्द या 'औरत
ख़ुदावन्द की हुक्म उदूली करके कोई ऐसा गुनाह करे जो आदमी
करते हैं और क़ुसूरवार हो जाए,
7 तो जो गुनाह उसने किया है वह उसका इक़रार करे, और
अपनी तक़सीर के मु'आवज़े में पूरा दाम और उसमें पाँचवाँ हिस्सा
और मिलकर उस शख़्स को दे जिसका उसने क़ुसूर किया है।

8 लेकिन अगर उस शख़्स का कोई रिश्तेदार न हो जिसे उस
तक़सीर का मु'आवज़ा दिया जाए, तो तक़सीर का जो मु'आवज़ा
ख़ुदावन्द को दिया जाए वह काहिन का हो 'अलावा कफ़्फ़ारे के
उस मेंढे के जिससे उसका कफ़्फ़ारा दिया जाए।
9 और जितनी पाक चीज़ें बनी इस्राईल उठाने की क़ुर्बानी के
तौर पर काहिन के पास लाएँ वह उसी की हों।
10 और हर शख़्स की पाक की हुई चीज़ें उसकी हों और जो चीज़
कोई शख़्स काहिन को दे वह भी उसी की हो।"

[illegible]

11 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि "बनी इस्राईल से कह कि
12 अगर किसी की बीवी गुमराह हो कर उससे बेवफ़ाई करे,
13 और कोई दूसरा आदमी उस 'औरत के साथ मुबाश्रत करे
और उसके शौहर को मा'लूम न हो बल्कि यह उससे पोशीदा रहे,
और वह नापाक हो गई हो लेकिन न तो कोई शाहिद ही और न
वह 'ऐन फ़ेल के वक़्त पकड़ी गई हो।
14 और उसके शौहर के दिल में ग़ैरत आए: और वह अपनी
बीवी से ग़ैरत खाने लगे हालाँकि वह नापाक हुई हो, या उसके
शौहर के दिल में ग़ैरत आए और वह अपनी बीवी से ग़ैरत खाने
लगे हालाँके वह नापाक नहीं हुई।
15 तो वह शख़्स अपनी बीवी को काहिन के पास हाज़िर करे,
और उस 'औरत के चढ़ावे के लिए ऐफ़ा के दस्वें हिस्से के बराबर
जौ का आटा लाए लेकिन उस पर न तेल डाले न लुबान रख्खे;
क्यूँकि यह नज़्र की क़ुर्बानी ग़ैरत की है, या'नी यह यादगारी की
नज़्र की क़ुर्बानी है जिससे गुनाह याद दिलाया जाता है।
16 "तब काहिन उस 'औरत की नज़दीक लाकर ख़ुदावन्द के
सामने खड़ी करे,

17 और काहिन मिट्टी के एक बासन में पाक पानी ले और घर के
फ़र्श की गर्द लेकर उस पानी में डाले।
18 फिर काहिन उस 'औरत को ख़ुदावन्द के सामने खड़ी करके
उसके सिर के बाल खुलवा दे, और यादगारी की नज़्र की क़ुर्बानी
को जो ग़ैरत की नज़्र की क़ुर्बानी है उसके हाथों पर धरे, और
काहिन अपने हाथ में उस कड़वे पानी को ले जो ला'नत को लाता
है।
19 फिर काहिन उस 'औरत को क़सम खिला कर कहे कि अगर
किसी शख़्स ने तुझसे सुहबत नहीं की है और तू अपने शौहर की
होती हुई नापाकी की तरफ़ माइल नहीं हुई, तो तू इस कड़वे पानी
की तासीर से जो ला'नत लाता है बची रह।
20 लेकिन अगर तू अपने शौहर की होती हुई गुमराह होकर
नापाक हो गई है और तेरे शौहर के 'अलावा किसी दूसरे शख़्स ने
तुझ से सुहबत की है,
21 तो काहिन उस 'औरत को ला'नत की क़सम खिला कर उससे
कहे, कि ख़ुदावन्द तुझे तेरी क़ौम में तेरी रान को सड़ा कर और
तेरे *पेट को फुला कर ला'नत और फटकार का निशाना बनाए;
22 और यह पानी जो ला'नत लाता है तेरी अंतड़ियों में जा कर
तेरे पेट को फुलाए और तेरी रान को सड़ाए। और 'औरत आमीन,
आमीन कहे।
23 “फिर काहिन उन ला'नतों को किसी किताब में लिख कर
उनको उसी कड़वे पानी में धो डाले।
24 और वह कड़वा पानी जो ला'नत को लाता है उस 'औरत को
पिलाए, और वह पानी जो ला'नत को लाता है उस 'औरत के पेट
में जा कर कड़वा हो जाएगा।
25 और काहिन उस 'औरत के हाथ से ग़ैरत की नज़्र की क़ुर्बानी
को लेकर ख़ुदावन्द के सामने उसको हिलाए, और उसे मज़बह के
पास लाए,

---

* **5:21** बाँझ

26 फिर काहिन उस नज़्र की क़ुर्बानी में से उसकी यादगारी के
तौर पर एक मुट्ठी लेकर उसे मज़बह पर जलाए, बाद उसके वह
पानी उस 'औरत को पिलाए।
27 और जब वह उसे वह पानी पिला चुकेगा, तो ऐसा होगा
कि अगर वह नापाक हुई और उसने अपने शौहर से बेवफ़ाई
की, तो वह पानी जो ला'नत को लाता है उसके पेट में जा कर
कड़वा हो जाएगा और उसका पेट फूल जाएगा और उसकी रान
सड़ जाएगी; और वह 'औरत अपनी क़ौम में ला'नत का निशाना
बनेगी।
28 पर अगर वह नापाक नहीं हुई बल्कि पाक है, तो बे —
इल्ज़ाम ठहरेगी और उससे औलाद होगी।
29 "ग़ैरत के बारे में यही शरा' है, चाहे 'औरत अपने शौहर की
होती हुई गुमराह होकर नापाक हो जाए या मर्द पर ग़ैरत सवार
हो,
30 और †वह अपनी बीवी से ग़ैरत खाने लगे; ऐसे हाल में वह
उस 'औरत को ख़ुदावन्द के आगे खड़ी करे और काहिन उस पर
यह सारी शरी'अत 'अमल में लाए।
31 तब मर्द गुनाह से बरी ठहरेगा और उस 'औरत का गुनाह
उसी के सिर लगेगा।"

6

?????? ??????

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
2 'बनी — इस्राईल से कह कि जब कोई मर्द या 'औरत *नज़ीर
की मिन्नत, या'नी अपने आप को ख़ुदावन्द के लिए अलग रखने
की ख़ास मिन्नत माने,

† **5:30** मज़हबी पेशवा (पादरी)
* **6:2** नज़ीर का मतलब है, वह जो अलग किया हुआ —

3 तो वह मय और शराब से परहेज़ करे, और मय का या शराब
का सिरका न पिए और न अंगूर का रस पिए और न ताज़ा या
ख़ुश्क अंगूर खाए।
4 और अपनी नज़ारत के तमाम दिनों में बीज से लेकर छिल्के
तक जो कुछ अंगूर के दरख़्त में पैदा हो उसे न खाए।
5 'और उसकी नज़ारत की मिन्नत के दिनों में उसके सिर
पर उस्तरा न फेरा जाए; जब तक वह मुद्दत जिसके लिए वह
ख़ुदावन्द का नज़ीर बना है पूरी न हो, तब तक वह पाक रहे और
अपने सिर के बालों की लटों को बढ़ने दे।
6 उन तमाम दिनों में जब वह ख़ुदावन्द का नज़ीर हो वह किसी
लाश के नज़दीक न जाए।
7 वह अपने बाप या माँ या भाई या बहन की ख़ातिर भी जब
वह मरें, अपने आप को नजिस न करे। क्यूँकि उसकी नज़ारत जो
ख़ुदा के लिए है, उसके सिर पर है।
8 वह अपनी नज़ारत की पूरी मुद्दत तक ख़ुदावन्द के लिए पाक
है।
9 "और अगर कोई आदमी नागहान उसके पास ही मर जाए
और उसकी नज़ारत के सिर को नापाक कर दे, तो वह अपने
पाक होने के दिन अपना सिर मुण्डवाए, या'नी सातवें दिन सिर
मुण्डवाए।
10 और आठवें दिन दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे ख़ेमा —
ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाए।
11 और काहिन एक को ख़ता की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे को
सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए पेश करे और उसके लिए कफ़्फ़ारा दे,
क्यूँकि वह मुर्दे की वजह से गुनहगार ठहरा है; और उसके सिर को
उसी दिन पाक करे।
12 फिर वह अपनी नज़ारत की मुद्दत को ख़ुदावन्द के लिए पाक
करे, और एक यकसाला नर बर्रा जुर्म की क़ुर्बानी के लिए लाए;
लेकिन जो दिन गुज़र गए हैं वह गिने नहीं जाएँगे क्यूँकि उसकी

नज़ारत नापाक हो गई थी।

13 'और नज़ीर के लिए शरा' यह है, कि जब उसकी नज़ारत के
दिन पूरे हो जाएँ तो वह ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े
पर हाज़िर किया जाए।

14 और वह ख़ुदावन्द के सामने अपना चढ़ावा चढ़ाए, या'नी
सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बे — 'ऐब यक — साला नर बर्रा,
और ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बे — 'ऐब यक — साला मादा
बर्रा, और सलामती की क़ुर्बानी के लिए एक बे — 'ऐब मेंढा,

15 और बेख़मीरी रोटियों की एक टोकरी, और तेल मिले हुए
मैदे के कुल्चे, और तेल चुपड़ी हुई बे — ख़मीरी रोटियाँ, और
उनकी नज़्र की क़ुर्बानी, और उनके तपावन लाए।

16 और काहिन उनको ख़ुदावन्द के सामने ला कर उसकी तरफ़
से ख़ता की क़ुर्बानी और सोख़्तनी क़ुर्बानी पेश करे।

17 और उस मेंढे को बेख़मीरी रोटियों की टोकरी के साथ
ख़ुदावन्द के सामने सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे,
और काहिन उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और उसका तपावन भी अदा
करे।

18 फिर वह नज़ीर ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर
अपनी नज़ारत के बाल मुण्डवाए, और नज़ारत के बालों को उस
आग में डाल दे जो सलामती की क़ुर्बानी के नीचे होगी।

19 और जब नज़ीर अपनी नज़ारत के बाल मुण्डवा चुके, तो
काहिन उस मेंढे का उबाला हुआ शाना और एक बे — ख़मीरी
रोटी टोकरी में से और एक बे — ख़मीरी कुल्चा लेकर उस नज़ीर
के हाथों पर उनको धरे।

20 फिर काहिन उनको हिलाने की क़ुर्बानी के तौर पर ख़ुदावन्द
के सामने हिलाए। हिलाने की क़ुर्बानी के सीने और उठाने की
क़ुर्बानी के शाने के साथ यह भी काहिन के लिए पाक हैं। इसके
बाद नज़ीर मय पी सकेगा।

21 "नज़ीर जो मिन्नत माने और जो चढ़ावा अपनी नज़ारत के लिए ख़ुदावन्द के सामने लाये 'अलावा उसके जिसका उसे मक़दूर हो उन सभों के बारे में शरा' यह है। जैसी मिन्नत उसने मानी हो वैसा ही उसको नज़ारत की शरा' के मुताबिक़ 'अमल करना पड़ेगा।"

[illegible]

22 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;

23 "हारून और उसके बेटों से कह कि तुम बनी — इस्राईल को इस तरह दुआ दिया करना। तुम उनसे कहना:

24 'ख़ुदावन्द तुझे बरकत दे और तुझे महफ़ूज़ रक्खें।

25 "ख़ुदावन्द अपना चेहरा तुझ पर जलवागर फ़रमाए, और तुझ पर मेहरबान रहे।

26 "ख़ुदावन्द अपना चेहरा तेरी तरफ़ मुतवज्जिह करे, और तुझे सलामती बख़्शे।

27 "इस तरह वह मेरे नाम को बनी — इस्राईल पर रक्खें और मैं उनको बरकत बख़्शूँगा।"

7

[illegible]

1 और जिस दिन मूसा घर को खड़ा करने से फ़ारिग़ हुआ और उसको और उसके सब सामान को मसह और पाक किया, और मज़बह और उसके सब मसह को भी मसह और पाक किया;

2 तो इस्राईली रईस जो अपने आबाई ख़ान्दानों के सरदार और क़बीलों के रईस और शुमार किए हुओं के ऊपर मुक़र्रर थे नज़राना लाए।

3 वह अपना हदिया छ: पर्देदार गाड़ियाँ और बारह बैल ख़ुदावन्द के सामने लाये दो — दो रईसों की तरफ़ से एक — एक गाड़ी और हर रईस की तरफ़ से एक बैल था, इनको उन्होंने घर के सामने हाज़िर किया।

4 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
5 “तू इनको उनसे ले ताकि वह ख़ेमा — ए — इजितमा'अ
के काम में आएँ, और तू लावियों में हर शख़्स की ख़िदमत के
मुताबिक़ उनको तक़सीम कर दे।”
6 तब मूसा ने वह गाड़ियाँ और बैल लेकर उनको लावियों को
दे दिया।
7 बनी जैरसोन को उसने उनकी ख़िदमत के लिहाज़ से दो
गाड़ियाँ और चार बैल दिए।
8 और चार गाड़ियाँ और आठ बैल उसने बनी मिरारी को उनकी
ख़िदमत के लिहाज़ से हारून काहिन के बेटे ऐतामर के माताहत
करके दिए।
9 लेकिन बनी क़िहात को उसने कोई गाड़ी नहीं दी, क्यूँकि उनके
ज़िम्में हैकल की ख़िदमत थी; वह उसे अपने कन्धों पर उठाते थे,
10 और जिस दिन मज़बह मसह किया गया उस दिन वह रईस
उसकी तक़दीस के लिए हदिये लाए, और अपने हदियों को वह
रईस मज़बह के आगे ले जाने लगे।
11 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “मज़बह की तक़दीस के लिए
एक — एक रईस एक — एक दिन अपना हदिया पेश करे।”
12 इसलिए पहले दिन यहूदाह के क़बीले में से 'अम्मीनदाब के
बेटे नहसोन ने अपना हदिया पेश करा।
13 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
14 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
15 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा,
16 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
17 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच

बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह 'अमीनदाब के बेटे नहसोन
का हदिया था।
18 दूसरे दिन ज़ुग़र के बेटे नतनीएल ने जो इश्कार के क़बीले
का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
19 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
20 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
21 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
22 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
23 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच
बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह ज़ुग़र के बेटे नतनीएल का
हदिया था।
24 और तीसरे दिन हेलोन के बेटे इलियाब ने जो ज़बूलून के
क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
25 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
26 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
27 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
28 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
29 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच
बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह हेलोन के बेटे इलियाब का
हदिया था।

30 चौथे दिन शदियूर के बेटे इलीसूर ने जो रूबिन के क़बीले
का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
31 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
32 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
33 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछ्ड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
34 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
35 और सलामती की क़ुर्बानी लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच
बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह शदियूर के बेटे इलीसूर
का हदिया था।
36 और पाँचवे दिन सूरीशद्दी के बेटे सलूमीएल ने जो शमौन
के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
37 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़ और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
38 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
39 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछ्ड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
40 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
41 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल पाँच मेंढे पाँच
बकरे पाँच नर यक — साला बर्रे। यह सूरीशद्दी के बेटे सलूमीएल
का हदिया था।
42 और छ्टे दिन द'ऊएल के बेटे इलियासफ़ ने जो जद्द के
क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।

43 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
44 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
45 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
46 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
47 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच
बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह द'ऊएल के बेटे इलियासफ़
का हदिया था।
48 और सातवें दिन 'अम्मीहूद के बेटे इलीसमा' ने जो इफ़्राईम
के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
49 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
50 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
51 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा एक मेंढा, एक नर यक
— साला बर्रा;
52 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
53 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच
बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह 'अम्मीहूद के बेटे इलीसमा'
का हदिया था।
54 और आठवें दिन फ़दाहसूर के बेटे जमलीएल ने जो मनस्सी
के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
55 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल

चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
56 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
57 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा,
58 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
59 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे,
पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह फ़दाहसूर के बेटे
जमलीएल का हदिया था।
60 और नवें दिन जिद'औनी के बेटे अबिदान ने जो बिनयमीन
के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
61 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
62 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच जो ख़ुशबू से भरा था;
63 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
64 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
65 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच
बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह जिद'औनी के बेटे अबिदान
का हदिया था।
66 और दसवें दिन 'अम्मीशद्दी के बेटे अख़ी'अज़र ने जो दान
के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
67 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
68 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;

69 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
70 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
71 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे,
पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह 'अम्मीशद्दी के बेटे
अख़ी'अज़र का हदिया था।
72 और ग्यारहवें दिन 'अकरान के बेटे फ़ज'ईएल ने जो आशर
के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
73 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
74 दस मिस्क़ाल चाँदी का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
75 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
76 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;
77 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच
बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रे। यह 'अकरान के बेटे फ़ज'ईएल
का हदिया था।
78 और बारहवें दिन 'एनान के बेटे अख़ीरा' ने जो बनी नफ़्ताली
के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।
79 और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से
एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल
चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की क़ुर्बानी के लिए तेल
मिला हुआ मैदा भरा था;
80 दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो ख़ुशबू से भरा था;
81 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर
यक — साला बर्रा;
82 ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा;

83 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच
बकरे, पाँच नर यकसाला बर्रे। यह 'एनान के बेटे अख़ीरा' का
हदिया था।
84 मज़बह के मम्सूह होने के दिन जो हदिये उसकी तक़दीस
के लिए इस्राईली रईसों की तरफ़ से पेश करे गए वह यही थे:
या'नी चाँदी के बारह तबाक़, चाँदी के बारह कटोरे, सोने के बारह
चम्मच।
85 चाँदी का हर तबाक़ वज़न में एक सौ तीस मिस्क़ाल और
हर एक कटोरा सत्तर मिस्क़ाल का था। इन बर्तनों की सारी चाँदी
हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से दो हज़ार चार सौ मिस्क़ाल थी।
86 ख़ुशबू से भरे हुए सोने के बारह चम्मच जो हैकल की
मिस्क़ाल की तौल के मुताबिक़ वज़न में दस — दस मिस्क़ाल
के थे, इन चम्मचों का सारा सोना एक सौ बीस मिस्क़ाल था।
सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेंढे, बारह नर
यक — साला बर्रे अपनी — अपनी नज़्र की क़ुर्बानी के साथ थे;
और ख़ता की क़ुर्बानी के लिए बारह बकरे थे;
87 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेंढे, बारह
नर यक — साला बर्रे अपनी — अपनी नज़्र की क़ुर्बानी के साथ
थे; और ख़ता की क़ुर्बानी के लिए बारह बकरे थे;
88 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए कुल चौबीस बैल, साठ
मेंढे, साठ बकरे, साठ नर यक — साला बर्रे थे। मज़बह की
तक़दीस के लिए जब वह मम्सूह हुआ इतना हदिया पेश करा
गया।
89 और जब मूसा ख़ुदा से बातें करने को ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ में गया, तो उसने सरपोश पर से जो शहादत के
सन्दूक़ के ऊपर था, दोनों करूबियों के बीच से वह आवाज़ सुनी
जो उससे मुख़ातिब थी; और उसने उससे बातें की।

8

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
2 "हारून से कह, जब तू चराग़ों को रोशन करे तो सातों चराग़ों
की रोशनी शमा'दान के सामने हो।"
3 चुनाँचे हारून ने ऐसा ही किया, उसने चराग़ों को इस तरह
जलाया कि शमा'दान के सामने रोशनी पड़े, जैसा ख़ुदावन्द ने
मूसा को हुक्म दिया था।
4 और शमा'दान की बनावट ऐसी थी कि वह पाये से लेकर
फूलों तक गढ़े हुए सोने का बना हुआ था। जो नमूना ख़ुदावन्द ने
मूसा को दिखाया उसी के मुवाफ़िक उसने शमा'दान को बनाया।

[illegible]

5 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि
6 "लावियों को बनी — इस्राईल से अलग करके उनको पाक
कर।
7 और उनको पाक करने के लिए उनके साथ यह करना, कि ख़ता
का पानी लेकर उन पर छिड़कना; फिर वह अपने सारे जिस्म पर
उस्तरा फिरवाएँ, और अपने कपड़े धोएँ, और अपने को साफ़ करें।
8 तब वह एक बछड़ा और उसके साथ की नज़्र की क़ुर्बानी के
लिए तेल मिला हुआ मैदा लें, और तू ख़ता की क़ुर्बानी के लिए
एक दूसरा बछड़ा भी लेना।
9 और तू लावियों को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के आगे
हाज़िर करना और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत को जमा'
करना।
10 फिर लावियों को ख़ुदावन्द के आगे लाना, तब बनी —
इस्राईल अपने — अपने हाथ लावियों पर रक्खें।
11 और हारून लावियों की बनी — इस्राईल की तरफ़ से
हिलाने की क़ुर्बानी के लिए ख़ुदावन्द के सामने पेश करे, ताकि
वह ख़ुदावन्द की ख़िदमत करने पर रहें।

12 फिर लावी अपने — अपने हाथ बछड़ों के सिरों पर रख्खें,
और तू एक को ख़ता की क़ुर्बानी और दूसरे को सोख़्तनी क़ुर्बानी
के लिए ख़ुदावन्द के सामने पेश करना, ताकि लावियों के वास्ते
कफ़्फ़ारा दिया जाए।
13 फिर तू लावियों को हारून और उसके बेटों के आगे खड़ा
करना और उनको हिलाने की क़ुर्बानी के लिए ख़ुदावन्द के सामने
पेश करना।
14 "यूँ तू लावियों को बनी — इस्राईल से अलग करना और
लावी मेरे ही ठहरेंगे।
15 इसके बाद लावी ख़ेमा — ए — इजितमा'अ की ख़िदमत के
लिए अन्दर आया करें, इसलिए तू उनको पाक कर और हिलाने
की क़ुर्बानी के लिए उनको पेश करना।
16 इसलिए कि वह सब बनी — इस्राईल में से मुझे बिल्कुल
दे दिए गए हैं, क्यूँकि मैंने इन ही को उन सभों के बदले जो
इस्राईलियों में पहलौठी के बच्चे हैं, अपने लिए ले लिया है।
17 इसलिए कि बनी — इस्राईल के सब पहलौठे, क्या इंसान
क्या हैवान मेरे हैं, मैंने जिस दिन मुल्क — ए — मिस्र के पहलौठों
को मारा उसी दिन उनको अपने लिए पाक किया।
18 और बनी — इस्राईल के सब पहलौठों के बदले मैंने लावियों
को ले लिया है।
19 और मैंने बनी — इस्राईल में से लावियों को लेकर उनको
हारून और उसके बेटों को 'अता किया है, ताकि वह ख़ेमा — ए
— इजितमा'अ में बनी — इस्राईल की जगह ख़िदमत करें और
बनी — इस्राईल के लिए कफ़्फ़ारा दिया करें; ताकि जब बनी —
इस्राईल हैकल के नज़दीक आएँ तो उनमें कोई वबा न फैले।"
20 चुनाँचे मूसा और हारून और बनी — इस्राईल की सारी
जमा'अत ने लावियों से ऐसा ही किया; जो कुछ ख़ुदावन्द ने
लावियों के बारे में मूसा को हुक्म दिया था, वैसा ही बनी —

इस्राईल ने उनके साथ किया।
21 और लावियों ने अपने आप को गुनाह से पाक करके अपने
कपड़े धोए, और हारून ने उनको हिलाने की क़ुर्बानी के लिए
ख़ुदावन्द के सामने पेश करा, और हारून ने उनकी तरफ़ से
कफ़्फ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ।
22 इसके बाद लावी अपनी ख़िदमत बजा लाने को हारून और
उसके बेटों के सामने ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में जाने लगे।
इसलिए जैसा ख़ुदावन्द ने लावियों के बारे में मूसा को हुक्म दिया
था उन्होंने वैसा ही उनके साथ किया।
23 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
24 "लावियों के मुत'अल्लिक़ जो बात है वह यह है, कि पच्चीस
बरस से लेकर उससे ऊपर — ऊपर की उम्र में वह ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ की ख़िदमत के काम के लिए अन्दर हाज़िर हुआ करें।
25 और जब पचास बरस के हों तो फिर उस काम के लिए न
आएँ और न ख़िदमत करें,
26 बल्कि ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में अपने भाइयों के साथ
निगहबानी के काम में मशग़ूल हों, और कोई ख़िदमत न करें।
लावियों को जो — जो काम सौंपे जाएँ उनके मुत'अल्लिक़ तू
उनसे ऐसा ही करना।"

9

□□□□□□ □□-□-□□□□□

1 बनी — इस्राईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकलने के दूसरे
बरस के पहले महीने में ख़ुदावन्द ने दश्त — ए — सीना में मूसा
से कहा कि;
2 "बनी इस्राईल 'ईद — ए — फ़सह उसके मु'अय्यन वक़्त पर
मनाएँ।

3 इसी महीने की चौदहवीं तारीख़ की शाम को तुम वक़्त — ए
— मु'अय्यन पर यह 'ईद मनाना, और जितने उसके तौर तरीक़े
और रसूम हैं, उन सभों के मुताबिक़ उसे मनाना।"
4 इसलिए मूसा ने बनी — इस्राईल को हुक्म किया कि 'ईद —
ए — फ़सह करें।
5 और उन्होंने पहले महीने की चौदहवीं तारीख़ की शाम को
दश्त — ए — सीना में 'ईद — ए — फ़सह की और बनी —
इस्राईल ने सब पर, जो ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था
'अमल किया।
6 और कई आदमी ऐसे थे जो किसी लाश की वजह से नापाक
हो गए थे, वह उस दिन फ़सह न कर सके। इसलिए वह उसी दिन
मूसा और हारून के पास आए,
7 और मूसा से कहने लगे, "हम एक लाश की वजह से नापाक
हो रहे हैं; फिर भी हम और इस्राईलियों के साथ वक़्त — ए —
मु'अय्यन पर ख़ुदावन्द की क़ुर्बानी पेश करने से क्यूँ रोके जाएँ?"
8 मूसा ने उनसे कहा, "ठहर जाओ, मैं ज़रा सुन लूँ कि ख़ुदावन्द
तुम्हारे हक़ में क्या हुक्म करता है।"
9 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
10 "बनी — इस्राईल से कह कि अगर कोई तुम में से या तुम्हारी
नसल में से, किसी लाश की वजह से नापाक हो जाए या वह कहीं
दूर सफ़र में हो तोभी वह ख़ुदावन्द के लिए 'ईद — ए — फ़सह
करे।
11 वह दूसरे महीने की चौदहवीं तारीख़ की शाम को यह 'ईद
मनाएँ और क़ुर्बानी के गोश्त को बे — ख़मीरी रोटियों और कड़वी
तरकारियों के साथ खाएँ।
12 वह उसमें से कुछ भी सुबह के लिए बाक़ी न छोड़ें, और न
उसकी कोई हड्डी तोड़ें, और फ़सह को उसके सारे तौर तरीक़े के
मुताबिक़ मानें।

13 लेकिन जो आदमी पाक हो और सफ़र में भी न हो, अगर वह
फ़सह करने से बाज़ रहे तो वह आदमी अपनी क़ौम में से अलग
कर डाला जाएगा; क्यूँकि उसने मु'अय्यन वक़्त पर ख़ुदावन्द की
क़ुर्बानी नहीं पेश कीं इसलिए उस आदमी का गुनाह उसी के सिर
लगेगा।
14 और अगर कोई परदेसी तुम में क़याम करता हो और वह
ख़ुदावन्द के लिए फ़सह करना चाहे, तो वह फ़सह के तौर तरीक़े
और रसूम के मुताबिक़ उसे माने; तुम देसी और परदेसी दोनों के
लिए एक ही क़ानून रखना।"

[illegible]

15 और जिस दिन घर या'नी ख़ेमा — ए — शहादत नस्ब हुआ
उसी दिन बादल उस पर छा गया, और शाम को वह घर पर आग
सा दिखाई दिया और सुबह तक वैसा ही रहा।
16 और हमेशा ऐसा ही हुआ करता था, कि बादल उस पर छाया
रहता और रात को आग दिखाई देती थी।
17 और जब घर पर से वह बादल उठ जाता तो बनी — इस्राईल
रवाना होते थे, और जिस जगह वह बादल जा कर ठहर जाता वहीं
बनी — इस्राईल ख़ेमा लगाते थे।
18 ख़ुदावन्द के हुक्म से बनी — इस्राईल रवाना होते, और
ख़ुदावन्द ही के हुक्म से वह ख़ेमे लगाते थे; और जब तक बादल
घर पर ठहरा रहता वह अपने ख़ेमे डाले पड़े रहते थे।
19 और जब बादल घर पर बहुत दिनों ठहरा रहता, तो बनी —
इस्राईल ख़ुदावन्द के हुक्म को मानते और रवाना नहीं होते थे।
20 और कभी — कभी वह बादल चंद दिनों तक घर पर रहता,
और तब भी वह ख़ुदावन्द के हुक्म से ख़ेमे लगाये रहते और
ख़ुदावन्द ही के हुक्म से वह रवाना होते थे।
21 फिर कभी — कभी वह बादल शाम से सुबह तक ही रहता,
तो जब वह सुबह को उठ जाता तब वह रवाना ते थे; और अगर

वह रात दिन बराबर रहता, तो जब वह उठ जाता तब ही वह
रवाना होते थे।
22 और जब तक वह बादल घर पर ठहरा रहता, चाहे दो दिन
या एक महीने या एक बरस हो, तब तक बनी — इस्राईल अपने
ख़ेमों में मक़ीम रहते और रवाना नहीं होते थे; पर जब वह उठ
जाता तो वह रवाना होते थे।
23 ग़रज़ वह ख़ुदावन्द के हुक्म से मक़ाम करते और ख़ुदावन्द
ही के हुक्म से रवाना होते थे; और जो हुक्म ख़ुदावन्द मूसा के
ज़रिए' देता, वह ख़ुदावन्द के उस हुक्म *को माना करते थे।

10

????? ?? ?????

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,
2 "अपने लिए चाँदी के दो नरसिंगे बनवा; वह दोनों गढ़कर
बनाए जाएँ, तू उनको जमा'अत के बुलाने और लश्करों की
रवानगी के लिए काम में लाना।
3 और जब वह दोनों नरसिंगे फूँकें, तो सारी जमा'अत ख़ेमा-
ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर तेरे पास इकट्ठी हो जाए।
4 और अगर एक ही फूँके, तो वह रईस जो हज़ारों इस्राईलियों
के सरदार हैं तेरे पास जमा' हो।
5 और जब तुम साँस बाँध कर ज़ोर से फूँको, तो वह लश्कर जो
पश्चिम की तरफ़ हैं रवानगी करें।
6 जब तुम दोबारा साँस बाँध कर ज़ोर से फूँको, तो उन लश्करों
को जो दख्खिन की तरफ़ हैं रवाना हो। इसलिए रवानगी के लिए
साँस बाँध कर ज़ोर से नरसिंगा फूँका करें।
7 लेकिन जब जमा'अत को जमा' करना हो तब भी फूँकना,
लेकिन साँस बाँध कर ज़ोर से न फूँकना।

---

* **9:23** ख़ुदावंद के हुक्म के मुताबिक़

8 और हारून के बेटे जो काहिन हैं वह नरसिंगे फूँका करें। यही तौर तरीक़े हमेशा तुम्हारी नसल — दर — नसल क़ाईम रहे।

9 और जब तुम अपने मुल्क में ऐसे दुश्मन से जो तुम को सताता हो लड़ने को निकलो, तो तुम नरसिंगों को साँस बाँध कर ज़ोर से फूँकना। इस हाल में ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा के सामने तुम्हारी याद होगी और तुम अपने दुश्मनों से नजात पाओगे।

10 और तुम अपनी ख़ुशी के दिन और अपनी मुक़र्ररा 'ईदों के दिन और अपने महीनों के शुरू' में अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानियों और सलामती की क़ुर्बानियों के वक़्त नरसिंगे फूँकना ताकि उनसे तुम्हारे ख़ुदा के सामने तुम्हारी यादगारी हो; मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□

11 *और दूसरे साल के दूसरे महीने की बीसवीं तारीख़ को वह बादल शहादत के घर पर से उठ गया।

12 तब बनी — इस्राईल सीना के जंगल से रवाना होकर निकले और वह बादल फ़ारान के जंगल में ठहर गया।

13 इसलिए ख़ुदावन्द के उस हुक्म के मुताबिक़ जो उसने मूसा के ज़रिए' दिया था, उनकी पहली रवानगी हुई।

14 और सब से पहले बनी यहूदाह के लश्कर का झंडा रवाना हुआ और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, उनके लश्कर का सरदार 'अम्मीनदाब का बेटा नहसोन था।

15 और इश्कार के क़बीले के लश्कर का सरदार ज़ुग़र का बेटा नतनीएल था।

16 और ज़बूलून के क़बीले के लश्कर का सरदार हेलोन का बेटा इलियाब था।

17 फिर घर उतारा गया और बनी जैरसोन और बनी मिरारी, जो घर को उठाते थे रवाना हुए।

* **10:11** बनी इस्राईल के मिस्र से निकलने के बाद

18 फिर रूबिन के लश्कर का झंडा आगे बढ़ा और वह अपने
दलों के मुताबिक़ चले, शदियूर का बेटा इलीसूर उनके लश्कर का
सरदार था।
19 और शमौन के क़बीले के लश्कर का सरदार सूरीशद्दी का
बेटा सलूमीएल था।
20 और जद्द के क़बीले के लश्कर का सरदार द'ऊएल का बेटा
इलियासफ़ था।
21 फिर क़िहातियों ने जो हैकल को उठाते थे रवानगी की, और
उनके पहुँचने तक घर खड़ा कर दिया जाता था।
22 फिर बनी इफ़्राईम के लश्कर का झंडा निकला और वह अपने
दलों के मुताबिक़ चले, उनके लश्कर का सरदार 'अम्मीहूद का
बेटा इलीसमा' था।
23 और मनस्सी के क़बीले के लश्कर का सरदार फ़दाहसूर का
बेटा जमलीएल था।
24 और बिनयमीन के क़बीले के लश्कर का सरदार जिद'औनी
का बेटा अबिदान था।
25 और बनी दान के लश्कर का झंडा उनके सब लश्करों के पीछे
— पीछे रवाना हुआ और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, उनके
लश्कर का सरदार 'अम्मीशद्दी का बेटा अख़ी'अज़र था।
26 और आशर के क़बीले के लश्कर का सरदार 'अकरान का बेटा
फ़ज'ईएल था।
27 और नफ़्ताली के क़बीले के लश्कर का सरदार एनान का
बेटा अख़ीरा' था।
28 तब बनी — इस्राईल इसी तरह अपने दलों के मुताबिक़ कूच
करते और आगे रवाना होते थे।
29 इसलिए मूसा ने अपने ससुर र'ऊएल मिदियानी के बेटे
होबाब से कहा कि “हम उस जगह जा रहे हैं जिसके बारे में
ख़ुदावन्द ने कहा है कि मैं उसे तुम को दूँगा; इसलिए तू भी साथ
चल और हम तेरे साथ नेकी करेंगे, क्यूँकि ख़ुदावन्द ने बनी —

इस्राईल से नेकी का वा'दा किया है।"
30 उसने उसे जवाब दिया, "मैं नहीं चलता, बल्कि मैं अपने
वतन को और अपने रिश्तेदारों में लौट कर जाऊँगा।"
31 तब मूसा ने कहा, "हम को छोड़ मत, क्यूँकि यह तुझ को
मा'लूम है कि हमको वीराने में किस तरह ख़ेमाज़न होना चाहिए,
इसलिए तू हमारे लिए आँखों का काम देगा;
32 और अगर तू हमारे साथ चले, तो इतनी बात ज़रूर होगी
कि जो नेकी ख़ुदावन्द हम से करे वही हम तुझ से करेंगे।"
33 फिर वह ख़ुदावन्द के पहाड़ से सफ़र करके तीन दिन की राह
चले, और तीनों दिन के सफ़र में ख़ुदावन्द के 'अहद का संदूक़
उनके लिए आरामगाह तलाश करता हुआ उनके आगे — आगे
चलता रहा।
34 और जब वह लश्करगाह से रवाना होते तो ख़ुदावन्द का
बादल दिन भर उनके ऊपर छाया रहता था।
35 और संदूक़ की रवानगी के वक़्त मूसा यह कहा करता, "उठ,
ऐ ख़ुदावन्द, तेरे दुश्मन तितर — बितर हो जाएँ, और जो तुझ से
कीना रखते है वह तेरे आगे से भागें।"
36 और जब वह ठहर जाता तो वह यह कहता था, "ऐ ख़ुदावन्द,
हज़ारों — हज़ार इस्राईलियों में लौट कर आ जा।"

11

[illegible]

1 फिर वह लोग़ कुड़कुड़ाने और ख़ुदावन्द के सुनते बुरा कहने
लगे; चुनाँचे ख़ुदावन्द ने सुना और उसका ग़ज़ब भड़का और
ख़ुदावन्द की आग उनके बीच जल उठी, और लश्करगाह को एक
किनारे से भसम करने लगी।
2 तब लोगों ने मूसा से फ़रियाद की; और मूसा ने ख़ुदावन्द से
दुआ की, तो आग बुझ गई।

3 और उस जगह का नाम तबे'*रा पड़ा, क्यूँकि ख़ुदावन्द की
आग उनमें जल उठी थी।
4 और जो मिली — जुली भीड़ इन लोगों में थी वह तरह —
तरह की लालच करने लगी, और बनी — इस्राईल भी फिर रोने
और कहने लगे, हम को कौन गोश्त खाने को देगा?
5 हम को वह मछली याद आती है जो हम मिस्र में मुफ़्त खाते
थे; और हाय! वह खीरे, और वह ख़रबूज़े, और वह गन्दने, और
प्याज़, और लहसन;
6 लेकिन अब तो हमारी जान ख़ुश्क हो गई, यहाँ कोई चीज़
मयस्सर नहीं और मन के अलावा हम को और कुछ दिखाई नहीं
देता।
7 और मन धनिये की तरह था और ऐसा नज़र आता था जैसे
मोती।
8 लोग इधर — उधर जा कर उसे जमा' करते और उसे चक्की
में पीसते या ओखली में कूट लेते थे, फिर उसे हाण्डियों में उबाल
कर रोटियाँ बनाते थे; उसका मज़ा ताज़ा तेल का सा था।
9 और रात को जब लश्करगाह में ओस पड़ती तो उसके साथ
मन भी गिरता था।
10 और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने — अपने
ख़ेमे के दरवाज़े पर रोते सुना, और ख़ुदावन्द का क़हर बहुत भड़का
और मूसा ने भी बुरा माना।
11 तब मूसा ने ख़ुदावन्द से कहा, "तूने अपने ख़ादिम से यह
सख़्त बर्ताव क्यूँ किया? और मुझ पर तेरे करम की नज़र क्यूँ नहीं
हुई, जो तू इन सब लोगों का बोझ मुझ पर डालता है?
12 क्या यह सब लोग मेरे पेट में पड़े थे? क्या यह मुझ ही से
पैदा हुए थे जो तू मुझे कहता है कि जिस तरह से बाप दूध पीते
बच्चे को उठाए — उठाए फिरता है, उसी तरह मैं इन लोगों को
अपनी गोद में उठा कर उस मुल्क में ले जाऊँ जिसके देने की क़सम

* **11:3** मतलब जलता हुआ

तूने उनके बाप दादा से खाई है?
13 मैं इन सब लोगों को कहाँ से गोश्त ला कर दूँ? क्यूँकि वह
यह कह — कह कर मेरे सामने रोते हैं, कि हम को गोश्त खाने को
दे।
14 मैं अकेला इन सब लोगों को नहीं सम्भाल सकता, क्यूँकि
यह मेरी ताक़त से बाहर है।
15 और जो तुझे मेरे साथ यही बर्ताव करना है तो मेरे ऊपर
अगर तेरे करम की नज़र हुई है, तो मुझे एक ही बार में जान से
मार डाल ताकि मैं अपनी बुरी हालत देखने न पाऊँ।"

[illegible]

16 ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों
में से सत्तर मर्द, जिनको तू जानता है कि क़ौम के बुज़ुर्ग और
उनके सरदार हैं मेरे सामने जमा' कर और उनको ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ के पास ले आ; ताकि वह तेरे साथ वहाँ खड़े हों।
17 और में उतर कर तेरे साथ वहाँ बातें करूँगा, और मैं उस रूह
में से जो तुझ में है, कुछ लेकर उनमें डाल दूँगा कि वह तेरे साथ
क़ौम का बोझ उठाएँ, ताकि तू उसे अकेला न उठाए।
18 और लोगों से कह कि कल के लिए अपने को पाक कर रक्खो
तो तुम गोश्त खाओगे, क्यूँकि तुम ख़ुदावन्द के सुनते हुए यह कह
— कह कर रोए हो कि हम को कौन गोश्त खाने को देगा? हम
तो मिस्र ही में मौज से थे। इसलिए ख़ुदावन्द तुम को गोश्त देगा
और तुम खाना।
19 और तुम एक या दो दिन नहीं और न पाँच या दस या बीस
दिन,
20 बल्कि एक महीना कामिल उसे खाते रहोगे, जब तक वह
तुम्हारे नथुनों से निकलने न लगे और तुम उससे घिन न खाने
लगो; क्यूँकि तुम ने ख़ुदावन्द को जो तुम्हारे बीच है छोड़ दिया,

और उसके सामने यह कह — कह कर रोए हो कि हम मिस्र से
क्यूँ निकल आए?"
21 फिर मूसा कहने लगा, "जिन लोगों में मैं हूँ उनमें छः लाख
तो प्यादे ही हैं; और तू ने कहा है कि मैं उनको इतना गोश्त दूँगा
कि वह महीने भर उसे खाते रहेंगे।
22 इसलिए क्या भेड़बकरियों के यह रेवड़ और गाय — बैलों के
झुण्ड उनकी ख़ातिर ज़बह हों कि उनके लिए बस हो? या समन्दर
की सब मछलियाँ उनकी ख़ातिर इकट्ठी की जाएँ कि उन सब के
लिए काफ़ी हो?"
23 ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "क्या ख़ुदावन्द का हाथ छोटा
हो गया है? अब तू देख लेगा कि जो मैंने तुझ से कहा है वह पूरा
होता है या नहीं।"
24 तब मूसा ने बाहर जाकर ख़ुदावन्द की बातें उन लोगों को
कह सुनाई, और क़ौम के बुज़ुर्गों में से सत्तर शख़्स इकट्ठे करके
उनको ख़ेमे के चारों तरफ़ खड़ा कर दिया।
25 तब ख़ुदावन्द बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें
कीं, और उस रूह में से जो उसमें थी कुछ लेकर उसे उन सत्तर
बुज़ुगों में डाला; चुनाँचे जब रूह उनमें आई तो वह नबुव्वत करने
लगे, लेकिन बाद में फिर कभी न की।
26 लेकिन उनमें से दो शख़्स लश्करगाह ही में रह गए, एक का
नाम इलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी रूह आई; यह भी
उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिए गए थे लेकिन यह खेमे के
पास न गए, और लश्करगाह ही में नबुव्वत करने लगे।
27 तब किसी जवान ने दौड़ कर मूसा को ख़बर दी और कहने
लगा, कि इलदाद और मेदाद लश्करगाह में नबुव्वत कर रहे हैं।
28 इसलिए मूसा के ख़ादिम नून के बेटे यशू'आ ने, जो उसके
चुने हुए जवानों में से था मूसा से कहा, "ऐ मेरे मालिक मूसा, तू
उनको रोक दे।"

29 मूसा ने उससे कहा, "क्या तुझे मेरी ख़ातिर रश्क आता है?
काश ख़ुदावन्द के सब लोग नबी होते, और ख़ुदावन्द अपनी रूह
उन सब में डालता।"
30 फिर मूसा और वह इस्राईली बुज़ुर्ग लश्करगाह में गए।

[illegible]

31 और ख़ुदावन्द की तरफ़ से एक आँधी चली और समन्दर
से बटेरें उड़ा लाई, और उनको लश्करगाह के बराबर और उसके
चारों तरफ़ एक दिन की राह तक इस तरफ़ और एक ही दिन की
राह तक दूसरी तरफ़ ज़मीन से क़रीबन दो — दो हाथ ऊपर डाल
दिया।
32 और लोगों ने उठ कर उस सारे दिन और उस सारी रात और
उसके दूसरे दिन भी बटेरें जमा' कीं, और जिसने कम से कम जमा'
की थीं उसके पास भी दस खोमर के बराबर जमा' हो गईं; और
उन्होंने अपने लिए लश्करगाह की चारों तरफ़ उनको फैला दिया।
33 और उनका गोश्त उन्होंने दाँतों से काटा ही था और उसे
चबाने भी नहीं पाए थे कि ख़ुदावन्द का क़हर उन लोगों पर भड़क
उठा, और ख़ुदावन्द ने उन लोगों को बड़ी सख़्त वबा से मारा।
34 इसलिए उस मक़ाम का नाम [†]क़ब्रोत हतावा रखा गया,
क्यूँकि उन्होंने उन लोगों को जिन्होंने लालच किया था वहीं दफ़न
किया।
35 और वह लोग कब्रोत हतावा से सफ़र करके हसेरात को गए
और वहीं हसेरात में रहने लगे।

12

[illegible]

1 और मूसा ने एक कूशी 'औरत से ब्याह कर लिया। तब उस
कूशी 'औरत की वजह से जिसे मूसा ने ब्याह लिया था, मरियम
और हारून उसकी बदगोई करने लगे।

[†] **11:34** मतलब लालचियों की कब्रें

2 वह कहने लगे, “क्या ख़ुदावन्द ने सिर्फ़ मूसा ही से बातें की
हैं? क्या उसने हम से भी बातें नहीं कीं?” और ख़ुदावन्द ने यह
सुना।
3 और मूसा तो इस ज़मीन के सब आदमियों से ज़्यादा हलीम
था।
4 तब ख़ुदावन्द ने अचानक मूसा और हारून और मरियम से
कहा, “तुम तीनों निकल कर ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के पास
हाज़िर हो।” तब वह तीनों वहाँ आए।
5 और ख़ुदावन्द बादल के सुतून में होकर उतरा और ख़ेमे के
दरवाज़े पर खड़े होकर हारून और मरियम को बुलाया। वह दोनों
पास गए।
6 तब उसने कहा, “मेरी बातें सुनो, अगर तुम में कोई नबी हो,
तो मैं जो ख़ुदावन्द हूँ उसे रोया में दिखाई दूँगा और ख़्वाब में उससे
बातें करूँगा।
7 पर मेरा ख़ादिम मूसा ऐसा नहीं है, वह मेरे सारे ख़ान्दान में
अमानत दार है;
8 मैं उससे राज़ों में नहीं बल्कि आमने — सामने और सरीह तौर
पर बातें करता हूँ, और उसे ख़ुदावन्द का दीदार भी नसीब होता
है। इसलिए तुम को मेरे ख़ादिम मूसा की बदगोई करते ख़ौफ़ क्यूँ
न आया?”
9 और ख़ुदावन्द का ग़ज़ब उन पर भड़का और वह चला गया।
10 और बादल ख़ेमे के ऊपर से हट गया, और मरियम कोढ़ से
बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गई; और हारून ने जो मरियम की तरफ़
नज़र की तो देखा कि वह कोढ़ी हो गई है।
11 तब हारून मूसा से कहने लगा, “हाय मेरे मालिक, इस
गुनाह को हमारे सिर न लगा, क्यूँकि हम से नादानी हुई और हम
ने ख़ता की।
12 और मरियम की उस मरे हुए की तरह न रहने दे, जिसका
जिस्म उसकी पैदाइश ही के वक़्त आधा गला हुआ होता है।”

13 तब मूसा ख़ुदावन्द से फ़रियाद करने लगा, “ऐ ख़ुदा, मैं तेरी
मिन्नत करता हूँ, उसे शिफ़ा दे।”
14 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “अगर उसके बाप ने उसके
मुँह पर सिर्फ़ थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह शर्मिन्दा
न रहती? इसलिए वह सात दिन तक लश्करगाह के बाहर बन्द
रहे, इसके बाद वह फिर अन्दर आने पाए।”
15 चुनाँचे मरियम सात दिन तक लश्करगाह के बाहर बन्द रही,
और लोगों ने जब तक वह अन्दर आने न पाई रवाना न हुए।
16 इसके बाद वह लोग हसेरात से रवाना हुए और फ़ारान के
जंगल में पहुँच कर उन्होंने ख़ेमे लगाए।

13

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,
2 “तू आदमियों को भेज कि वह मुल्क — ए — कना'न का, जो
मैं बनी — इस्राईल को देता हूँ हाल दरियाफ़्त करें; उनके बाप —
दादा के हर क़बीले से एक आदमी भेजना जो उनके यहाँ का रईस
हो।”
3 चुनाँचे मूसा ने ख़ुदावन्द के इरशाद के मुवाफ़िक़ फ़ारान के
जंगल से ऐसे आदमी रवाना किए जो बनी — इस्राईल के सरदार
थे।
4 उनके यह नाम थे: रूबिन के क़बीले से ज़कूर का बेटा सम्मूअ,
5 और शमौन के क़बीले से होरी का बेटा साफ़त,
6 और यहूदाह के क़बीले से यफुना का बेटा कालिब,
7 और इश्कार के क़बीले से युसुफ़ का बेटा इजाल,
8 और इफ़्राईम के क़बीले से नून का बेटा होसे'अ,
9 और बिनयमीन के क़बीले से रफ़ू का बेटा फ़ल्ती,
10 और ज़बूलून के क़बीले से सोदी का बेटा जद्दीएल,

11 और यूसुफ़ के क़बीले या'नी मनस्सी के क़बीले से सूसी का
बेटा जद्दी,
12 और दान के क़बीले से जमल्ली का बेटा 'अम्मीएल,
13 और आशर के क़बीले से मीकाएल का बेटा सतूर,
14 और नफ़्ताली के क़बीले से वुफ़्सी का बेटा नख़बी,
15 और जद्द के क़बीले से माकी का बेटा ज्यूएल।
16 यही उन लोगों के नाम हैं जिनको मूसा ने मुल्क का हाल
दरियाफ़्त करने को भेजा था। और नून के बेटे होसे'अ का नाम
मूसा ने यशू'अ रख्खा।
17 और मूसा ने उनको रवाना किया ताकि मुल्क — ए —
कना'न का हाल दरियाफ़्त करें और उनसे कहा, "तुम इधर
दख्खिन की तरफ़ से जाकर पहाड़ों में चले जाना।
18 और देखना कि वह मुल्क कैसा है, और जो लोग वहाँ बसे
हुए हैं वह कैसे हैं, ज़ोरावर हैं या कमज़ोर और थोड़े से हैं या बहुत।
19 और जिस मुल्क में वह आबाद हैं वह कैसा है, अच्छा है या
बुरा; जिन शहरों में वह रहते हैं वह कैसे हैं, आया वह ख़ेमों में
रहते हैं या किलों' में।
20 और वहाँ की ज़मीन कैसी है, ज़रख़ेज़ है या बंजर और उसमें
दरख़्त हैं या नहीं; तुम्हारी हिम्मत बन्धी रहे और तुम उस मुल्क
का कुछ फल लेते आना।" और वह मौसम अंगूर की पहली फ़सल
का था।
21 तब वह रवाना हुए और दश्त — ए — सीन से रहोब तक
जो हमात के रास्ते में है, मुल्क को ख़ूब देखा भाला।
22 और वह दख्खिन की तरफ़ से होते हुए हबरून तक गए,
जहाँ 'अनाक के बेटे अख़ीमान और सीसी और तलमी रहते थे
और हबरून जुअन से जो मिस्र में है, सात बरस आगे बसा था।
23 और वह वादी — ए — इस्काल में पहुँचे, वहाँ से उन्होंने
अंगूर की एक डाली काट ली जिसमें एक ही गुच्छा था, और जिसे

दो आदमी एक लाठी पर लटकाए हुए लेकर गए; और वह कुछ
अनार और अंजीर भी लाए।
24 उसी गुच्छे की वजह से जिसे इस्राईलियों ने वहाँ से काटा
था, उस जगह का नाम वादी — ए — *इस्काल पड़ गया।

[illegible]

25 और चालीस दिन के बाद वह उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त
करके लौटे।
26 और वह चले और मूसा और हारून और बनी — इस्राईल
की सारी जमा'अत के पास दश्त — ए — फ़ारान के क़ादिस में
आए, और उनकी और सारी जमा'अत को सब हाल सुनाया, और
उस मुल्क का फल उनको दिखाया।
27 और मूसा से कहने लगे, "जिस मुल्क में तूने हम को भेजा
था हम वहाँ गए; वाक़'ई †दूधऔर शहद उसमें बहता है, और यह
वहाँ का फल है।
28 लेकिन जो लोग वहाँ बसे हुए हैं वह ज़ोरावर हैं और उनके
शहर बड़े — बड़े और फ़सीलदार हैं, और हम ने बनी 'अनाक को
भी वहाँ देखा।
29 उस मुल्क के दख्खिनी हिस्से में तो अमालीकी आबाद हैं,
और हित्ती और यबूसी और अमोरी पहाड़ों पर रहते हैं, और
समन्दर के साहिल पर और यरदन के किनारे — किनारे कना'नी
बसे हुए हैं।"
30 तब कालिब ने मूसा के सामने लोगों को चुप कराया और
कहा, "चलो, हम एक दम जा कर उस पर क़ब्ज़ा करें, क्यूँकि हम
इस क़ाबिल हैं कि उस पर हासिल कर लें।"
31 लेकिन जो और आदमी उसके साथ गए थे वह कहने लगे,
"हम इस लायक़ नहीं हैं कि उन लोगों पर हमला करें, क्यूँकि वह
हम से ज़्यादा ताक़तवर हैं।"

* **13:24** मतलब गुच्छा, खोशा, झुरमुट † **13:27** अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क

32 इन आदमियों ने बनी — इस्राईल को उस मुल्क की, जिसे
वह देखने गए थे बुरी ख़बर दी, और यह कहा, “वह मुल्क जिसका
हाल दरियाफ़्त करने को हम उसमें से गुज़रे, एक ऐसा मुल्क है
जो अपने बाशिन्दों को खा जाता है; और वहाँ जितने आदमी हम
ने देखें वह सब बड़े क़द्दावर हैं।
33 और हम ने वहाँ बनी 'अनाक को भी देखा जो जब्बार हैं और
जब्बारों की नसल से हैं, और हम तो अपनी ही निगाह में ऐसे थे
जैसे टिड्डे होते हैं और ऐसे ही उनकी निगाह में थे।”

14

[illegible]

1 तब सारी जमा'अत ज़ोर ज़ोर से चीखने लगी और वह लोग
उस रात रोते ही रहे।
2 और कुल बनी — इस्राईल मूसा और हारून की शिकायत
करने लगे, और सारी जमा'त उनसे कहने लगी हाय काश हम
मिस्र ही में मर जाते या काश इस वीरान ही में मरते।
3 ख़ुदावन्द क्यूँ हम को उस मुल्क में ले जा कर तलवार से क़त्ल
कराना चाहता है?
4 “फिर तो हमारी बीवियाँ और बाल बच्चे लूट का माल ठहरेंगे,
क्या हमारे लिए बेहतर न होगा कि हम मिस्र को वापस चले
जाएँ?” फिर वह आपस में कहने लगे, “आओ हम किसी को
अपना सरदार बना लें, और मिस्र को लौट चलें।”
5 तब मूसा और हारून बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत के
सामने औंधे मुँह हो गए।
6 और नून का बेटा यशू'अ और यफुन्ना का बेटा कालिब, जो
उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने वालों में से थे, अपने — अपने
कपड़े फाड़ कर

7 बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत से कहने लगे कि "वह
मुल्क जिसका हाल दरियाफ़्त करने को हम उसमें से गुज़रे, बहुत
अच्छा मुल्क है।
8 अगर ख़ुदा हम से राज़ी रहे तो वह हम को उस मुल्क में
पहुँचाएगा, और वही मुल्क जिस में दूध और शहद बहता है हम
को देगा।
9 सिर्फ़ इतना हो कि तुम ख़ुदावन्द से बग़ावत न करो और
न उस मुल्क के लोगों से डरो; वह तो हमारी ख़ुराक हैं, उनकी
पनाह उनके सिर पर से जाती रही है और हमारे साथ ख़ुदावन्द
है; इसलिए उनका ख़ौफ़ न करो।"
10 तब सारी जमा'अत बोल उठी कि इनको संगसार करो। उस
वक़्त ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में सब बनी — इस्राईल के सामने
ख़ुदावन्द का जलाल नुमायाँ हुआ।
11 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि "यह लोग कब तक मेरी
तौहीन करते रहेंगे? और बावजूद उन सब निशान — आत को जो
मैंने इनके बीच किए हैं, कब तक मुझ पर ईमान नहीं लाएँगे?
12 में इनको वबा से मारूँगा और मीरास से ख़ारिज करूँगा, और
तुझे एक ऐसी क़ौम बनाऊँगा जो इनसे कहीं बड़ी और ज़्यादा
ज़ोरावर हो।"

[illegible]

13 मूसा ने ख़ुदावन्द से कहा, "तब तो मिस्री, जिनके बीच से तू
इन लोगों को अपने ज़ोर — ए — बाज़ू से निकाल ले आया यह
सुनेंगे,
14 और उसे इस मुल्क के बाशिन्दों को बताएँगे। उन्होंने सुना
है कि तू जो ख़ुदावन्द है इन लोगों के बीच रहता है, क्यूँकि तू ऐ
ख़ुदावन्द सरीह तौर पर दिखाई देता है, और तेरा बादल इन पर
साया किए रहता है, और तू दिन को बादल के सुतून में और रात
को आग के सुतून में हो कर इनके आगे — आगे चलता है।

15 तब अगर तू इस क़ौम को एक अकेले आदमी की तरह जान
से मार डाले, तो वह क़ौमें जिन्होंने तेरी शोहरत सुनी कहेंगी;
16 कि चूँकि ख़ुदावन्द इस क़ौम को उस मुल्क में, जिसे उसने
इनको देने की क़सम खाई थी पहुँचा न सका, इसलिए उसने इनको
वीरान में हलाक कर दिया।
17 तब ख़ुदावन्द की क़ुदरत की 'अज़मत तेरे ही इस क़ौल के
मुताबिक़ ज़ाहिर हो,
18 कि ख़ुदावन्द क़हर करने में धीमा और शफ़क़त में ग़नी है,
वह गुनाह और ख़ता को बख़्श देता है लेकिन मुजरिम को हरगिज़
बरी नहीं करेगा, क्यूँकि वह बाप दादा के गुनाह की सज़ा उनकी
औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक देता है।
19 इसलिए तू अपनी रहमत की फ़िरावानी से इस उम्मत का
गुनाह, जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक इन लोगों को मु'आफ़
करता रहा है अब भी मु'आफ़ कर दे।"
20 ख़ुदावन्द ने कहा, "मैंने तेरी दरख़्वास्त के मुताबिक़ मुआफ़
किया;
21 लेकिन मुझे अपनी हयात की क़सम और ख़ुदावन्द के
जलाल की क़सम जिससे सारी ज़मीन मा'मूर होगी,
22 चूँकि इन सब लोगों ने जिन्होंने बावजूद मेरे जलाल के देखने
के, और बावजूद उन निशान — आत को जो मैंने मिस्र में और इस
वीरान में दिखाए, फिर भी दस बार मुझे आज़माया और मेरी बात
नहीं मानी;
23 इसलिए वह उस मुल्क को जिसके देने की क़सम मैंने उनके
बाप दादा से खाई थी देखने भी न पायेंगे और जिन्होंने मेरी तौहीन
की है उन में से भी कोई उसे देखने नहीं पाएगा।
24 लेकिन इसलिए कि मेरे बन्दे कालिब का कुछ और ही
मिज़ाज था और उसने मेरी पूरी पैरवी की है, मैं उसको उस मुल्क
में जहाँ वह हो आया है पहुँचाऊँगा और उसकी औलाद उसकी

वारिस होगी।
25 और वादी में तो 'अमालीकी और कना'नी बसे हुए हैं,
इसलिए कल तुम घूम कर उस रास्ते से जो बहर — ए — क़ुलज़ुम
को जाता है वीरान में दाख़िल हो जाओ।"

[illegible]

26 और ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा,
27 "मैं कब तक इस ख़बीस गिरोह की जो मेरी शिकायत करती
रहती है, बर्दाश्त करूँ? बनी — इस्राईल जो मेरे बरख़िलाफ़
शिकायतें करते रहते हैं, मैंने वह सब शिकायतें सुनी हैं।
28 इसलिए तुम उससे कह दो, ख़ुदावन्द कहता है, मुझे अपनी
हयात की क़सम है कि जैसा तुम ने मेरे सुनते कहा है, मैं तुम से
ज़रूर वैसा ही करूँगा।
29 तुम्हारी लाशें इसी वीरान में पड़ी रहेंगी, और तुम्हारी सारी
ता'दाद में से या 'नी बीस बरस से लेकर उससे ऊपर — ऊपर की
उम्र के तुम सब जितने गिने गए, और मुझ पर शिकायत करते
रहे,
30 इनमें से कोई उस मुल्क में, जिसके बारे में मैने क़सम खाई
थी कि तुमको वहाँ बसाऊँगा, जाने न पाएगा, अलावा यफ़ुन्ना के
बेटे कालिब और नून के बेटे यशू'अ के।
31 और तुम्हारे बाल — बच्चे जिनके बारे में तुम ने यह कहा
कि वह तो लूट का माल ठहरेंगे, उनको मैं वहाँ पहुँचाऊगा, और
जिस मुल्क को तुम ने हक़ीर जाना वह उसकी हक़ीक़त पहचानेंगे।
32 और तुम्हारा यह हाल होगा कि तुम्हारी लाशें इसी वीरान
में पड़ी रहेंगी।
33 और तुम्हारे लड़के बाले चालीस बरस तक वीरान में आवारा
फिरते और तुम्हारी ज़िनाकारियों का फल पाते रहेंगे, जब तक कि
तुम्हारी लाशें वीरान में गल न जाएँ।

34 उन चालीस दिनों के हिसाब से जिनमें तुम उस मुल्क का
हाल दरियाफ़्त करते रहे थे, अब दिन पीछे एक — एक बरस
या'नी चालीस बरस तक, तुम अपने गुनाहों का फल पाते रहोगे;
तब तुम मेरे मुख़ालिफ़ हो जाने को समझोगे।
35 मैं ख़ुदावन्द यह कह चुका हूँ कि मैं इस पूरी ख़बीस गिरोह
से जो मेरी मुखालिफ़त पर मुत्तफ़िक़ है क़त'ई ऐसा ही करूँगा,
इनका ख़ातमा इसी वीरान में होगा और वह यहीं मरेंगे।"
36 और जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का हाल दरियाफ़्त
करने को भेजा था, जिन्होंने लौट कर उस मुल्क की ऐसी बुरी ख़बर
सुनाई थी, जिससे सारी जमा'अत मूसा पर कुड़कुड़ाने लगी,
37 इसलिए वह आदमी जिन्होंने मुल्क की बुरी ख़बर दी थी
ख़ुदावन्द के सामने वबा से मर गए।
38 लेकिन जो आदमी उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने गए
थे उनमें से नून का बेटा यशू'अ और यफ़ुन्ना का बेटा कालिब दोनों
जीते बचे रहे।
39 और मूसा ने यह बातें सब बनी इस्राईल से कहीं, तब वह
लोग ज़ार — ज़ार रोए।
40 और वह दूसरे दिन सुबह सवेरे उठ कर यह कहते हुए पहाड़
की चोटी पर चढ़ने लगे, कि हम हाज़िर हैं और जिस जगह का
वा'दा ख़ुदावन्द ने किया है वहाँ जाएँगे क्यूँकि हम से ख़ता हुई
है।
41 मूसा ने कहा, "तुम क्यूँ अब ख़ुदावन्द की हुक्म उदूली करते
हो? इससे कोई फ़ाइदा न होगा।
42 ऊपर मत चढ़ो क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारे बीच नहीं है ऐसा न
हो कि अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में शिकस्त खाओ।
43 क्यूँकि वहाँ तुम से आगे 'अमालीक़ी और कना'नी लोग हैं,
इसलिए तुम तलवार से मारे जाओगे; क्यूँकि ख़ुदावन्द से तुम
फिर गए हो, इसलिए ख़ुदावन्द तुम्हारे साथ नहीं रहेगा।"

44 लेकिन वह शोख़ी करके पहाड़ की चोटी तक चढ़े चले गए,
लेकिन ख़ुदावन्द के 'अहद का सन्दूक़ और मूसा लश्करगाह से
बाहर न निकले।
45 तब 'अमालीक़ी और कना'नी जो उस पहाड़ पर रहते थे, उन
पर आ पड़े और उनको क़त्ल किया और हुरमा तक उनको मारते
चले आए।

15

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
2 "बनी — इस्राईल से कह कि जब तुम अपने रहने के मुल्क में
जो मैं तुम को देता हूँ पहुँचो
3 और ख़ुदावन्द के सामने आतिशी क़ुर्बानी, या'नी सोख़्तनी
क़ुर्बानी या ख़ास मिन्नत का ज़बीहा या रज़ा की क़ुर्बानी पेश
करो, या अपनी मु'अय्यन 'ईदों में राहतअंगेज़ ख़ुशबू के तौर पर
ख़ुदावन्द के सामने गाय बैल या भेड़ बकरी चढ़ाओ।
4 तो जो शख़्स अपना हदिया लाए, वह ख़ुदावन्द के सामने
नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा के दस्वें हिस्से के बराबर मैदा
जिसमें चौथाई हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो,
5 और तपावन के तौर पर चौथाई हीन के बराबर मय भी लाए;
तू अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी या अपने ज़बीहे के हर बर्रे के साथ
इतना ही तैयार किया करना।
6 और हर मेंढे के साथ ऐफ़ा के पाँचवे हिस्से के बराबर मैदा,
जिसमें तिहाई हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो, नज़्र की क़ुर्बानी
के तौर पर लाना।
7 और तपावन के तौर पर तिहाई हीन के बराबर मय देना, ताकि
वह ख़ुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू ठहरे।

8 और जब तू ख़ुदावन्द के सामने सोख़्तनी क़ुर्बानी या ख़ास
मिन्नत के ज़बीहे या सलामती के ज़बीहे के तौर पर बछड़ा पेश
करे,
9 तो वह उस बछड़े के साथ नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा
के तीन दहाई हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें आधे हीन के बराबर
तेल मिला हुआ हो चढ़ाए।
10 और तू तपावन के तौर पर आधे हीन के बराबर मय पेश
करना, ताकि वह ख़ुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू की
आतिशी क़ुर्बानी ठहरे।
11 "हर बछड़े, और हर मेंढे, और हर नर बर्रे या बकरी के बच्चे
के लिए ऐसा ही किया जाए।
12 तुम जितने जानवर लाओ, उनके शुमार के मुताबिक़ एक —
एक के साथ ऐसा ही करना।
13 जितने देसी ख़ुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू की
आतिशी क़ुर्बानी पेश करें वह उस वक़्त यह सब काम इसी तरीक़े
से करें।
14 और अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ क़याम करता हो या जो
कोई नसलों से तुम्हारे साथ रहता आया हो, और वह ख़ुदावन्द के
सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू की आतिशीन क़ुर्बानी पेश करना चाहे
तो जैसा तुम करते हो वह भी वैसा ही करे।
15 मजमे' के लिए, या'नी तुम्हारे लिए और उस परदेसी के लिए
जो तुम में रहता हो नसल — दर — नसल हमेशा एक ही क़ानून
रहेगा; ख़ुदावन्द के आगे परदेसी भी वैसे ही हों जैसे तुम हो।
16 तुम्हारे लिए और परदेसियों के लिए जो तुम्हारे साथ रहते
हैं एक ही शरी'अत और एक ही क़ानून हो।"
17 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
18 "बनी — इस्राईल से कह, जब तुम उस मुल्क में पहुँचो, जहाँ
मैं तुम को लिए जाता हूँ,

19 और उस मुल्क की रोटी खाओ तो ख़ुदावन्द के सामने उठाने
की क़ुर्बानी पेश करना।
20 तुम अपने पहले गूँधे हुए आटे का एक गिर्दा उठाने की
क़ुर्बानी के तौर पर अदा करना, जैसे खलीहान की उठाने की
क़ुर्बानी को लेकर उठाते हो वैसे ही इसे भी उठाना।
21 तुम अपनी नसल — दर — नसल अपने पहले ही गूँधे हुए
आटे में से कुछ लेकर उसे ख़ुदावन्द के सामने उठाने की क़ुर्बानी
के तौर पर पेश करना।
22 “और अगर तुम से भूल हो जाए और तुमने उन सब हुक्मों
पर जो ख़ुदावन्द ने मूसा को दिए 'अमल न किया हो,
23 या'नी जिस दिन से ख़ुदावन्द ने हुक्म देना शुरू' किया उस
दिन से लेकर आगे — आगे, जो कुछ हुक्म ख़ुदावन्द ने तुम्हारी
नसल — दर — नसल मूसा के ज़रिए' तुम को दिया है,
24 उसमें अगर अनजाने में कोई ख़ता हो गई हो और
जमा'अत उससे वाक़िफ़ न हो तो सारी जमा'अत एक बछड़ा
सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए पेश करे, ताकि वह ख़ुदावन्द के सामने
राहतअंगेज़ ख़ुशबू हो, और उसके साथ शरा' के मुताबिक़ उसकी
नज़्र की क़ुर्बानी और उसका तपावन भी चढ़ाए, और ख़ता की
क़ुर्बानी के लिए एक बकरा पेश करे।
25 यूँ काहिन बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत के लिए
कफ़्फ़ारा दे तो उनकी मु'आफ़ी मिलेगी, क्यूँकि यह महज़ भूल थी
और उन्होंने उस भूल के बदले वह क़ुर्बानी भी चढ़ाई जो ख़ुदावन्द
के सामने आतिशी क़ुर्बानी ठहरती है, और ख़ता की क़ुर्बानी भी
ख़ुदावन्द के सामने पेश कीं।
26 तब बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत को और उन
परदेसियों को भी जो उनमें रहते हैं मु'आफ़ी मिलेगी, क्यूँकि
जमा'अत के ऐतबार से यह अनजाने में हुआ।
27 और अगर एक ही शख़्स अनजाने में ख़ता करे तो वह यक

— साला बकरी ख़ता की क़ुर्बानी के लिए चढ़ाए।”
28 यूँ काहिन उस शख़्स की तरफ़ से जिसने अनजाने में ख़ता
की, उसकी ख़ता के लिए ख़ुदावन्द के सामने कफ़्फ़ारा दे तो उसे
मु'आफ़ी मिलेगी।
29 जिस शख़्स ने अनजाने में ख़ता की हो, उसके लिए तुम एक
ही शरा' रखना चाहे वह बनी — इस्राईल में से देसी हो या परदेसी
जो उनमें रहता हो।
30 लेकिन जो शख़्स बेख़ौफ़ हो कर गुनाह करे, चाहे वह देसी
हो या परदेसी, वह ख़ुदावन्द की बे'इज़्ज़ती करता है; वह शख़्स
अपने लोगों में से अलग किया जाएगा।
31 क्यूँकि उसने ख़ुदावन्द के कलाम की हिक़ारत की और उसके
हुक्म को तोड़ डाला, वह शख़्स बिल्कुल अलग कर दिया जाएगा,
उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।”

[illegible]

32 और जब बनी — इस्राईल वीरान में रहते थे, उन दिनों एक
आदमी उनको सबत के दिन लकड़ियाँ जमा' करता हुआ मिला।
33 और जिनकी वह लकड़ियाँ जमा' करता हुआ मिला वह उसे
मूसा और हारून और सारी जमा'अत के पास ले गए।
34 उन्होंने उसे हवालात में रख्खा, क्यूँकि उनको यह नहीं
बताया गया था कि उसके साथ क्या करना चाहिए
35 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “यह शख़्स ज़रूर जान से
मारा जाए; सारी जमा'अत लश्करगाह के बाहर उसे पथराव
करे।”
36 चुनाँचे जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था, उसके
मुताबिक़ सारी जमा'अत ने उसे लश्करगाह के बाहर ले जाकर
पथराव किया और वह मर गया।

[illegible]

37 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,

38 “बनी — इस्राईल से कह कि वह नसल — दर — नसल अपने लिबासों के किनारों पर झालर लगाएँ, और हर किनारे की झालर के ऊपर आसमानी रंग का डोरा टाँके।

39 यह झालर तुम्हारे लिए ऐसी हो कि जब तुम उसे देखो तो ख़ुदावन्द के सारे हुक्मों को याद करके उन पर 'अमल करो और अपने दिल और आँखों की ख़्वाहिशों की पैरवी में ज़िनाकारी न करते फिरो जैसा करते आए हो;

40 बल्कि मेरे सब हुक्मों को याद करके उनको 'अमल में लाओ और अपने ख़ुदा के लिए पाक हो।

41 मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ, जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया ताकि तुम्हारा ख़ुदा ठहरूँ। मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

16

[illegible]

1 और क़ोरह बिन इज़हार बिन क़िहात बिन लावी ने बनी रूबिन में से इलियाब के बेटों दातन और अबीराम, और पलत के बेटे ओन के साथ मिल कर और आदमियों को साथ लिया;

2 और वह और बनी — इस्राईल में से ढाई सौ और अश्ख़ास जो जमा'अत के सरदार और चीदा और मशहूर आदमी थे, मूसा के मुक़ाबले में उठे;

3 और वह मूसा और हारून के ख़िलाफ़ इकट्ठे होकर उनसे कहने लगे, “तुम्हारे तो बड़े दा'वे हो चले, क्यूँकि जमा'अत का एक — एक आदमी पाक है और ख़ुदावन्द उनके बीच रहता है। इसलिए तुम अपने आप को ख़ुदावन्द की जमा'अत से बड़ा क्यूँकर ठहराते हो?”

4 मूसा यह सुन कर मुँह के बल गिरा।

5 फिर उसने क़ोरह और उसके कुल फ़रीक़ से कहा कि “कल सुबह ख़ुदावन्द दिखा देगा कि कौन उसका है और कौन पाक है

और वह उसी को अपने नज़दीक आने देगा, क्यूँकि जिसे वह ख़ुद
चुनेगा उसे वह अपनी क़ुरबत भी देगा।
6 इसलिए ऐ क़ोरह और उसके फ़रीक़ के लोगों, तुम यूँ करो कि
अपना अपना ख़ुशबूदान लो,
7 और उनमें आग भरो और ख़ुदावन्द के सामने कल उनमें ख़ुशबू
जलाओ, तब जिस शख़्स को ख़ुदावन्द चुन ले वही पाक ठहरेगा।
ऐ लावी के बेटो, बड़े — बड़े दा'वे तो तुम्हारे हैं।"
8 फिर मूसा ने क़ोरह की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा, ऐ बनी
लावी सुनो,
9 क्या यह तुम को छोटी बात दिखाई देती है कि इस्राईल के
ख़ुदा ने तुम को बनी — इस्राईल की जमा'अत में से चुन कर
अलग किया, ताकि तुम को वह अपनी क़ुरबत बख़्शे और तुम
ख़ुदावन्द के घर की ख़िदमत करो, और जमा'अत के आगे खड़े हो
कर उसकी भी ख़िदमत बजा लाओ।
10 और तुझे और तेरे सब भाइयों को जो बनी लावी हैं, अपने
नज़दीक आने दिया? इसलिए क्या अब तुम कहानत को भी
चाहते हो?
11 इसीलिए तू और तेरे फ़रीक़ के लोग, यह सब के सब
ख़ुदावन्द के खिलाफ़ इकट्ठे हुए हैं; और हारून कौन है जो तुम
उस की शिकायत करते हो?"
12 फिर मूसा ने दातन और अबीराम को जो इलियाब के बेटे थे
बुलवा भेजा; उन्होंने कहा, "हम नहीं आते;
13 क्या यह छोटी बात है कि तू हम को एक ऐसे मुल्क से,
जिसमें *दूध और शहद बहता है निकाल लाया है, कि हमको
वीरान में हलाक करे, और उस पर भी यह तुर्रा है कि अब तू सरदार
बन कर हम पर हुकूमत जताता है?
14 इसके अलावा तूने हम को उस मुल्क में भी नहीं पहुँचाया

* **16:13** अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क

जहाँ †दूध और शहद बहता है, और न हम को खेतों और
ताकिस्तानों का वारिस बनाया; क्या तू इन लोगों की ‡आँखें
निकाल डालेगा? हम तो नहीं आने के।"
15 तब मूसा बहुत तैश में आ कर ख़ुदावन्द से कहने लगा, "तू
उनके हदिये की तरफ़ तवज्जुह मत कर। मैंने उनसे एक गधा भी
नहीं लिया, न उनमें से किसी को कोई नुक़सान पहुँचाया है।"
16 फिर मूसा ने क़ोरह से कहा, "कल तू अपने सारे फ़रीक़ के
लोगों को लेकर ख़ुदावन्द के आगे हाज़िर हो; तू भी हो और वह
भी हों, और हारून भी हो।
17 और तुम में से हर शख़्स अपना ख़ुशबूदान लेकर उसमें ख़ुशबू
डाले, और तुम अपने — अपने ख़ुशबूदान को जो शुमार में ढाई
सौ होंगे, ख़ुदावन्द के सामने लाओ और तू भी अपना ख़ुशबूदान
लाना और हारून भी लाए।"
18 तब उन्होंने अपना अपना ख़ुशबूदान लेकर और उनमें आग
रख कर उस पर ख़ुशबू डाला, और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के
दरवाज़े पर मूसा और हारून के साथ आ कर खड़े हुए।
19 और क़ोरह ने सारी जमा'अत को उनके खिलाफ़ ख़ेमा — ए
— इजितमा'अ के दरवाज़े पर जमा' कर लिया था। तब ख़ुदावन्द
का जलाल सारी जमा'अत के सामने नुमायाँ हुआ।
20 और ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा;
21 कि "तुम अपने आप को इस जमा'अत से बिल्कुल अलग
कर लो, ताकि मैं उनको एक पल में भसम कर दूँ।"
22 तब वह मुँह के बल गिर कर कहने लगे, "ऐ ख़ुदा, सब बशर
की रूहों के ख़ुदा! क्या एक आदमी के गुनाह की वजह से तेरा
क़हर सारी जमा'अत पर होगा?"
23 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,

† **16:14** अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क ‡ **16:14** धोका देगा

24 “तू जमा'अत से कह कि तुम क़ोरह और दातन और अबीराम
के खेमों के आस पास से दूर हट जाओ।”
25 और मूसा उठ कर दातन और अबीराम की तरफ़ गया, और
बनी — इस्राईल के बुज़ुर्ग उसके पीछे पीछे गए।
26 और उसने जमा'अत से कहा, “इन शरीर आदमियों के खेमों
से निकल जाओ और उनकी किसी चीज़ को हाथ न लगाओ, ऐसा
न हो कि तुम भी उनके सब गुनाहों की वजह से हलाक हो जाओ।”
27 तब वह लोग क़ोरह और दातन और अबीराम के खेमों
के आस पास से दूर हट गए; और दातन और अबीराम अपनी
बीवियों और बेटों और बाल — बच्चों समेत निकल कर अपने
ख़ेमों के दरवाज़ों पर खड़े हुए।
28 तब मूसा ने कहा, “इस से तुम जान लोगे के ख़ुदावन्द ने
मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्यूँकि मैंने अपनी मर्ज़ी से
कुछ नहीं किया।
29 अगर यह आदमी वैसी ही मौत से मरें जो सब लोगों को
आती है, या इन पर वैसे ही हादसे गुज़रें जो सब पर गुज़रते हैं,
तो मैं ख़ुदावन्द का भेजा हुआ नहीं हूँ।
30 लेकिन अगर ख़ुदावन्द कोई नया करिश्मा दिखाए, और
ज़मीन अपना मुँह खोल दे और इनको इनके घर — बार के साथ
निगल जाए और यह जीते जी पाताल में समा जाएँ, तो तुम
जानना कि इन लोगों ने ख़ुदावन्द की तहक़ीर की है।”
31 उसने यह बातें ख़त्म ही की थीं कि ज़मीन उनके पाओं तले
फट गई।
32 और ज़मीन ने अपना मुँह खोल दिया और उनको और उनके
घर — बार को, और क़ोरह के यहाँ के सब आदमियों को और उनके
सारे माल — ओ — अस्बाब को निगल गई।
33 तब वह और उनका सारा घर — बार जीते जो पाताल
में समा गए और ज़मीन उनके ऊपर बराबर हो गई, और वह
जमा'अत में से ख़त्म हो गए।

34 और सब इस्राईली जो उनके आस पास थे उनका चिल्लाना
सुन कर यह कहते हुए भागे, कि कहीं ज़मीन हम को भी निगल
न ले।
35 और ख़ुदावन्द के सामने से आग निकली और उन ढाई सौ
आदमियों को जिन्होंने ख़ुशबू पेश करा था भसम कर डाला।
36 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
37 "हारून काहिन के बेटे इली'एलियाज़र से कह कि वह
ख़ुशबूदान को शोलों में से उठा ले और आग के अंगारों को उधर
ही बिखेर दे क्यूँकि वह पाक हैं।
38 जो ख़ताकार अपनी ही जान के दुश्मन हुए, उनके
ख़ुशबूदानों के पीट पीट कर पत्तर बनाए जाएँ ताकि वह मज़बह
पर मंढे जाएँ, क्यूँकि उन्होंने उनको ख़ुदावन्द के सामने रख्खा
था इसलिए वह पाक हैं, और वह बनी — इस्राईल के लिए एक
निशान भी ठहरेंगे।"
39 तब इली'एलियाज़र काहिन ने पीतल के उन ख़ुशबूदानों को
उठा लिया जिनमें उन्होंने जो भसम कर दिए गए थे ख़ुशबू पेश
करा था, और मज़बह पर मंढने के लिए उनके पत्तर बनवाए:
40 ताकि बनी — इस्राईल के लिए एक यादगार हो कि कोई
ग़ैर शख़्स जो हारून की नसल से नहीं, ख़ुदावन्द के सामने ख़ुशबू
जलाने को नज़दीक न जाए, ऐसा न हो कि वह क़ोरह और उसके
फ़रीक़ की तरह हलाक हो, जैसा ख़ुदावन्द ने उसको मूसा के
ज़रिए' बता दिया था।
41 लेकिन दूसरे ही दिन बनी — इस्राईल की सारी जमाअत
ने मूसा और हारून की शिकायत की और कहने लगे, कि तुम ने
ख़ुदावन्द के लोगों को मार डाला है।
42 और जब वह जमा'अत मूसा और हारून के ख़िलाफ़ इकट्ठी
हो रही थी तो उन्होंने ख़ेमा — ए — इजितमा'अ की तरफ़ निगाह
की, और देखा कि बादल उस पर छाया हुआ है और ख़ुदावन्द का

जलाल नुमायाँ है।
43 तब मूसा और हारून ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के सामने
आए।
44 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
45 "तुम इस जमा'अत के बीच से हट जाओ, ताकि मैं इनको
एक पल में भसम कर डालूँ।" तब वह मुँह के बल गिरे।
46 और मूसा ने हारून से कहा, "अपना ख़ुशबूदान ले और
मज़बह पर से आग लेकर उसमें डाल और उस पर ख़ुशबू जला,
और जल्द जमा'अत के पास जाकर उनके लिए कफ़्फ़ारा दे क्यूँकि
ख़ुदावन्द का क़हर नाज़िल हुआ है और वबा शुरू' हो गई।"
47 मूसा के कहने के मुताबिक़ हारून ख़ुशबूदान लेकर जमा'अत
के बीच में दौड़ता हुआ गया और देखा कि वबा लोगों में फैलने
लगी है, तब उसने ख़ुशबू जलायी और उन लोगों के लिए कफ़्फ़ारा
दिया।
48 और वह मुर्दों और ज़िन्दों के बीच में खड़ा हुआ, तब वबा
ख़त्म हुई।
49 तब 'अलावा उनके जो क़ोरह के मुआ'मिले की वजह से
हलाक हुए थे, चौदह हज़ार सात सौ आदमी वबा से हलाक गए।
50 फिर हारून लौट कर ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े
पर मूसा के पास आया और वबा ख़त्म हो गई।

17

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
2 "बनी — इस्राईल से गुफ़्तगू करके उनके सब सरदारों से उनके
आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक, हर ख़ान्दान एक लाठी के हिसाब
से बारह लाठियाँ ले; और हर सरदार का नाम उसी की लाठी पर
लिख,

3 और लावी की लाठी पर हारून का नाम लिखना। क्यूँकि उनके
आबाई ख़ान्दानों के हर सरदार के लिए एक लाठी होगी।
4 और उनको लेकर ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में *शहादत के
सन्दूक के सामने जहाँ मैं तुम से मुलाक़ात करता हूँ रख देना।
5 और जिस शख़्स को मैं चुनूँगा उसकी लाठी से कलियाँ फूट
निकलेंगी, और बनी — इस्राईल जो तुम पर कुड़कुड़ाते रहते हैं,
वह कुड़कुड़ाना मैं अपने पास से दफ़ा' करूँगा।"
6 तब मूसा ने बनी — इस्राईल से गुफ़्तगू की, और उनके सब
सरदारों ने अपने आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ हर सरदार एक
लाठी के हिसाब से बारह लाठियाँ उस को दीं; और हारून की
लाठी भी उनकी लाठियों में थी।
7 और मूसा ने उन लाठियों को शहादत के ख़ेमे में ख़ुदावन्द के
सामने रख दिया।
8 और दूसरे दिन जब मूसा शहादत के ख़ेमे में गया, तो देखा कि
हारून की लाठी में जो लावी के ख़ान्दान के नाम की थी कलियाँ
फूटी हुई और शगूफ़े खिले हुए और पक्के बादाम लगे हैं।
9 और मूसा उन सब लाठियों को ख़ुदावन्द के सामने से निकाल
कर सब बनी — इस्राईल के पास ले गया, और उन्होंने देखा और
हर शख़्स ने अपनी लाठी ले ली।
10 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "हारून की लाठी शहादत
के सन्दूक़ के आगे धर दे, ताकि वह फ़ित्नाअंगेज़ों के लिए एक
निशान के तौर पर रख्खी रहे, और इस तरह तू उनकी शिकायतें
जो मेरे ख़िलाफ़ होती रहती हैं बन्द कर दे ताकि वह हलाक न
हों।"
11 और मूसा ने जैसा ख़ुदावन्द ने उसे हुक्म दिया था वैसा ही
किया।
12 और बनी — इस्राईल ने मूसा से कहा, "देख, हम हलाक हुए

* **17:4** देखें, ख़ुरुज31:18; 32:15; 25:15, 21; 25:22; 26:33 — 34

जाते, हम हलाक हुए जाते, हम सब के सब हलाक हुए जाते हैं।
13 जो कोई ख़ुदावन्द के घर के नज़दीक जाता है, मर जाता है।
तो क्या हम सब के सब हलाक ही हो जाएँगे?"

18

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने हारून से कहा कि, हैकल का बार — ए —
गुनाह तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे आबाई ख़ान्दान पर होगा,
और तुम्हारी कहानत का बार — ए — गुनाह भी तुझ पर और
तेरे बेटों पर होगा।
2 और तू लावी के क़बीले या'नी अपने बाप के क़बीले के लोगों
को भी जो तेरे भाई हैं अपने साथ ले आया कर, ताकि वह तेरे
साथ होकर तेरी ख़िदमत करें; लेकिन शहादत के ख़ेमे के आगे तू
और तेरे बेटे ही आया करें।
3 वह तेरी ख़िदमत और सारे ख़ेमे की मुहाफ़िज़त करें; सिर्फ़
वह हैकल के बर्तनों और मज़बह के नज़दीक न जाएँ, ऐसा न हो
कि वह भी और तुम भी हलाक हो जाओ।
4 इसलिए वह तेरे साथ होकर ख़ेमा — ए — इजितमा'अ और
ख़ेमे के इस्ते'माल की सब चीज़ों की मुहाफ़िज़त करें, और कोई
ग़ैर शख़्स तुम्हारे नज़दीक न आने पाए।
5 और तुम हैकल और मज़बह की मुहाफ़िज़त करो ताकि आगे
को फिर बनी इस्राईल पर क़हर नाज़िल न हो।
6 और देखो, मैंने बनी लावी को जो तुम्हारे भाई हैं बनी —
इस्राईल से अलग करके ख़ुदावन्द की ख़ातिर बख़्शिश के तौर पर
तुम को सुपुर्द किया, ताकि वह ख़ेमा — ए — इजितमा'अ की
ख़िदमत करें।
7 लेकिन मज़बह की और पर्दे के अन्दर की ख़िदमत तेरे और
तेरे बेटों के ज़िम्मे है; इसलिए उसके लिए तुम अपनी कहानत
की हिफ़ाज़त करना, वहाँ तुम ही ख़िदमत किया करना, कहानत

की ख़िदमत का शर्फ़ मैं तुम को बख़्शता हूँ और जो ग़ैर शख़्स
नज़दीक आए वह जान से मारा जाए।

[illegible]

8 फिर ख़ुदावन्द ने हारून से कहा, देख, मैंने बनी — इस्राईल
की सब पाक चीज़ों में से उठाने की क़ुर्बानियाँ तुझे दे दीं; मैंने
उनको तेरे मम्सूह होने का हक़ ठहराकर तुझे और तेरे बेटों को
हमेशा के लिए दिया।
9 सबसे पाक चीज़ों में से जो कुछ आग से बचाया जाए वह
तेरा होगा; उनके सब चढ़ावे, या'नी नज़्र की क़ुर्बानी और ख़ता
की क़ुर्बानी और जुर्म की क़ुर्बानी जिनको वह मेरे सामने गुज़रानें,
वह तेरे और तेरे बेटों के लिए बहुत पाक ठहरें।
10 और तू उनको [*]बहुत पाक जान कर खाना; मर्द ही मर्द उनको
खाएँ, वह तेरे लिए पाक हैं।
11 और अपने हदिये में से जो कुछ बनी — इस्राईल उठाने की
क़ुर्बानी और हिलाने की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें वह भी तेरा
ही हो, इनको मैं तुझ को और तेरे बेटे — बेटियों को हमेशा के हक़
के तौर पर देता हूँ; तेरे घराने में जितने पाक हैं वह उनको खाएँ।
12 अच्छे से अच्छा तेल और अच्छी से अच्छी मय और अच्छे
से अच्छा गेहूँ, या'नी इन चीज़ों में से जो कुछ वह पहले फल के
तौर पर ख़ुदावन्द के सामने पेश करें वह सब मैंने तुझे दिया।
13 उनके मुल्क की सारी पैदावार के पहले पक्के फल, जिनको
वह ख़ुदावन्द के सामने लाएँ तेरे होंगे; तेरे घराने में जितने पाक
हैं वह उनको खाएँ।
14 बनी — इस्राईल की हर एक मख़्सूस की हुई चीज़ तेरी
होगी।

---

* **18:10** तुम्हें उनको एक मुक़द्दस मक़ाम में खाना है

15 उन जानदारों में से जिनको वह ख़ुदावन्द के सामने पेश
करते हैं, जितने पहलौठी के बच्चे हैं चाहे वह इंसान के हों चाहे
हैवान के वह सब तेरे होंगे; लेकिन इंसान के पहलौठों का फ़िदिया
लेकर उनको ज़रूर छोड़ देना और नापाक जानवरों के पहलौठे भी
फ़िदिये से छोड़ दिए जाएँ।
16 और जिनका फ़िदिया दिया जाए वह जब एक महीने के
हों, तो उनको अपनी ठहराई हुई क़ीमत के मुताबिक़ हैकल की
मिस्क़ाल के हिसाब से जो †बीस जीरे की होती है चाँदी की पाँच
मिस्क़ाल लेकर छोड़ देना।
17 लेकिन गाय और भेड़ — बकरी के पहलौठों का फ़िदिया न
लिया जाए, वह पाक हैं; तू उनका ख़ून मज़बह पर छिड़कना और
उनकी चर्बी आतिशीन क़ुर्बानी के तौर पर जला देना, ताकि वह
ख़ुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू ठहरे।
18 और उनका गोश्त तेरा होगा जिस तरह हिलाई हुई क़ुर्बानी
का सीना और दहनी रान तेरे हैं।
19 जितनी पाक चीज़ें बनी — इस्राईल उठाने की क़ुर्बानी के तौर
पर ख़ुदावन्द के सामने पेश करें, उन सभों को मैंने तुझे और तेरे
बेटे — बेटियों को हमेशा के हक़ के तौर पर दिया; यह ख़ुदावन्द
के सामने तेरे और तेरी नसल के लिए नमक का दाइमी 'अहद है।"
20 और ख़ुदावन्द ने हारून से कहा, उनके मुल्क में तुझे कोई
मीरास नहीं मिलेगी और न उनके बीच तेरा कोई हिस्सा होगा
क्यूँकि बनी — इस्राईल में तेरा हिस्सा और तेरी मीरास मैं हूँ।
21 'और बनी लावी को उस ख़िदमत के मु'आवज़े में जो वह
ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में करते हैं मैंने बनी इस्राईल की सारी
दहेकी मौरूसी हिस्से के तौर पर दी।
22 और आगे को बनी — इस्राईल ख़ेमा — ए — इजितमा'अ
के नज़दीक हरगिज़ न आएँ, ऐसा न हो कि गुनाह उनके सिर लगे

† **18:16** 55 ग्राम

और वह मर जाएँ।

23 बल्कि बनी लावी ख़ेमा — ए — इजितमा'अ की ख़िदमत
करें और वही उनका बार — ए — गुनाह उठाएँ; तुम्हारी नसल
— दर — नसल यह एक दाइमी क़ानून हो, और बनी इस्राईल के
बीच उनको कोई मीरास न मिले।

24 क्यूँकि मैंने बनी — इस्राईल की दहेकी को, जिसे वह उठाने
की क़ुर्बानी के तौर पर ख़ुदावन्द के सामने पेश करेंगे उनका
मौरूसी हिस्सा कर दिया है; इसी वजह से मैंने उनके हक़ में कहा
है कि बनी — इस्राईल के बीच उनकी कोई मीरास न मिले।"

25 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,

26 "तू लावियों से इतना कह देना कि जब तुम बनी — इस्राईल
से उस दहेकी को लो जिसे मैंने उनकी तरफ़ से तुम्हारा मौरूसी
हिस्सा कर दिया है, तो तुम उस दहेकी की दहेकी ख़ुदावन्द के
सामने उठाने की क़ुर्बानी के लिए पेश करना।

27 और यह तुम्हारी उठाई हुई क़ुर्बानी तुम्हारी तरफ़ से ऐसी
ही समझी जाएगी जैसे खलिहान का गल्ला और कोल्हू की मय
समझी जाती है।

28 इस तरीक़े से तुम भी अपनी सब दहेकियों में से जो तुम
को बनी इस्राईल की तरफ़ से मिलेगी ख़ुदावन्द के सामने उठाने
की क़ुर्बानी पेश करना, और ख़ुदावन्द की यह उठाई हुई क़ुर्बानी
हारून काहिन को देना।

29 जितने नज़राने तुम को मिलें उनमें से उनका अच्छे से
अच्छा हिस्सा, जो पाक किया गया है और ख़ुदावन्द का है, तुम
उठाने की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना।

30 इसलिए तू उनसे कह देना कि जब तुम इनमें से उनका अच्छे
से अच्छा हिस्सा उठाने की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करोगे, तो वह
लावियों के हक़ में खलिहान के भरे गल्ले और कोल्हू की भरी मय
के बराबर का हिसाब होगा।

31 और इनको तुम अपने घरानों के साथ हर जगह खा सकते
हो, क्यूँकि यह उस ख़िदमत के बदले तुम्हारा मजदूरी है जो तुम
ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में करोगे।
32 और जब तुम उसमें से अच्छे से अच्छा हिस्सा उठाने की
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करोगे, तो तुम उसकी वजह से गुनाहगार
न ठहरोगे; और ख़बरदार बनी इस्राईल की पाक चीज़ों को नापाक
न करना ताकि तुम हलाक न हो।”

19

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा,
2 कि शरी'अत के जिस क़ानून का हुक्म ख़ुदावन्द ने दिया है
वह यह है, कि तू बनी — इस्राईल से कह कि वह तेरे पास एक
बेदाग़ और बे — 'ऐब सुर्ख़ रंग की बछिया लाएँ, जिस पर कभी
बोझ न रख्खा गया हो।
3 और तुम उसे लेकर इली'एलियाज़र काहिन को देना कि वह
उसे लश्करगाह के बाहर ले जाए, और कोई उसे उसी के सामने
ज़बह कर दे;
4 और इली'एलियाज़र काहिन अपनी उंगली से उसका कुछ
ख़ून लेकर उसे ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के आगे की तरफ़ सात
बार छिड़के।
5 फिर कोई उसकी आँखों के सामने उस गाय को जला दे; या'नी
उसका चमड़ा, और गोश्त, और ख़ून, और गोबर, इन सब को वह
जलाए।
6 फिर काहिन देवदार की लकड़ी और ज़ूफ़ा और सुर्ख़ कपड़ा
लेकर उस आग में जिसमें गाय जलती हो डाल दे।
7 तब काहिन अपने कपड़े धोए और पानी से ग़ुस्ल करे; इसके
बाद वह लश्करगाह के अन्दर आए, फिर भी काहिन शाम तक
नापाक रहेगा।

8 और जो उस गाय को जलाए वह भी अपने कपड़े पानी से धोए
और पानी से ग़ुस्ल करे और वह भी शाम तक नापाक रहेगा।
9 और कोई पाक शख़्स उस गाय की राख को बटोरे, और उसे
लश्करगाह के बाहर किसी पाक जगह में धर दे; यह बनी —
इस्राईल की जमा'अत के लिए नापाकी दूर करने के पानी के लिए
रख्खी रहे, क्यूँकि यह ख़ता की क़ुर्बानी है।
10 और जो उस गाय की राख को बटोरे वह भी अपने कपड़े धोए
और वह भी शाम तक नापाक रहेगा, और यह बनी — इस्राईल के
और उन परदेसियों के लिए जो उनमें क़याम करते हैं एक दाइमी
क़ानून होगा।
11 'जो कोई किसी आदमी की लाश को छुए वह सात दिन तक
नापाक रहेगा।
12 ऐसा आदमी तीसरे दिन उस राख से अपने को साफ़ करे तो
वह सातवें दिन पाक ठहरेगा लेकिन अगर वह तीसरे दिन अपने
को साफ़ न करे तों वह सातवें दिन पाक नहीं ठहरेगा।
13 जो कोई आदमी की लाश को छूकर अपने को साफ़ न करे
वह ख़ुदावन्द के घर को नापाक करता है, वह शख़्स इस्राईल में
से अलग किया जाएगा क्यूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस
पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक है उसकी नापाकी अब
तक उस पर है।
14 अगर कोई आदमी किसी ख़ेमे में मर जाए तो उसके बारे में
शरा' यह है, कि जितने उस ख़ेमे में आएँ और जितने उस ख़ेमे में
रहते हों वह सात दिन तक नापाक रहेंगे।
15 और हर एक खुला बर्तन जिसका ढकना उस पर बन्धा न हो
नापाक ठहरेगा।
16 और जो कोई मैदान में तलवार के मक़तूल को या मुर्दे को
या आदमी की हड्डी को या किसी क़ब्र को छुए वह सात दिन तक
नापाक रहेगा।

17 और नापाक आदमी के लिए उस जली हुई ख़ता की क़ुर्बानी
की राख को किसी बर्तन में लेकर उस पर बहता पानी डालें।
18 फिर कोई पाक आदमी ज़ूफ़ा लेकर और उसे पानी में डुबो
— डुबोकर उस ख़ेमे पर, और जितने बर्तन और आदमी वहाँ हों
उन पर और जिस शख़्स ने हड्डी को, या मक़तूलको, या मुर्दे को,
या क़ब्र को छुआ है उस पर छिड़के।
19 वह पाक आदमी तीसरे दिन और सातवें दिन उस नापाक
आदमी पर इस पानी को छिड़के और सातवें दिन उसे साफ़ करे
फिर वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए, तो वह शाम को
पाक होगा।
20 'लेकिन जो कोई नापाक हो और अपनी सफ़ाई न करे, वह
शख़्स जमा'अत में से अलग किया जाएगा क्यूँकि उसने ख़ुदावन्द
के हैकल को नापाक किया नापाकी दूर करने का पानी उस पर
छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक है।
21 और यह उनके लिए एक दाइमी क़ानून हो; जो नापाकी दूर
करने के पानी को लेकर छिड़के वह अपने कपड़े धोए, और जो
कोई नापाकी दूर करने के पानी को छुए वह भी शाम तक नापाक
रहेगा।
22 और जिस किसी चीज़ को वह नापाक आदमी छुए वह चीज़
नापाक ठहरेगी, और जो कोई उस चीज़ को छू ले वह भी शाम
तक नापाक रहेगा।

20

[illegible]

1 और पहले महीने में बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत सीन
के जंगल में आ गई और वह लोग क़ादिस में रहने लगे, और
मरियम ने वहाँ वफ़ात पाई और वहीं दफ़्न हुई।
2 और जमा'अत के लोगों के लिए वहाँ पानी न मिला, इसलिए
वह मूसा और हारून के बरख़िलाफ़ इकट्ठे हुए।

3 और लोग मूसा से झगड़ने और यह कहने लगे, “हाय, काश
हम भी उसी वक़्त मर जाते जब हमारे भाई ख़ुदावन्द के सामने
मरे।
4 तुम ख़ुदावन्द की जमा'अत को इस जंगल में क्यूँ ले आए हो
कि हम भी और हमारे जानवर भी यहाँ मरें?
5 और तुम ने क्यूँ हम को मिस्र से निकाल कर इस बुरी जगह
पहुँचाया है? यह तो बोने की और अंजीरों और ताकों और अनार
की जगह नहीं है बल्कि यहाँ तो पीने के लिए पानी तक हासिल
नहीं।”
6 और मूसा और हारून जमा'अत के पास से जाकर ख़ेमा — ए
— इजितमा'अ के दरवाज़े पर औंधे मुँह गिरे। तब ख़ुदावन्द का
जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ,
7 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,
8 “उस लाठी को ले और तू और तेरा भाई हारून, तुम दोनों
जमा'अत को इकट्ठा करो और उनकी आँखों के सामने उस चट्टान
से कहो कि वह अपना पानी दे; और तू उनके लिए चट्टान ही
से पानी निकालना, यूँ जमा'अत को और उनके चौपायों को
पिलाना।”
9 चुनाँचे मूसा ने ख़ुदावन्द के सामने से उसी के हुक्म के
मुताबिक़ वह लाठी ली।
10 और मूसा और हारून ने जमा'अत को उस चट्टान के सामने
इकट्ठा किया, और उसने उनसे कहा, “सुनो, ऐ बाग़ियों, क्या हम
तुम्हारे लिए इसी चट्टान से पानी निकालें?”
11 तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और उस चट्टान पर दो बार
लाठी मारी, और कसरत से पानी बह निकला और जमा'अत ने
और उनके चौपायों ने पिया।
12 लेकिन मूसा और हारून से ख़ुदावन्द ने कहा, “चूँकि तुम
ने मेरा यक़ीन नहीं किया कि बनी — इस्राईल के सामने मेरी

तक़दीस करते, इसलिए तुम इस जमा'अत को उस मुल्क में जो
मैंने उनको दिया है नहीं पहुँचाने पाओगे।"
13 *मरीबा का चश्मा यही है क्यूँकि बनी — इस्राईल ने
ख़ुदावन्द से झगड़ा किया और वह उनके बीच क़ुद्दूस साबित हुआ।

[illegible]

14 और मूसा ने क़ादिस से अदोम के बादशाह के पास क़ासिद
रवाना किए और कहला भेजा कि "तेरा भाई इस्राईल यह 'अर्ज़
करता है, कि तू हमारी सारी मुसीबतों से जो हम पर आईं वाकिफ़
है;
15 कि हमारे बाप दादा मिस्र में गए और हम बहुत मुद्दत तक
मिस्र में रहे, और मिस्रियों ने हम से और हमारे बाप दादा से बुरा
सुलूक किया।
16 और जब हमने ख़ुदावन्द से फ़रियाद की तो उसने हमारी
सुनी, और एक फ़रिश्ते को भेज कर हम को मिस्र से निकाल
ले आया है, और अब हम क़ादिस शहर में हैं जो तेरी सरहद के
आख़िर में वाक़े' है।
17 इसलिए हम को अपने मुल्क में से होकर जाने की इजाज़त
दे। हम खेतों और ताकिस्तानों में से होकर नहीं गुज़रेंगे, और न
कुओं का पानी पिएँगे; हम शाहराह पर चल कर जाएँगे और दहने
या बाएँ हाथ नहीं मुड़ेंगे, जब तक तेरी सरहद से बाहर निकल न
जाएँ।"
18 लेकिन शाह — ए — अदोम ने कहला भेजा, "तू मेरे मुल्क
से होकर जाने नहीं पाएगा, वरना मैं तलवार लेकर तेरा सामना
करूँगा।"
19 बनी — इस्राईल ने उसे फिर कहला भेजा कि "हम सड़क
ही सड़क जाएँगे, और अगर हम या हमारे चौपाये तेरा पानी भी

* **20:13** बहस करना

पिएँ तो उसका दाम देंगे; हम को और कुछ नहीं चाहिए अलावा
इसके कि हम को पॉव — पाँव चल कर निकल जाने दे।”
20 लेकिन उसने कहा, “तू हरगिज़ निकलने नहीं पाएगा।” और
अदोम उसके मुक़ाबले के लिए बहुत से आदमी और हथियार
लेकर निकल आया।
21 यूँ अदोम ने इस्राईल को अपनी हदों से गुज़रने का रास्ता
देने से इन्कार किया, इसलिए इस्राईल उसकी तरफ़ से मुड़ गया।

[illegible]

22 और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत क़ादिस से रवाना
होकर कोह — ए — हूर पहुँची।
23 और ख़ुदावन्द ने कोह — ए — हूर पर, जो अदोम की सरहद
से मिला हुआ था, मूसा और हारून से कहा,
24 “हारून अपने लोगों में जा मिलेगा, क्यूँकि वह उस मुल्क में
जो मैंने बनी — इस्राईल को दिया है जाने नहीं पाएगा, इसलिए
कि मरीबा के चश्मे पर तुम ने मेरे कलाम के ख़िलाफ़ 'अमल
किया।
25 इसलिए तू हारून और उसके बेटे इली'एलियाज़र को अपने
साथ लेकर कोह — ए — हूर के ऊपर आ जा।
26 और हारून के लिबास को उतार कर उसके बेटे
इली'एलियाज़र को पहना देना, क्यूँकि हारून वहीं वफ़ात पाकर
अपने लोगों में जा मिलेगा।”
27 और मूसा ने ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ 'अमल किया, और
वह सारी जमा'अत की आँखों के सामने कोह — ए — हूर पर चढ़
गए।
28 और मूसा ने हारून के लिबास को उतार कर उस के बेटे
इली'एलियाज़र को पहना दिया, और हारून ने वहीं पहाड़ की
चोटी पर रहलत की। तब मूसा और इली'अजर पहाड़ पर से उतर
आए।

29 जब जमा'अत ने देखा कि हारून ने वफ़ात पाई तो इस्राईल
के सारे घराने के लोग हारून पर तीस दिन तक मातम करते रहे।

21

[illegible]

1 और जब 'अराद के कना'नी बादशाह ने जो दख्खिन की तरफ़
रहता था सुना, कि इस्राईली अथारिम की राह से आ रहे हैं, तो
वह इस्राईलियों से लड़ा और उनमें से कई एक को ग़ुलाम कर
लिया।
2 तब इस्राईलियों ने ख़ुदावन्द के सामने मिन्नत मानी और कहा
कि "अगर तू सचमुच उन लोगों को हमारे हवाले कर दे तो हम
उनके शहरों को बर्बाद कर देंगे।"
3 और ख़ुदावन्द ने इस्राईल की फ़रियाद सुनी और कना'नियों
को उन के हवाले कर दिया; और उन्होंने उनको और उनके शहरों
को बर्बाद कर दिया, चुनाँचे उस जगह का नाम भी *हुरमा पड़
गया।

[illegible]

4 फिर उन्होंने कोह — ए — होर से रवाना होकर बहर — ए —
क़ुलज़ुम का रास्ता लिया, ताकि मुल्क — ए — अदोम के बाहर
— बाहर घूम कर जाएँ; लेकिन उन लोगों की जान उस रास्ते से
'आजिज़ आ गई।
5 और लोग ख़ुदा की और मूसा की शिकायत करके कहने लगे
कि "तुम क्यूँ हम को मिस्र से वीरान में मरने के लिए ले आए?
यहाँ तो न रोटी है, न पानी, और हमारा जी इस निकम्मी ख़ुराक
से कराहियत करता है।"
6 तब ख़ुदावन्द ने उन लोगों में जलाने वाले साँप भेजे, उन्होंने
लोगों को काटा और बहुत से इस्राईली मर गए।

---

* **21:3** बर्बादी

7 तब वह लोग मूसा के पास आकर कहने लगे कि “हम ने
गुनाह किया, क्यूँकि हम ने ख़ुदावन्द की और तेरी शिकायत की;
इसलिए तू ख़ुदावन्द से दुआ कर कि वह इन साँपों को हम से दूर
करे।” चुनाँचे मूसा ने लोगों के लिए दुआ की।
8 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि “एक जलाने वाला साँप
बना ले और उसे एक बल्ली पर लटका दे, और जो साँप का डसा
हुआ उस पर नज़र करेगा वह ज़िन्दा बचेगा।”
9 चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर उसे बल्ली पर
लटका दिया; और ऐसा हुआ कि जिस जिस साँप के डसे हुए
आदमी ने उस पीतल के साँप पर निगाह की वह ज़िन्दा बच गया।

[illegible]

10 और बनी — इस्राईल ने वहाँ से रवानगी की और ओबूत में
आकर ख़ेमे डाले।
11 फिर ओबूत से कूच किया और 'अय्ये 'अबारीम में, जो
पश्चिम की तरफ़ मोआब के सामने के वीरान में वाके' है ख़ेमे
डाले।
12 और वहाँ से रवाना होकर वादी — ए — ज़रद में ख़ेमे डाले।
13 जब वहाँ से चले तो अरनोन से पार हो कर, जो अमोरियों
की सरहद से निकल कर वीरान में बहती है, ख़ेमे डाले: क्यूँकि
मोआब और अमोरियों के बीच अरनोन मोआब की सरहद है।
14 इसी वजह से ख़ुदावन्द के जंग नामे में यूँ लिखा है: “वाहेब
जो सूफ़ा में है, और अरनोन के नाले
15 और उन नालों का ढलान जो 'आर शहर तक जाता है, और
मोआब की सरहद से मुतसिल है।”
16 फिर इस जगह से वह बैर को गए; यह वही कुवाँ है जिसके
बारे में ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा था कि “इन लोगों को एक जगह
जमा' कर, और मैं इनको पानी दूँगा।”

17 तब इस्राईल ने यह गीत गाया: 'ऐ कुएँ, तू उबल आ! तुम
इस कुएँ की ता'रीफ़ गाओ।
18 यह वही कुआँ है जिसे रईसों ने बनाया, और क़ौम के अमीरों
ने अपने 'असा और लाठियों से खोदा।" तब वह उस जंगल से
मत्तना को गए,
19 और मत्तना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामात को,
20 और बामात से उस वादी में पहुँच कर जो मोआब के मैदान में
है, पिसगा की उस चोटी तक निकल गए जहाँ से यशीमोन नज़र
आता है।

?????? ?? ?? ?? ??? ?????? ?????

21 और इस्राईलियों ने अमोरियों के बादशाह सीहोन के पास
क़ासिद रवाना किए और यह कहला भेजा कि;
22 "हम को अपने मुल्क से गुज़र जाने दे; हम खेतों और अँगूर
के बाग़ों में नहीं घुसेंगे, और न कुओं का पानी पीएँगे, बल्कि
शाहराह से सीधे चले जाएँगे जब तक तेरी हद के बाहर न हो
जाएँ।"
23 लेकिन सीहोन ने इस्राईलियों को अपनी हद में से गुज़रने
न दिया; बल्कि सीहोन अपने सब लोगों को इकट्ठा करके
इस्राईलियों के मुक़ाबले के लिए वीरान में पहुँचा, और उसने यहज़
में आकर इस्राईलियों से जंग की।
24 और इस्राईल ने उसे तलवार की धार से मारा और उसके
मुल्क पर, अरनोन से लेकर यब्बोक़ तक जहाँ बनी 'अम्मोन
की सरहद है क़ब्ज़ा कर लिया; क्यूँकि बनी 'अम्मोन की सरहद
मज़बूत थी।
25 तब बनी — इस्राईल ने यहाँ के सब शहरों को ले लिया और
अमोरियों के सब शहरों में, या'नी हस्बोन और उसके आस पास
के कस्बों में बनी — इस्राईल बस गए।

26 हस्बोन अमोरियों के बादशाह सीहोन का शहर था, इसने
मोआब के अगले बादशाह से लड़कर उसके सारे मुल्क को,
अरनोन तक उससे छीन लिया था।
27 इसी वजह से मिसाल कहने वालों की यह कहावत है कि
"हस्बोन में आओ, ताकि सीहोन का शहर बनाया और मज़बूत
किया जाए।
28 क्यूँकि हस्बोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला
बरामद हुआ, इसने मोआब के 'आर शहर को और †अरनोन के
ऊँचे मक़ामात के ‡सरदारों को भसम कर दिया।
29 ऐ, मोआब! तुझ पर नोहा है। ऐ कमोस के मानने वालों!
तुम हलाक हुए, उसने अपने बेटों को जो भागे थे और अपनी
बेटियों को ग़ुलामों की तरह अमोरियों के बादशाह सीहोन के
हवाले किया।
30 हमने उन पर तीर चलाए, इसलिए §हस्बोन *दीबोन तक
तबाह हो गया, बल्कि हम ने नुफ़ा तक सब कुछ उजाड़ दिया।
वह नुफ़ा जो मीदबा से मुत्तसिल है।"
31 तब बनी — इस्राईल अमोरियों के मुल्क में रहने लगे।
32 और मूसा ने या'ज़ेर की जासूसी कराई; फिर उन्होंने उसके
गाँव ले लिए और अमोरियों को जो वहाँ थे निकाल दिया।
33 और वह घूम कर बसन के रास्ते से आगे को बढ़े और बसन
का बादशाह 'ओज अपने सारे लश्कर को लेकर निकला, ताकि
अदराई में उनसे जंग करे।
34 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "उससे मत डर, क्यूँकि मैंने
उसे और उसके सारे लश्कर को और उसके मुल्क को तेरे हवाले
कर दिया है। इसलिए जैसा तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन के
साथ जो हस्बोन में रहता था किया है, वैसा ही इसके साथ भी
करना।"

---

† **21:28** नफरत करता है ‡ **21:28** पहाड़ों § **21:30** हस्बोन सेदिबोन तक
हम उन्हें संगसार करते हैं कि वह मर जाए * **21:30** दीबोनक़स्बा

35 चुनाँचे उन्होंने उसको और उसके बेटों और सब लोगों को
यहाँ तक मारा कि उसका कोई बाक़ी न रहा, और उसके मुल्क को
अपने क़ब्ज़े में कर लिया।

22

□□□□□ □□ □□'□□ □□ □□□□□□

1 फिर बनी — इस्राईल रवाना हुए और दरिया — ए — यरदन
के पार मोआब के मैदानों में यरीहू के सामने ख़ेमे खड़े किए।
2 और जो कुछ बनी — इस्राईल ने अमोरियों के साथ किया
था वह सब बलक़ बिन सफ़ोर ने देखा था।
3 इसलिए मोआबियों को इन लोगों से बड़ा ख़ौफ़ आया, क्यूँकि
यह बहुत से थे; ग़र्ज़ मोआबी बनी — इस्राईल की वजह से
परेशान हुए।
4 तब मोआबियों ने मिदियानी बुज़ुर्गों से कहा, "जो कुछ हमारे
आस पास है उसे यह लश्कर ऐसा चट कर जाएगा जैसे बैल
मैदान की घास को चट कर जाता है।" उस वक़्त बलक़ बिन सफ़ोर
मोआबियों का बादशाह था।
5 इसलिए उस ने ब'ओर के बेटे बल'आम के पास फ़तोर को, जो
बड़े दरिया कि किनारे उसकी क़ौम के लोगों का मुल्क था, क़ासिद
रवाना किए कि उसे बुला लाएँ और यह कहला भेजा, "देख, एक
क़ौम मिस्र से निकलकर आई है, उनसे ज़मीन की सतह छिप गई
है; अब वह मेरे सामने ही आकर जम गए हैं।
6 इसलिए अब तू आकर मेरी ख़ातिर इन लोगों पर ला'नत कर,
क्यूँकि यह मुझ से बहुत क़वी हैं; फिर मुम्किन है कि मैं ग़ालिब
आऊँ, और हम सब इनको मार कर इस मुल्क से निकाल दें; क्यूँकि
यह मैं जानता हूँ कि जिसे तू बरकत देता है उसे बरकत मिलती
है, और जिस पर तू ला'नत करता है वह मला'ऊन होता है।"

7 तब मोआब के बुज़ुर्ग और मिदियान के बुज़ुर्ग फ़ाल खोलने
का इनाम साथ लेकर रवाना हुए और बल'आम के पास पहुँचे और
बलक़ का पैग़ाम उसे दिया।
8 उसने उनसे कहा, "आज रात यहीं ठहरो और जो कुछ
ख़ुदावन्द मुझ से कहेगा, उसके मुताबिक़ मैं तुम को जवाब दूँगा।"
चुनाँचे मोआब के हाकिम बल'आम के साथ ठहर गए।
9 और ख़ुदा ने बल'आम के पास आकर कहा, "तेरे यहाँ यह कौन
आदमी हैं?"
10 बल'आम ने ख़ुदा से कहा, "मोआब के बादशाह बलक़ बिन
सफ़ोर ने मेरे पास कहला भेजा है, कि
11 जो कौम मिस्र से निकल कर आई है उससे ज़मीन की सतह
छिप गई है, इसलिए तू अब आकर मेरी ख़ातिर उन पर ला'नत
कर, फिर मुम्किन है कि मैं उनसे लड़ सकूँ और उनको निकाल दूँ।"
12 ख़ुदा ने बल'आम से कहा, "तू इनके साथ मत जाना, तू उन
लोगों पर ला'नत न करना, इसलिए कि वह मुबारक हैं।"
13 बल'आम ने सुबह को उठ कर बलक़ के हाकिमों से कहा,
"तुम अपने मुल्क को लौट जाओ, क्यूँकि ख़ुदावन्द मुझे तुम्हारे
साथ जाने की इजाज़त नहीं देता।"
14 और मोआब के हाकिम चले गए और जाकर बलक़ से कहा,
"बल'आम हमारे साथ आने से इंकार करता है।"
15 तब दूसरी दफ़ा' बलक़ ने और हाकिमों को भेजा, जो पहलों
से बढ़ कर मु'अज़्ज़िज़ और शुमार में भी ज़्यादा थे।
16 उन्होंने बल'आम के पास जाकर उस से कहा, "बलक़ बिन
सफ़ोर ने यूँ कहा है, कि मेरे पास आने में तेरे लिए कोई रुकावट
न हो;
17 क्यूँकि मैं बहुत 'आला मन्सब पर तुझे मुम्ताज़ करूँगा, और
जो कुछ तू मुझ से कहे मैं वही करूँगा; इसलिए तू आ जा और
मेरी ख़ातिर इन लोगों पर ला'नत कर।"

18 बल'आम ने बलक़ के ख़ादिमों को जवाब दिया, “अगर बलक़
अपना घर भी चाँदी और सोने से भर कर मुझे दे, तो भी मैं
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्म से तजावुज़ नहीं कर सकता, कि
उसे घटाकर या बढ़ा कर मानूँ।
19 इसलिए अब तुम भी आज रात यहीं ठहरो, ताकि मैं देखूँ
कि ख़ुदावन्द मुझ से और क्या कहता है।”
20 और ख़ुदा ने रात को बल'आम के पास आ कर उससे कहा,
“अगर यह आदमी तुझे बुलाने को आए हुए हैं तो तू उठ कर उनके
साथ जा; मगर जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी पर 'अमल करना।”

बल'आम और उसकी गधी

21 तब बल'आम सुबह को उठा, और अपनी गधी पर ज़ीन रख
कर मोआब के हाकिमों के साथ चला।
22 और उसके जाने की वजह से ख़ुदा का ग़ज़ब भड़का, और
ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता उससे मुज़ाहमत करने के लिए रास्ता रोक
कर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गधी पर सवार था और उसके
साथ उसके दो मुलाज़िम थे।
23 और उस गधी ने ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा, कि वह
अपने हाथ में नंगी तलवार लिए हुए रास्ता रोके खड़ा है; तब
गधी रास्ता छोड़कर एक तरफ़ हो गई और खेत में चली गई। तब
बल'आम ने गधी को मारा ताकि उसे रास्ते पर ले आए।
24 तब ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता एक नीची राह में जा खड़ा हुआ,
जो ताकिस्तानों के बीच से होकर निकलती थी और उसकी दोनों
तरफ़ दीवारें थीं।
25 गधी ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते को देख कर दीवार से जा लगी
और बल'आम का पाँव दीवार से पिचा दिया, इसलिए उसने फिर
उसे मारा।
26 तब ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता आगे बढ़ कर एक ऐसे तंग मक़ाम
में खड़ा हो गया, जहाँ दहनी या बाई तरफ़ मुड़ने की जगह न थी।

27 फिर जो गधी ने ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा तो बल'आम
को लिए हुए बैठ गई; फिर तो बल'आम झल्ला उठा और उसने
गधी को अपनी लाठी से मारा।
28 तब ख़ुदावन्द ने गधी की ज़बान खोल दी और उसने
बल'आम से कहा, "मैंने तेरे साथ क्या किया है कि तूने मुझे तीन
बार मारा?"
29 बल'आम ने गधी से कहा, "इसलिए कि तूने मुझे चिढ़ाया;
काश मेरे हाथ में तलवार होती, तो मैं तुझे अभी मार डालता।"
30 गधी ने बल'आम से कहा, "क्या मैं तेरी वही गधी नहीं हूँ
जिस पर तू अपनी सारी उम्र आज तक सवार होता आया है? क्या
मैं तेरे साथ पहले कभी ऐसा करती थी?" उसने कहा, "नहीं।"
31 तब ख़ुदावन्द ने बल'आम की आँखें खोलीं, और उसने
ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा कि वह अपने हाथ में नंगी तलवार
लिए हुए रास्ता रोके खड़ा है, तब उसने अपना सिर झुका लिया
और औंधा हो गया।
32 ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने उसे कहा, "तू ने अपनी गधी को
तीन बार क्यूँ मारा? देख, मैं तुझ से मुज़ाहमत करने को आया हूँ,
इसलिए कि तेरी चाल मेरी नज़र में टेढ़ी है।
33 और गधी ने मुझ को देखा, और वह तीन बार मेरे सामने से
मुड़ गई। अगर वह मेरे सामने से न हटती तो मैं ज़रूर तुझ को
मार ही डालता, और उसको ज़िन्दा छोड़ देता।"
34 बल'आम ने ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते से कहा, "मुझ से ख़ता हुई,
क्यूँकि मुझे मा'लूम न था कि तू मेरा रास्ता रोके खड़ा है। इसलिए
अगर अब तुझे बुरा लगता है तो मैं लौट जाता हूँ।"
35 ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने बल'आम से कहा, "तू इन आदमियों
के साथ चला ही जा, लेकिन सिर्फ़ वही बात कहना जो मैं तुझ से
कहूँ।" तब बल'आम बलक़ के हाकिमों के साथ गया।
36 जब बलक़ ने सुना कि बल'आम आ रहा है, तो वह उसके

इस्तक़बाल के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो अरनोन
की सरहद पर उसकी हदों के इन्तिहाई हिस्से में वाक़े' था।
37 तब बलक़ ने बल'आम से कहा, "क्या मैंने बड़ी उम्मीद के
साथ तुझे नहीं बुलवा भेजा था? फिर तू मेरे पास क्यूँ न चला
आया? क्या मैं इस क़ाबिल नहीं कि तुझे 'आला मन्सब पर
मुम्ताज़ करूँ?"
38 बल'आम ने बलक़ को जवाब दिया, "देख, मैं तेरे पास आ तो
गया हूँ लेकिन क्या मेरी इतनी मजाल है कि मैं कुछ बोलूँ? जो
बात ख़ुदा मेरे मुँह में डालेगा, वही मैं कहूँगा।"
39 और बल'आम बलक़ के साथ — साथ चला और वह करयत
हुसात में पहुँचे।
40 बलक़ ने बैल और भेड़ों की क़ुर्बानी पेश कीं, और बल'आम
और उन हाकिमों के पास जो उसके साथ थे क़ुर्बानी का गोश्त
भेजा।
41 दूसरे दिन सुबह को बलक़ बल'आम को साथ लेकर उसे
*बा'ल के बुलन्द मक़ामों पर ले गया। वहाँ से उसने दूर दूर के
इस्राईलियों को देखा।

23

[illegible]

1 और बल'आम ने बलक़ से कहा, "मेरे लिए यहाँ सात मज़बहे
बनवा दे, और सात बछड़े और सात मेंढे मेरे लिए यहाँ तैयार कर
रख।"
2 बलक़ ने बल'आम के कहने के मुताबिक़ किया, और बलक़ और
बल'आम ने हर मज़बह पर एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया।
3 फिर बल'आम ने बलक़ से कहा, "तू अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी
के पास खड़ा रह, और मैं जाता हूँ, मुम्किन है कि ख़ुदावन्द मुझ से
मुलाक़ात करने को आए। इसलिए जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर

* **22:41** बामोथ बाल नाम की जगह, बाल के बुलन्द मक़ामों

करेगा, मैं तुझे बताऊँगा।" और वह एक बरहना पहाड़ी पर चला गया।

4 और ख़ुदा बल'आम से मिला; उसने उससे कहा "मैंने सात मज़बहे तैयार किए हैं और उन पर एक — एक बछड़ा और एक — एक मेंढा चढ़ाया है।"

5 तब ख़ुदावन्द ने एक बात बल'आम के मुँह में डाली और कहा कि "बलक़ के पास लौट जा, और यूँ कहना।"

6 तब वह उसके पास लौट कर आया और क्या देखता है, कि वह अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी के पास मोआब के सब हाकिमों के साथ खड़ा है।

7 तब उसने अपनी मिसाल शुरू' की, और कहने लगा, "बलक़ ने मुझे अराम से, या'नी शाह — ए — मोआब ने पश्चिम के पहाड़ों से बुलवाया, कि आ जा, और मेरी ख़ातिर या'क़ूब पर ला'नत कर, आ, इस्राईल को फटकार!

8 मैं उस पर ला'नत कैसे करूँ, जिस पर ख़ुदा ने ला'नत नहीं की? मैं उसे कैसे फटकारूँ, जिसे ख़ुदावन्द ने नहीं फटकारा

9 चट्टानों की चोटी पर से वह मुझे नज़र आते हैं, और पहाड़ों पर से मैं उनको देखता हूँ। देख, यह वह क़ौम है जो अकेली बसी रहेगी, और दूसरी क़ौमों के साथ मिल कर इसका शुमार न होगा।

10 या'क़ूब की गर्द के ज़र्रों को कौन गिन सकता है, और बनी इस्राईल की चौथाई को कौन शुमार कर सकता है? काश, मैं सादिक़ों की मौत मरूँ और मेरी 'आक़बत भी उन ही की तरह हो।"

11 तब बलक़ ने बल'आम से कहा, "ये तूने मुझ से क्या किया? मैंने तुझे बुलवाया ताकि तू मेरे दुश्मनों पर ला'नत करे, और तू ने उनको बरकत ही बरकत दी।"

12 उसने जवाब दिया और कहा क्या मैं उसी बात का ख़याल न करूँ, जो ख़ुदावन्द मेरे मुँह में डाले?'

□□'□□ □□□□□□ □□□□□□

13 फिर बलक़ ने उससे कहा, "अब मेरे साथ दूसरी जगह चल,
जहाँ से तू उनको देख भी सकेगा; वह सब के सब तो तुझे नहीं
दिखाई देंगे, लेकिन जो दूर दूर पड़े हैं उनको देख लेगा; फिर तू
वहाँ से मेरी ख़ातिर उन पर ला'नत करना।"
14 तब वह उसे पिसगा की चोटी पर, जहाँ ज़ोफ़ीम का मैदान
है ले गया; वहीं उसने सात मज़बहे बनाए और हर मज़बह पर एक
— एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया।
15 तब उसने बलक़ से कहा, "तू यहाँ अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी
के पास ठहरा रह, जब कि मैं उधर जाकर ख़ुदावन्द से मिल कर
आऊँ।"
16 और ख़ुदावन्द बल'आम से मिला, और उसने उसके मुँह
में एक बात डाली, और कहा, "बलक़ के पास लौट जा, और यूँ
कहना।"
17 और जब वह उसके पास लौटा तो क्या देखता है, कि वह
अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी कि पास मोआब के हाकिमों के साथ खड़ा
है। तब बलक़ ने उससे पूछा, "ख़ुदावन्द ने क्या कहा है?"
18 तब उसने अपनी मिसाल शुरू' की और कहने लगा, "उठ ऐ
बलक़, और सुन, ऐ सफ़ोर के बेटे! मेरी बातों पर कान लगा,
19 ख़ुदा इंसान नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमज़ाद है कि
अपना इरादा बदले। क्या, जो कुछ उसने कहा उसे न करे? या,
जो फ़रमाया है उसे पूरा न करे?
20 देख, मुझे तो बरकत देने का हुक्म मिला है; उसने बरकत दी
है, और मैं उसे पलट नहीं सकता।
21 वह या'क़ूब में बदी नहीं पाता, और न इस्राईल में कोई
ख़राबी देखता है। ख़ुदावन्द उसका ख़ुदा उसके साथ है, और
बादशाह के जैसी ललकार उन लोगों के बीच में है।
22 ख़ुदा उनको मिस्र से निकाल कर लिए आ रहा है, उनमें
जंगली साँड के जैसी ताक़त है।

23 या'क़ूब पर कोई जादू नहीं चलता, और न इस्राईल के
ख़िलाफ़ फ़ाल कोई चीज़ है; बल्कि या'क़ूब और इस्राईल के हक़
में अब यह कहा जाएगा, कि ख़ुदा ने कैसे कैसे काम किए।
24 देख, यह गिरोह शेरनी की तरह उठती है। और शेर की तरह
तन कर खड़ी होती है। वह अब नहीं लेटने को, जब तक शिकार
न खा ले। और मक़तूलों का ख़ून न पी ले।"
25 तब बलक़ ने बल'आम से कहा, "न तो तू उन पर ला'नत ही
कर और न उनको बरकत ही दे।"
26 बल'आम ने जवाब दिया, और बलक़ से कहा, "क्या मैंने तुझ
से नहीं कहा कि जो कुछ ख़ुदावन्द कहे, वही मुझे करना पड़ेगा?"

[illegible]

27 तब बलक़ ने बल'आम से कहा, "अच्छा आ, मैं तुझ को
एक और जगह ले जाऊँ; शायद ख़ुदा को पसन्द आए कि तू मेरी
ख़ातिर वहाँ से उन पर ला'नत करे।"
28 तब बलक़ बल'आम को फ़गूर की चोटी पर, जहाँ से
यशीमोन नज़र आता है ले गया।
29 और बल'आम ने बलक़ से कहा कि "मेरे लिए यहाँ सात
मज़बहे बनवा और सात बैल और सात ही मेंढे मेरे लिए तैयार
कर रख।"
30 चुनाँचे बलक़ ने, जैसा बल'आम ने कहा वैसा ही किया और
हर मज़बह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया।

24

1 जब बल'आम ने देखा कि ख़ुदावन्द को यही मन्ज़ूर है कि
इस्राईल को बरकत दे, तो वह पहले की तरह शगून देखने को
इधर उधर न गया, बल्कि वीरान की तरफ़ अपना मुँह कर लिया।
2 और बल'आम ने निगाह की, और देखा कि बनी — इस्राईल
अपने — अपने क़बीले की तरतीब से मुक़ीम हैं। और ख़ुदा की
रूह उस पर नाज़िल हुई।

3 और उसने अपनी मसल शुरू' की और कहने लगा, “ब'ओर
का बेटा बल'आम कहता है, या'नी वही शख़्स जिसकी आँखें बन्द
थीं यह कहता है,
4 बल्कि यह उसी का कहना है जो ख़ुदा की बातें सुनता है, और
सिज्दे में पड़ा हुआ खुली आँखों से क़ादिर — ए — मुतलक का
ख़्वाब देखता है।
5 ऐ या'क़ूब, तेरे डेरे, ऐ इस्राईल, तेरे ख़ेमें कैसे ख़ुशनुमा हैं!
6 वह ऐसे फैले हुए हैं, जैसे वादियाँ और दरिया कि किनारे बाग़,
और ख़ुदावन्द के लगाए हुए 'ऊद के दरख़्त और नदियों के किनारे
देवदार के दरख़्त।
7 उसके चरसों से पानी बहेगा, और सेराब खेतों में उसका बीज
पड़ेगा। उसका बादशाह अजाज से बढ़कर होगा, और उसकी
सल्तनत को 'उरूज हासिल होगा।
8 ख़ुदा उसे मिस्र से निकाल कर लिए आ रहा उसमें जंगली
सांड के जैसी ताक़त है, वह उन क़ौमों को जो उसकी दुश्मन हैं,
चट कर जाएगा, और उनकी हड्डियों को तोड़ डालेगा और उनको
अपने तीरों से छेद — छेद कर मारेगा।
9 वह दुबक कर बैठा है, वह शेर की तरह बल्कि शेरनी की तरह
लेट गया है, अब कौन उसे छेड़े? जो तुझे बरकत दे वह मुबारक,
और जो तुझ पर ला'नत करे वह मला'ऊन हो।”
10 तब बलक़ को बल'आम पर बड़ा ग़ुस्सा आया, और वह अपने
हाथ पीटने लगा। फिर उसने बल'आम से कहा, “मैंने तुझे बुलाया
कि तू मेरे दुश्मनों पर ला'नत करे, लेकिन तू ने तीनों बार उनको
बरकत ही बरकत दी।
11 इसलिए अब तू अपने मुल्क को भाग जा। मैंने तो सोचा था
कि तुझे 'आला मन्सब पर मुम्ताज़ करूँ, लेकिन ख़ुदावन्द ने तुझे
ऐसे ऐज़ाज़ से महरूम रख्खा।”
12 बल'आम ने बलक़ को जवाब दिया, “क्या मैंने तेरे उन

क़ासिदों से भी जिनको तूने मेरे पास भेजा था। यह नहीं कह दिया
था, कि
13 अगर बलक़ अपना घर चाँदी और सोने से भर कर मुझे दे
तोभी मैं अपनी मर्ज़ी से भला या बुरा करने की ख़ातिर ख़ुदावन्द
के हुक्म से तजावुज़ नहीं कर सकता, बल्कि जो कुछ ख़ुदावन्द
कहे मैं वही कहूँगा?
14 'और अब मैं अपनी क़ौम के पास लौट कर जाता हूँ, इसलिए
तू आ, मैं तुझे आगाह कर दूँ कि यह लोग तेरी क़ौम के साथ
आख़िरी दिनों में क्या क्या करेंगे।"

□□'□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□

15 चुनौंचे उसने अपनी मिसाल शुरू' की और कहने लगा,
"ब'ओर का बेटा बल'आम कहता है, या'नी वही शख़्स जिसकी
आँखें बन्द थी यह कहता है,
16 बल्कि यह उसी का कहना है जो *ख़ुदा की बातें सुनता है,
और हक़ता'ला का इरफ़ान रखता है, और सिज्दे में पड़ा हुआ
खुली आँखों से क़ादिर — ए — मुतलक का ख़्वाब देखता है;
17 मैं उसे देखूँगा तो सही, लेकिन अभी नहीं; वह मुझे नज़र
भी आएगा, लेकिन नज़दीक से नहीं; या'क़ूब में से एक सितारा
निकलेगा और इस्राईल में से एक 'असा उठेगा, और †मोआब के
'इलाक़े को मार मार कर साफ़ कर देगा, और सब ‡हंगामा करने
वालों को हलाक कर डालेगा।
18 और उसके दुश्मन अदोम और श'ईर दोनों उसके क़ब्ज़े में
होंगे, और इस्राईल दिलावरी करेगा।
19 और या'क़ूब ही की नसल से वह फ़रमाँरवाँ उठेगा, जो शहर
के बाक़ी मान्दा लोगों को हलाक कर डालेगा।"

* **24:16** ख़ुदा † **24:17** मोआब के लोगों की पेशानी ‡ **24:17** सेत की तमाम नस्लें, वह तमाम तशद्दुद भरे लोग जो सेत की तरफ़ हैं

20 फिर उसने 'अमालीक पर नज़र करके अपनी यह मसल शुरू'
की, और कहने लगा, “क़ौमोंमें पहली क़ौम 'अमालीक़ की थी,
लेकिन उसका अन्जाम हलाकत है।”
21 और कीनियों की तरफ़ निगाह करके यह मिसाल शुरू' की,
और कहने लगा “तेरा घर मज़बूत है और तेरा आशियाना भी
चट्टान पर बना हुआ है।
22 तोभी क़ीन ख़ाना ख़राब होगा, यहाँ तक कि असूर तुझे
ग़ुलाम करके ले जाएगा।”
23 और उसने यह मसल भी शुरू' की, और कहने लगा, हाय,
अफ़सोस! जब ख़ुदा यह करेगा तो कौन जीता बचेगा?
24 लेकिन कित्तीम के साहिल से जहाज़ आएँगे, और वह असूर
और इब्र दोनों को दुख देंगे। फिर वह भी हलाक हो जाएगा।”
25 इसके बाद बल'आम उठ कर रवाना हुआ और अपने मुल्क
को लौटा, और बलक़ ने भी अपनी राह ली।

25

[illegible]

1 और इस्राईली शित्तीम में रहते थे, और लोगों ने मोआबी
'औरतों के साथ हरामकारी शुरू' कर दी।
2 क्यूँकि वह 'औरतें इन लोगों को अपने मा'बूदों की क़ुर्बानियों
में आने की दावत देती थीं, और यह लोग जाकर खाते और उनके
मा'बूदों को सिज्दा करते थे।
3 यूँ इस्राईली बा'ल फ़ग़ूर की इबादत लगे। तब ख़ुदावन्द का
क़हर बनी इस्राईल पर भड़का,
4 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “क़ौम के सब सरदारों को
पकड़कर ख़ुदावन्द के *सामने धूप में टाँग दे, ताकि ख़ुदावन्द का
शदीद क़हर इस्राईल पर से टल जाए।”

* **25:4** हर एक के सामने, सूरज की रौशनी से पहले

5 तब मूसा ने बनी — इस्राईल के हाकिमों से कहा, “तुम्हारे जो
— जो आदमी बा'ल फ़गूर की इबादत करने लगे हैं उनको क़त्ल
कर डालो।”
6 और जब बनी — इस्राईल की जमा'अत ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ के दरवाज़े पर रो रही थी, तो एक इस्राईली मूसा
और तमाम लोगों की आँखों के सामने एक मिदियानी 'औरत को
अपने साथ अपने भाइयों के पास ले आया।
7 जब फ़ीन्हास बिन इली'एलियाज़र बिन हारून काहिन ने यह
देखा, तो उसने जमा'अत में से उठ हाथ में एक बर्छी ली,
8 और उस मर्द के पीछे जाकर ख़ेमे के अन्दर घुसा और उस
इस्राईली मर्द और उस 'औरत दोनों का पेट छेद दिया। तब बनी
— इस्राईल में से वबा जाती रही।
9 और जितने इस वबा से मरे उनका शुमार चौबीस हज़ार था।
10 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
11 “फ़ीन्हास बिन इली'एलियाज़र बिन हारून काहिन ने मेरे
क़हर को बनी — इस्राईल पर से हटाया क्यूँकि उनके बीच उसे
मेरे लिए ग़ैरत आई, इसीलिए मैंने बनी — इस्राईल को अपनी
ग़ैरत के जोश में हलाक नहीं किया।
12 इसलिए तू कह दे कि मैंने उससे अपना सुलह का 'अहद
बाँधा,
13 और वह उसके लिए और उसके बाद उसकी नसल के लिए
कहानत का 'दाइमी 'अहद होगा; क्यूँकि वह अपने ख़ुदा के लिए
ग़ैरतमन्द हुआ और उसने बनी — इस्राईल के लिए कफ़्फ़ारा
दिया।”
14 उस इस्राईली मर्द का नाम जो उस मिदियानी 'औरत के साथ
मारा गया ज़िमरी था, जो सलू का बेटा और शमौन के क़बीले के
एक आबाई ख़ान्दान का सरदार था।
15 और जो मिदियानी 'औरत मारी गई उसका नाम कज़बी था,
वह सूर की बेटी थी जो मिदियान में एक आबाई ख़ान्दान के लोगों

का सरदार था।
16 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,
17 "मिदियानियों को सताना और उनको मारना,
18 क्यूँकि वह तुम को अपने धोखे के दाम में फँसाकर सताते
हैं, जैसा फ़गूर के मु'आमिले में हुआ और कज़बी के मु'आमिले में
भी हुआ।" जो मिदियान के सरदार की बेटी और मिदियानियों की
बहन थी, और फ़गूर ही के मु'आमिले में वबा के दिन मारी गई।

26

[illegible]

1 और वबा के बाद ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून काहिन के बोटे
इली'एलियाज़र से कहा कि,
2 "बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत में बीस बरस और उससे
ऊपर — ऊपर की उम्र के जितने इस्राईली जंग करने के क़ाबिल
हैं, उन सभों को उनके आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ गिनो।"
3 चुनाँचे मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने मोआब के
मैदानों में जो यरदन के किनारे किनारे यरीहू के सामने हैं, उन
लोगों से कहा,
4 कि "बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के आदमियों
को वैसे ही गिन लो जैसे ख़ुदावन्द ने मूसा और बनी — इस्राईल
को, जब वह मुल्क — ए — मिस्र से निकल आए थे हुक्म किया
था।"

[illegible]

5 रूबिन जो इस्राईल का पहलौठा था उसके बेटे यह हैं, या'नी
हनूक, जिससे हनूकियों का ख़ान्दान चला; और फ़ल्लू, जिससे
फ़लवियों का ख़ान्दान चला;
6 और हसरोन, जिससे हसरोनियों का ख़ान्दान चला; और
करमी, जिससे करमियों का ख़ान्दान चला।

7 ये बनी रूबिन के ख़ान्दान हैं, और इनमें से जो गिने गए वह
तैन्तालीस हज़ार सात सौ तीस थे।
8 और फ़ल्लू का बेटा इलियाब था,
9 और इलियाब के बेटे नमूएल और दातन और अबीराम थे।
यह वही दातन और अबीराम हैं जो जमा'अत के चुने हुए थे, और
जब क़ोरह के फ़रीक़ ने ख़ुदावन्द से झगड़ा किया तो यह भी उस
फ़रीक़ के साथ मिल कर मूसा और हारून से झगड़े;
10 और जब उन ढाई सौ आदमियों के आग में भसम हो जाने से
वह फ़रीक़ हलाक हो गया, उसी मौक़े' पर ज़मीन ने मुँह खोल कर
क़ोरह के साथ उनको भी निगल लिया था; और वह सब 'इबरत
का निशान ठहरे।
11 लेकिन क़ोरह के बेटे नहीं मरे थे।

[illegible]

12 और शमौन के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं,
या'नी नमूएल, जिससे नमूएलियों का ख़ान्दान चला; और
यमीन, जिससे यमीनियों का ख़ान्दान चला; और यकीन, जिससे
यकीनियों का ख़ान्दान चला;
13 और ज़ारह, जिससे ज़ारहियों का ख़ान्दान चला; और
साऊल, जिससे साऊलियों का ख़ान्दान चला।
14 तब बनी शमौन के ख़ान्दानों में से बाईस हज़ार दो सौ
आदमी गिने गए।

[illegible]

15 और जद्द के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं, या'नी
सफ़ोन, जिससे सफ़ोनियों का ख़ान्दान चला; और हज्जी, जिससे
हज्जियों का ख़ान्दान चला; और सूनी, जिससे सूनियों का
ख़ान्दान चला;
16 और उज़नी जिससे उज़नियों का ख़ान्दान चला; और 'एरी,
जिससे 'एरियों का ख़ान्दान चला;

17 और अरूद, जिससे अरूदियों का ख़ान्दान चला; और अरेली, जिससे अरेलियों का ख़ान्दान चला।
18 बनी जद्द के यही घराने हैं, जो इनमें से गिने गए वह चालीस हज़ार पाँच सौ थे।

[illegible]

19 यहूदाह के बेटों में से 'एर और ओनान तो मुल्क — ए — कना'न ही में मर गए।
20 और यहूदाह के और बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं, या'नी सीला, जिससे सीलानियों का ख़ान्दान चला; और फ़ारस, जिससे फ़ारसियों का ख़ान्दान चला; और ज़ारह, जिससे ज़ारहियों का ख़ान्दान चला।
21 फ़ारस के बेटे यह हैं, या'नी हसरोन, जिससे हसरोनियों का ख़ान्दान चला; और हमूल, जिससे हमूलियों का ख़ान्दान चला।
22 ये बनी यहूदाह के घराने हैं। इनमें से छिहत्तर हज़ार पाँच सौ आदमी गिने गए।

[illegible]

23 और इश्कार के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं, या'नी तोला', जिससे तोल'इयों का ख़ान्दान चला; और फ़ुव्वा, जिससे फ़ुवियों का ख़ान्दान चला:
24 यसूब, जिससे यसूबियों का ख़ान्दान चला; सिमरोन, जिससे सिमरोनियों का ख़ान्दान चला।
25 यह बनी इश्कार के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह चौंसठ हज़ार तीन सौ थे।

[illegible]

26 और ज़बूलून के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं, या'नी सरद, जिससे सरदियों का ख़ान्दान चला; एलोन, जिससे एलोनियों का ख़ान्दान चला; यहलीएल, जिससे यहलीएलियों का ख़ान्दान चला।

27 यह बनी ज़बूलून के घराने हैं। इनमें से साठ हज़ार पाँच सौ आदमी गिने गए।

[illegible]

28 और यूसुफ़ के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं, या'नी मनस्सी और इफ़्राईम।
29 और मनस्सी का बेटा मकीर था, जिससे मकीरियों का ख़ान्दान चला; और मकीर से जिल'आद पैदा हुआ, जिससे जिल'आदियों का ख़ान्दान चला।
30 और जिल'आद के बेटे यह हैं, या'नी ई'एलियाज़र, जिससे ई'अज़रियों का ख़ान्दान चला; और ख़लक़, जिससे ख़लक़ियों का ख़ान्दान चला;
31 और असरीएल, जिससे असरिएलियों का ख़ान्दान चला; और सिकम, जिससे सिकमियों का ख़ान्दान चला;
32 और समीदा', जिससे समीदा'इयों का ख़ान्दान चला; और हिफ़्र, जिससे हिफ़्रियों का ख़ान्दान चला।
33 और हिफ़्र के बेटे सिलाफ़िहाद के यहाँ कोई बेटा नहीं बल्कि बेटियाँ ही हुई, और सिलाफ़िहाद की बेटियों के नाम यह हैं: महलाह, और नू'आह, और हुजलाह, और मिल्काह, और तिरज़ाह।
34 यह बनी मनस्सी के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह बावन हज़ार सात सौ थे।

[illegible]

35 और इफ़्राईम के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं, या'नी सुतलह, जिससे सुतलहियों का ख़ान्दान चला; और बकर, जिससे बकरियों का ख़ान्दान चला; और तहन जिससे तहनियों का ख़ान्दान चला।
36 और सुतलह का बेटा 'ईरान था, जिससे 'ईरानियों का ख़ान्दान चला।
37 यह बनी इफ़्राईम के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह बत्तीस हज़ार पाँच सौ थे। यूसुफ़ के बेटों के ख़ान्दान यही हैं।

[illegible]

38 और बिनयमीन के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं,
या'नी बला', जिससे बला'इयों का ख़ान्दान चला; और अशबील,
जिससे अशबीलियों का ख़ान्दान चला; और अख़ीराम, जिससे
अख़ीरामियों का ख़ान्दान चला;
39 और सूफ़ाम, जिससे सूफ़ामियों का ख़ान्दान चला; और
हूफ़ाम, जिससे हूफ़ामियों का ख़ान्दान चला।
40 बाला' के दो बेटे थे एक अर्द, जिससे अर्दियों का ख़ान्दान
चला; दूसरा ना'मान, जिससे ना'मानियों का ख़ानदान चला।
41 यह बनी बिनयमीन के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह
पैंतालस हजार छ: सौ थे।

[illegible]

42 और दान का बेटा जिससे उसका ख़ान्दान चला सुहाम था,
उससे सूहामियों ख़ान्दान चला। दानियों का ख़ान्दान यही था।
43 सूहामियों के ख़ान्दान के जो आदमी गिने गए वह चौंसठ
हज़ार चार सौ थे।

[illegible]

44 और आशर के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं, या'नी
यिमना, जिससे यिमनियों का ख़ान्दान चला; और इसवी, जिससे
इसवियों का ख़ान्दान चला; और बरी'अह, जिससे बरी'अहियों
का ख़ान्दान चला।
45 बनी बरी'आह यह हैं, या'नी हिब्र, जिससे हिब्रियों का
ख़ान्दान चला; और मलकीएल, जिससे मलकीएलियों का
ख़ान्दान चला।
46 और आशर की बेटी का नाम सारा था।
47 यह बनी आशर के घराने हैं, और जो इनमें से गिने गए वह
तिरपन हज़ार चार सौ थे।

[illegible]

48 और नफ़्ताली के बेटे जिनसे उनके ख़ान्दान चले यह हैं,
या'नी यहसीएल, जिससे यहसीएलियों का ख़ान्दान चला; और
जूनी, जिससे जूनियों का ख़ान्दान चला;
49 और यिस्त्र, जिससे यिस्त्रियों का ख़ान्दान चला; और सलीम,
जिससे सलीमियों का ख़ान्दान चला।
50 यह बनी नफ़्ताली के घराने हैं, और जितने इनमें से गिने
गए वह पैंतालीस हज़ार चार सौ थे।

[illegible]

51 फिर बनी — इस्राईल में से जितने गिने गए वह सब मिला
कर छः लाख एक हज़ार सात सौ तीस थे।
52 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
53 "इन ही को, इनके नामों के शुमार के मुवाफ़िक़ वह ज़मीन
मीरास के तौर पर बाँट दी जाए।
54 जिस क़बीले में ज़्यादा आदमी हों उसे ज़्यादा हिस्सा मिले,
और जिसमें कम हों उसे कम हिस्सा मिले। हर क़बीले की मीरास
उसके गिने हुए आदमियों के शुमार पर ख़त्म हो।
55 लेकिन ज़मीन पर्ची से तक़्सीम की जाए। वह अपने आबाई
क़बीलों के नामों के मुताबिक़ मीरास पाएँ।
56 और चाहे ज़्यादा आदमियों का क़बीला हो या थोड़ों का,
पर्चीसे उनकी मीरास तक़्सीम की जाए।"

[illegible]

57 और जो लावियों में से अपने — अपने ख़ान्दान के मुताबिक़
गिने गए वह यह हैं, या'नी जैरसोन से जैरसोनियों का घराना,
क़िहात से क़िहातियों का घराना, मिरारी से मिरारियों का घराना।
58 और यह भी लावियों के घराने हैं, या'नी लिबनी का घराना,
हबरून का घराना, महली का घराना, और मूशी का घराना, और
कोरह का घराना। और क क़िहात से अमराम पैदा हुआ।

59 और अमराम की बीवी का नाम यूकबिद था, जो लावी की
बेटी थी और मिस्र में लावी के यहाँ पैदा हुई; इसी के हारून और
मूसा और उनकी बहन मरियम अमराम से पैदा हुए।
60 और हारून के बेटे यह थे: नदब और अबीहू और
इली'एलियाज़र और ऐतामर।
61 और नदब और अबीहू तो उसी वक़्त मर गए जब उन्होंने
ख़ुदावन्द के सामने ऊपरी आग पेश की थी।
62 फिर उनमें से जितने एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के
नरीना फ़र्ज़न्द गिने गए वह तेईस हज़ार थे। यह बनी — इस्राईल
के साथ नहीं गिने गए क्यूँकि इनको बनी — इस्राईल के साथ
मीरास नहीं मिली।
63 तब मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने जिन बनी —
इस्राईल को मोआब के मैदानों में जो यरदन के किनारे किनारे
यरीहू के सामने हैं शुमार किया वह यही हैं।
64 लेकिन जिन इस्राईलियों को मूसा और हारून काहिन ने
सीना के जंगल में गिना था, उनमें से एक शख़्स भी इनमें न था।
65 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने उनके हक़ में कह दिया था कि वह
यक़ीनन वीरान में मर जाएँगे, चुनाँचे उनमें से अलावा युफ़न्ना
के बेटे कालिब और नून के बेटे यशू'अ के एक भी बाक़ी नहीं बचा
था।

27

[illegible]

1 तब यूसुफ़ के बेटे मनस्सी की औलाद के घरानों में से
सिलाफ़िहाद बिन हिफ़्र बिन जिल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी
की बेटियाँ, जिनके नाम महलाह और नो'आह और हुजलाह और
मिलकाह और तिरज़ाह हैं, पास आकर

2 ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर मूसा और
इली'एलियाज़र काहिन और अमीरों और सब जमा'अत के सामने
खड़ी हुई और कहने लगीं कि;
3 "हमारा बाप वीरान में मरा, लेकिन वह उन लोगों में शामिल
न था जिन्होंने क़ोरह के फ़रीक से मिल कर ख़ुदावन्द के ख़िलाफ़
सिर उठाया था; बल्कि वह अपने गुनाह में मरा और उसके कोई
बेटा न था।
4 इसलिए बेटा न होने की वजह से हमारे बाप का नाम उसके
घराने से क्यूँ मिटने पाए? इसलिए हम को भी हमारे बाप के
भाइयों के साथ हिस्सा दो।"
5 मूसा उनके मु'आमिले को ख़ुदावन्द के सामने ले गया।
6 ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
7 "सिलाफ़िहाद की बेटियाँ ठीक कहती हैं; तू उनको उनके बाप
के भाइयों के साथ ज़रूर ही मीरास का हिस्सा देना, या'नी उनको
उनके बाप की मीरास मिले।
8 और बनी — इस्राईल से कह, कि अगर कोई शख़्स मर जाए
और उसका कोई बेटा न हो, तो उस की मीरास उसकी बेटी को
देना।
9 अगर उसकी कोई बेटी भी न हो, तो उसके भाइयों को उसकी
मीरास देना।
10 अगर उसके भाई भी न हों, तो तुम उसकी मीरास उसके बाप
के भाइयों को देना।
11 अगर उसके बाप का भी कोई भाई न हो, तो जो शख़्स उसके
घराने में उसका सब से क़रीबी रिश्तेदार हो उसे उसकी मीरास
देना; वह उसका वारिस होगा। और यह हुक्म बनी — इस्राईल के
लिए, जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया वाजिबी फ़र्ज़ होगा।"

[redacted]

12 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “तू 'अबारीम के इस पहाड़
पर चढ़कर उस मुल्क को, जो मैंने बनी — इस्राईल को 'इनायत
किया है देख ले।
13 और जब तू उसे देख लेगा, तो तू भी अपने लोगों में अपने
भाई हारून की तरह जा मिलेगा।
14 क्यूँकि सीन के जंगल में जब जमा'अत ने मुझ से झगड़ा
किया, तो बरअक्स इसके कि वहाँ पानी के चश्मे पर तुम दोनों
उनकी आँखों के सामने मेरी तक़दीस करते, तुम ने मेरे हुक्म से
सरकशी की।” यह वही मरीबा का चश्मा है जो दश्त — ए —
सीन के क़ादिस में है।
15 मूसा ने ख़ुदावन्द से कहा कि;
16 “ख़ुदावन्द सारे बशर की रूहों का ख़ुदा, किसी आदमी को
इस जमा'अत पर मुक़र्रर करे;
17 जिसकी आमद — ओ — रफ़्त उनके सामने हो और वह
उनको बाहर ले जाने और अन्दर ले आने में उनका रहबर हो, ताकि
ख़ुदावन्द की जमा'अत उन भेड़ों की तरह न रहे जिनका कोई
चरवाहा नहीं।”
18 ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “तू नून के बेटे यशू'अ को लेकर
उस पर अपना हाथ रख, क्यूँकि उस शख़्स में रूह है;
19 और उसे इली'एलियाज़र काहिन और सारी जमा'अत के
आगे खड़ा करके उनकी आँखों के सामने उसे वसीयत कर।
20 और अपने रोबदाब से उसे बहरावर कर दे, ताकि बनी —
इस्राईल की सारी जमा'अत उसकी फ़रमाबरदारी करे।
21 वह इली'एलियाज़र' काहिन के आगे खड़ा हुआ करे, जो
उसकी जानिब से ख़ुदावन्द के सामने *ऊरीम का हुक्म दरियाफ़्त

* **27:21** उरीम और तुमीम यह दोनों परस्तिश की चीजें हैं, (मुमकिन तोर से पत्थर
या लकड़ी की तराशी हुई चीज़जैसे पासा या ठप्पा) जिस से सरदारकाहिन, हाँ यया
नहीं का जवाब उस वक़्त हासिल करता थाजिस वक़्त उसे खुदा की मर्ज़ी जानने की
ज़रुरत महसूस होती थी — यह मुक़द्दस कुरे' थे जिन्हें सरदार काहिन अपने चमड़े की
थैली में हमेशा रखता था

किया करेगा। उसी के कहने से वह और बनी — इस्राईल की सारी
जमा'अत के लोग निकला करें, और उसी के कहने से लौटा भी
करें।”
22 इसलिए मूसा ने ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ 'अमल
किया, और उसने यशू'अ को लेकर उसे इली'एलियाज़र काहिन
और सारी जमा'अत के सामने खड़ा किया;
23 और उसने अपने हाथ उस पर रक्खे, और जैसा ख़ुदावन्द ने
उसको हुक्म दिया था उसे वसीयत की।

28

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;
2 “बनी — इस्राईल से कह कि मेरा हदिया, या'नी मेरी वह
गिज़ा जो राहतअंगेज़ ख़ुशबू की आतिशीन क़ुर्बानी है, तुम याद
करके मेरे सामने वक़्त — ए — मु'अय्यन पर पेश करा करना।
3 तू उन से कह दे कि जो आतिशी क़ुर्बानी तुम को ख़ुदावन्द के
सामने पेश करना है वह यह है: कि दो बे — 'ऐब यक — साला
नर बर्रे हर दिन दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए 'अदा करो।
4 एक बर्रा सुबह और दूसरा बर्रा शाम को चढ़ाना;
5 और साथ ही ऐफ़ा के [*]दसवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें
कूट कर निकाला हुआ तेल [†]चौथाई हीन के बराबर मिला हो, नज़्र
की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना।
6 यह वही दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी है जो कोह-ए-सीना पर
मुक़र्रर की गई, ताकि ख़ुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू की
आतिशी क़ुर्बानी ठहरे।

---

* **28:5** एक किलोग्राम † **28:5** एक चौथाई हीनबराबर है एक लीटर के

7 और हीन की चौथाई के बराबर मय हर एक बर्रा तपावन के लिए लाना। हैकल ही में ख़ुदावन्द के सामने मय का यह तपावन चढ़ाना।

8 और दूसरे बर्रे को शाम के वक़्त चढ़ाना, और उसके साथ भी सुबह की तरह वैसी ही नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन हो, ताकि यह ख़ुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू की आतिशी क़ुर्बानी ठहरे।

[illegible]

9 'और सबत के दिन दो बे — 'ऐब यकसाला नर बर्रे और नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा के पाँचवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, तपावन के साथ पेश करना।

10 दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसके तपावन के 'अलावा यह हर सब्त की सोख़्तनी क़ुर्बानी है।

[illegible]

11 “और अपने महीनों के शुरू' में हर माह दो। बछड़े और एक मेंढा और सात बे'ऐब यक — साला नर बर्रे सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर ख़ुदावन्द के सामने चढ़ाया करना।

12 और ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, हर बछड़े के साथ; और ऐफ़ा के पाँचवे हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, हर मेंढे के साथ: और ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो,

13 हर बर्रे के साथ नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर लाना। ताकि यह राहतअंगेज़ ख़ुशबू की सोख़्तनी क़ुर्बानी, या'नी ख़ुदावन्द के सामने आतिशीन क़ुर्बानी ठहरे।

14 और इन के साथ तपावन के लिए मय हर एक बछड़ा आधे हीन के बराबर, और हर एक मेंढा तिहाई हीन के बराबर, और हर एक बर्रा चौथाई हीन के बराबर हो। यह साल भर के हर महीने की सोख़्तनी क़ुर्बानी है।

15 और उस दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसके तपावन के 'अलावा एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के तौर पर ख़ुदावन्द के सामने पेश करा जाए।

[illegible]

16 और पहले महीने की चौदहवीं तारीख़ को ख़ुदावन्द की फ़सह हुआ करे।

17 और उसी महीने की पंद्रहवीं तारीख़ को 'ईद हो, और सात दिन तक बेख़मीरी रोटी खाई जाए।

18 पहले दिन लोगों का पाक मजमा' हो, तुम उस दिन कोई ख़ादिमाना काम न करना।

19 बल्कि तुम आतिशी क़ुर्बानी, या'नी ख़ुदावन्द के सामने सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर दो बछड़े और एक मेंढा और सात यक — साला नर बर्रे चढ़ाना। यह सब के सब बे — 'ऐब हों।

20 और उनके साथ नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; हर एक बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर एक मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर।

21 और सातों बर्रों में से हर बर्रा पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर पेश करा करना।

22 और ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा हो, ताकि उससे तुम्हारे लिए कफ़्फ़ारा दिया जाए।

23 तुम सुबह की सोख़्तनी क़ुर्बानी के 'अलावा, जो दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी है, इनको भी पेश करना।

24 इसी तरह तुम हर दिन सात दिन तक आतिशी क़ुर्बानी की यह ग़िज़ा चढ़ाना, ताकि वह ख़ुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू ठहरे; दिन — मर्रा की दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी और तपावन के 'अलावा यह भी पेश करा जाए।

25 और सातवें ‡दिन फिर तुम्हारा पाक मज़मा हो उसमें कोई
ख़ादिमाना काम न करना।

□□-□-□□□□□□ □□ □□□□□□

26 'और पहले फलों के दिन, जब तुम नई नज़्र की क़ुर्बानी
हफ़्तों की 'ईद में ख़ुदावन्द के सामने पेश करो, तब भी तुम्हारा
पाक मजमा' हो; उस दिन कोई ख़ादिमाना काम न करना।
27 बल्कि तुम सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर दो बछड़े, एक मेंढा
और सात यक — साला नर बर्रे पेश करना; ताकि यह ख़ुदावन्द
के सामने राहत अंगेज़ ख़ुशबू हो,
28 और इनके साथ नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ
मैदा; हर बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर
मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर,
29 और सातों बर्रों में से हर बर्रे पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के
बराबर हो।
30 और एक बकरा हो ताकि तुम्हारे लिए कफ़्फ़ारा दिया जाए।
31 दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी के
'अलावा तुम इनको भी पेश करना। यह सब बे — 'ऐब हों और
इनके तपावन साथ हों।

29

□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□

1 और सातवें महीने की पहली तारीख़ को तुम्हारा पाक मजमा'
हो, उसमें कोई ख़ादिमाना काम न करना। यह तुम्हारे लिए
नरसिंगे फूँकने का दिन है। *
2 तुम सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर एक बछड़ा, एक मेंढा और
सात बे — 'ऐब यक — साला नर बर्रे चढ़ाना ताकि यह ख़ुदावन्द
के सामने राहत अंगेज़ ख़ुशबू ठहरे।

---

‡ **28:25** ईद का दिन * **29:1** इब्री कैलेंडर का सातवां महिना सितम्बर और अक्टूबर के बीच पड़ता है, यह इब्री साल का मुक़द्दस महिना हुआ करता था —

3 और इनके साथ नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ
मैदा; बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा
पाँचवें हिस्से के बराबर,
4 और सातों बर्रों में से हर बर्रे पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के
बराबर हो।
5 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो, ताकि तुम्हारे
वास्ते कफ़्फ़ारा दिया जाए।
6 नये चाँद की सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी,
और दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी
और उनके तपावनों के 'अलावा, जो अपने — अपने क़ानून के
मुताबिक़ पेश करे जाएँगे, यह भी राहतअंगेज़ ख़ुशबू की आतिशी
क़ुर्बानी के तौर पर ख़ुदावन्द के सामने अदा किये जाए।

[illegible]

7 'फिर उसी सातवें महीने की दसवीं तारीख़ को तुम्हारा पाक
मजमा' हो; तुम अपनी अपनी जान को †दुख देना और किसी तरह
का काम न करना,
8 बल्कि सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर एक बछड़ा, एक मेंढा और
सात यक — साला नर बर्रे ख़ुदावन्द के सामने चढ़ाना, ताकि यह
राहतअंगेज़ ख़ुशबू ठहरे; यह सब के सब बे — 'ऐब हों,
9 और इनके साथ नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ
मैदा; हर बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर
मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर,
10 और सातों बर्रों में से हर बर्रे पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के
बराबर हो,
11 और ख़ता की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा हो; यह भी उस
ख़ता की क़ुर्बानी के 'अलावा, जो कफ़्फ़ारे के लिए है और दाइमी
सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी, और तपावनों के
'अलावा अदा किये जाएँ।

† **29:7** रोज़ा रखना

[illegible]

12 और सातवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख़ को फिर तुम्हारा पाक मजमा' हो; उस दिन तुम कोई ख़ादिमाना काम न करना, और सात दिन तक ख़ुदावन्द की ख़ातिर 'ईद मनाना।

13 और तुम सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर तेरह बछड़े, दो मेंढे, और चौदह यक — साला नर बर्रे चढ़ाना ताकि यह राहत अंगेज़ ख़ुशबू ख़ुदावन्द के लिए आतिशीन क़ुर्बानी ठहरे; यह सब के सब बे — 'ऐब हों।

14 और इनके साथ नज़्र की क़ुर्बानी के तौर पर तेरह बछड़ों में से हर बछड़े पीछे तेल मिला हुआ मैदा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और दोनों मेंढों में से हर मेंढे पीछे पाँचवें हिस्से के बराबर,

15 और चौदह बर्रों में से हर बर्रे पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो।

16 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ।

17 "और दूसरे दिन बारह बछड़े, दो मेंढे और चौदह बे — 'ऐब यक — साला नर बर्रे चढ़ाना।

18 और बछड़ों और मेंढों और बर्रों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन हों,

19 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावनों के 'अलावा चढ़ाए जाएँ।

20 'और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बर्रे हों।

21 और बछड़ों और मेंढों और बर्रों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन हों,

22 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी

सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन के
अलावा चढ़ाए जाएँ।
23 'और चौथे दिन दस बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला
बे — 'ऐब नर बर्रे हों।
24 और बछड़ों और मेंढों और बर्रों के साथ, उनके शुमार और
तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन हों,
25 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी
सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन के
'अलावा चढ़ाए जाए।
26 "और पाँचवे दिन नौ बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला
बे — 'ऐब नर बर्रे हों।
27 और बछड़ों और मेंढों और बर्रों के साथ, उनके शुमार और
क़ानून के मुताबिक़ उनकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन हों,
28 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी
सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन के
'अलावा चढ़ाए जाए।
29 'और छठे दिन आठ बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला
बे — 'ऐब नर बर्रे हों।
30 और बछड़ों और मेंढों और बर्रों के साथ, उनके शुमार और
क़ानून के मुताबिक़ उनकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन हों;
31 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी
सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन के
'अलावा अदा की जाए।
32 "और सातवें दिन सात बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक —
साला बे — 'ऐब नर बर्रे हों।
33 और बछड़ों और मेंढों और बर्रों के साथ, उनके शुमार और
तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन हों,
34 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी
सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन के

अलावा अदा की जाएँ
35 "और आठवें दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो; तुम उस दिन
कोई ख़ादिमाना काम न करना,
36 बल्कि तुम एक बछड़ा, एक मेंढा, और सात यक — साला
बे — 'ऐब नर बर्रे सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाना ताकि वह
ख़ुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू की आतिशी क़ुर्बानी ठहरे।
37 और बछड़े और मेंढे और बर्रों के साथ, उनके शुमार और तौर
तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन हों,
38 और एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी
सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी नज़्र की क़ुर्बानी और तपावन के
'अलावा चढ़ाए जाएँ।
39 "तुम अपनी मुक़र्ररा 'ईदों में अपनी मिन्नतों और रज़ा की
क़ुर्बानियों के 'अलावा यहीं सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ और नज़्र की
क़ुर्बानियाँ और तपावन और सलामती की क़ुर्बानियाँ ख़ुदावन्द
को पेश करना।"
40 और जो कुछ ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया, वह सब मूसा
ने बनी इस्राईल को बता दिया।

30

[illegible]

1 और मूसा ने बनी — इस्राईल के क़बीलों के सरदारों से कहा,
"जिस बात का ख़ुदावन्द ने हुक्म दिया है वह यह है, कि
2 जब कोई मर्द ख़ुदावन्द की मिन्नत माने या क़सम खाकर अपने
ऊपर कोई ख़ास फ़र्ज़ ठहराए, तो वह अपने 'अहद को न तोड़े;
बल्कि जो कुछ उसके मुँह से निकला है उसे पूरा करे।
3 और अगर कोई 'औरत ख़ुदावन्द की मिन्नत माने और अपनी
नौ जवानी के दिनों में अपने बाप के घर होते हुए अपने ऊपर कोई
फ़र्ज़ ठहराए।

4 और उसका बाप उसकी मिन्नत और उसके फ़र्ज़ का हाल जो
उसने अपने ऊपर ठहराया है सुनकर चुप हो रहे, तो वह सब
मिन्नतें और सब फ़र्ज़ जो उस 'औरत ने अपने ऊपर ठहराए हैं
क़ाईम रहेंगे।
5 लेकिन अगर उसका बाप जिस दिन यह सुने उसी दिन उसे
मना' करे, तो उसकी कोई मिन्नत या कोई फ़र्ज़ जो उसने अपने
ऊपर ठहराया है, क़ाईम नहीं रहेगा; और ख़ुदावन्द उस 'औरत
को मा'ज़ूर रख्खेगा क्यूँकि उसके बाप ने उसे इजाज़त नहीं दी।
6 और अगर किसी आदमी से उसकी निस्बत हो जाए, हालाँके
उसकी मिन्नतें या मुँह की निकली हुई बात जो उसने अपने ऊपर
फ़र्ज़ ठहराई है, अब तक पूरी न हुई हो;
7 और उसका आदमी यह हाल सुनकर उस दिन उससे कुछ न
कहे तो उसकी मनतें क़ाईम रहेंगी, और जो बातें उसने अपने ऊपर
फ़र्ज़ ठहराई हैं वह भी क़ाईम रहेंगी।
8 लेकिन अगर उसका आदमी जिस दिन यह सब सुने, उसी दिन
उसे मना' करे तो उसने जैसे उस 'औरत की मिन्नत को और उसके
मुँह की निकली हुई बात को जो उसने अपने ऊपर फ़र्ज़ ठहराई
थी तोड़ दिया; और ख़ुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़ूर रख्खेगा।
9 लेकिन बेवा और तलाकशुदा कीं मिन्नतें और फ़र्ज़ ठहरायी
हुई बातें क़ाईम रहेंगी।
10 और अगर उसने अपने शौहर के घर होते हुए कुछ मिन्नत
मानी या क़सम खाकर अपने ऊपर कोई फ़र्ज़ ठहराया हो,
11 और उसका शौहर यह हाल सुन कर ख़ामोश रहा हो और
उसे मना' न किया हो, तो उसकी मिन्नतें और सब फ़र्ज़ जो उसने
अपने ऊपर ठहराए क़ाईम रहेंगे।
12 लेकिन अगर उसके शौहर ने जिस दिन यह सब सुना उसी
दिन उसे बातिल ठहराया हो, तो जो कुछ उस 'औरत के मुँह से
उसकी मिन्नतों और ठहराए हुए फ़र्ज़ के बारे में निकला है, वह

क़ाईम नहीं रहेगा; उसके शौहर ने उनको तोड़ डाला है, और
ख़ुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़ूर रक्खेगा।
13 उसकी हर मिन्नत को और अपनी जान को दुख देने की हर
क़सम को उसका शौहर चाहे तो क़ाईम रक्खे, या अगर चाहे तो
बातिल ठहराए।
14 लेकिन अगर उसका शौहर दिन — ब — दिन ख़ामोश ही
रहे, तो वह जैसे उसकी सब मिन्नतों और ठहराए हुए फ़र्ज़ों को
क़ाईम कर देता है; उसने उनको क़ाईम यूँ किया कि जिस दिन से
सब सुना वह ख़ामोश ही रहा।
15 लेकिन अगर वह उनको सुन कर बाद में उनको बातिल
ठहराए तो वह उस 'औरत का गुनाह उठाएगा।"
16 शौहर और बीवी के बीच और बाप बेटी के बीच, जब बेटी
नौ — जवानी के दिनों में बाप के घर हो, इन ही तौर तरीक़े का
हुक्म ख़ुदावन्द ने मूसा को दिया।

31

??????????? ?? ???

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
2 "मिदियानियों से बनी — इस्राईल का इन्तक़ाम ले; इसके
बाद तू अपने लोगों में जा मिलेगा।"
3 तब मूसा ने लोगों से कहा, "अपने में से जंग के लिए
आदमियों को हथियारबन्द करो, ताकि वह मिदियानियों पर
हमला करें और मिदियानियों से ख़ुदावन्द का इन्तक़ाम लें।
4 और इस्राईल के सब क़बीलों में से हर क़बीला एक हज़ार
आदमी लेकर जंग के लिए भेजना।"
5 फिर हज़ारों हज़ार बनी — इस्राईल में से हर क़बीला एक
हज़ार के हिसाब से बारह हज़ार हथियारबन्द आदमी जंग के लिए
चुने गए।

6 यूँ मूसा ने हर क़बीले से एक हज़ार आदमियों को जंग के
लिए भेजा और इली'एलियाज़र काहिन के बेटे फ़ीन्हास को भी
जंग पर रवाना किया, और हैकल के बर्तन और बलन्द आवाज़ के
नरसिंगे उसके साथ कर दिए।
7 और जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था, उसके
मुताबिक़ उन्होंने मिदियानियों से जंग की और सब मर्दों को क़त्ल
किया।
8 और उन्होंने उन मक्तूलों के अलावा ईव्वी और रक़म और
सूर और होर और रबा' को भी, जो मिदियान के पाँच बादशाह थे,
जान से मारा और ब'ओर के बेटे बल'आम को भी तलवार से क़त्ल
किया।
9 और बनी — इस्राईल ने मिदियान की 'औरतों और उनके
बच्चों को ग़ुलाम किया, और उनके चौपाये और भेड़ बकरियाँ और
माल — ओ — अस्बाब सब कुछ लूट लिया।
10 और उनकी सुकुनतगाहों के सब शहरों को जिनमें वह रहते
थे, और उनकी सब छावनियों को आग से फूँक दिया।
11 और उन्होंने सारा माल — ए — ग़नीमत और सब ग़ुलाम,
क्या इंसान और क्या हैवान साथ लिए,
12 और उन ग़ुलामों और माल — ए — ग़नीमत को मूसा और
इली'एलियाज़र काहिन और बनी इस्राईल की सारी जमा'अत के
पास उस लश्करगाह में ले आए जो यरीहू के सामने यरदन के
किनारे किनारे मोआब के मैदानों में थी।
13 तब मूसा और इली'एलियाज़र काहिन और जमा'अत के
सब सरदार उनके इस्तक़बाल के लिए लश्करगाह के बाहर गए।
14 और मूसा उन फ़ौजी सरदारों पर जो हज़ारों और सैकड़ों के
सरदार थे और जंग से लौटे थे झल्लाया,
15 और उनसे कहने लगा, "क्या तुम ने सब 'औरतें जीती बचा
रख्खी हैं?

16 *देखो, इन ही ने बल'आम की सलाह से फ़ग़ूर के मु'आमिले
में बनी — इस्राईल से ख़ुदावन्द की हुक्म उदूली कराई, और यूँ
ख़ुदावन्द की जमा'अत में वबा फैली।
17 इसलिए इन बच्चों में जितने लड़के हैं सब को मार डालो,
और जितनी 'औरतें मर्द का मुँह देख चुकी हैं उनको क़त्ल कर
डालो।
18 लेकिन उन लड़कियों को जो मर्द से वाक़िफ़ नहीं और अछूती
हैं, अपने लिए ज़िन्दा रख्खो।
19 और तुम सात दिन तक लश्करगाह के बाहर ही ख़ेमे डाले
पड़े रहो, और तुम में से जितनों ने किसी आदमी की जान से मारा
हो और जितनों ने किसी मक़्तूल को छुआ हो, वह सब अपने आप
को और अपने कैदियों को तीसरे दिन और सातवें दिन पाक करें।
20 तुम अपने सब कपड़ों और चमड़े की सब चीज़ों को और
बकरी के बालों की बुनी हुई चीज़ों को और लकड़ी के सब बर्तनों
को पाक करना।"
21 और इली'एलियाज़र काहिन ने उन सिपाहियों से जो जंग
पर गए थे कहा, शरी'अत का वह क़ानून जिसका हुक्म ख़ुदावन्द
ने मूसा को दिया यही है, कि
22 सोना और चाँदी और पीतल और लोहा और रांगा और
सीसा;
23 ग़रज़ जो कुछ आग में ठहर सके वह सब तुम आग में डालना
तब वह साफ़ होगा, तो भी नापाकी दूर करने के पानी से उसे पाक
करना पड़ेगा; और जो कुछ आग में न ठहर सके उसे तुम पानी में
डालना।
24 †और तुम सातवें दिन अपने कपड़े धोना तब तुम पाक

---

* **31:16** मायने की जांच करें, अगर साफ़ नहीं है तो सलाह के पीछे चलें — सलाह: यह वह लोग थे जो बलाम की नसीहत पर चलते थे और बनी इस्राईल को सबब बनाते थे कि वह पीओर पहाड़ पर ख़ुदावंद के ख़िलाफ़ बग़ावतकरें — यह वह लोग थे जिन के सबब से ख़ुदावंद के लोगों पर वबाकी मार पड़ी — देखेंगिनती का 25 बाब † **31:24** छावनी के बाहर क़ैद रहो

ठहरोगे, इसके बाद लश्करगाह में दाख़िल होना।

[illegible]

25 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,
26 "इली'एलियाज़र काहिन और जमा'अत के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों को साथ लेकर, तू उन आदमियों और जानवरों को शुमार कर जो लूट में आए हैं।
27 और लूट के इस माल को दो हिस्सों में तक़्सीम कर कि, एक हिस्सा उन जंगी मर्दों को दे जो लड़ाई में गए थे और दूसरा हिस्सा जमा'अत को दे।
28 और उन जंगी मर्दों से जो लड़ाई में गए थे, ख़ुदावन्द के लिए चाहे आदमी हों या गाय — बैल या गधे या भेड़ बकरियाँ, हर पाँच सौ पीछे एक को हिस्से के तौर पर ले;
29 इनही के आधे में से इस हिस्से को लेकर इली'एलियाज़र काहिन को देना, ताकि यह ख़ुदावन्द के सामने उठाने की क़ुर्बानी ठहरे।
30 और बनी — इस्राईल के आधे में से चाहे आदमी हों या गाय — बैल या गधे या भेड़ — बकरियाँ, या'नी सब क़िस्म के चौपायों में से पचास — पचास पीछे एक — एक को लेकर लावियों को देना जो ख़ुदावन्द के घर की मुहाफ़िज़त करते हैं।"
31 चुनाँचे मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा था वैसा ही किया।
32 और जो कुछ माल — ए — ग़नीमत जंगी मर्दों के हाथ आया था उसे छोड़कर लूट के माल में छः लाख पिछतर हज़ार भेड़ — बकरियाँ थीं;
33 और बहतर हज़ार गाय — बैल,
34 और इकसठ हज़ार गधे,
35 और नुफ़ूस — ए — इंसानी में से बतीस हज़ार ऐसी 'औरतें जो मर्द से नावाक़िफ़ और अछूती थीं।

36 और लूट के माल के उस आधे में जो जंगी मर्दों का हिस्सा
था, तीन लाख सैंतीस हज़ार पाँच सौ भेड़ — बकरियाँ थीं,
37 जिनमें से छ: सौ पिछत्तर भेड़ — बकरियाँ ख़ुदावन्द के
हिस्से के लिए थीं।
38 और छत्तीस हज़ार गाय — बैल थे, जिनमें से बहत्तर
ख़ुदावन्द के हिस्से के थे।
39 और तीस हज़ार पाँच सौ गधे थे, जिनमें से इकसठ गधे
ख़ुदावन्द के हिस्से के थे।
40 और नुफ़ूस — ए — इंसानी का शुमार सोलह हज़ार था,
जिनमें से बतीस जानें ख़ुदावन्द के हिस्से की थीं।
41 तब मूसा ने ख़ुदावन्द के हुक्म के मुवाफ़िक़ उस हिस्से को
जो ख़ुदावन्द के उठाने की क़ुर्बानी थी, इली'एलियाज़र काहिन
को दिया।
42 अब रहा बनी — इस्राईल का आधा हिस्सा, जिसे मूसा ने
जंगी मर्दों के हिस्से से अलग रख्खा था;
43 फिर इस आधे में भी जो जमा'अत को दिया गया तीन लाख
सैंतीस हज़ार पाँच सौ भेड़ — बकरियाँ थीं,
44 और छत्तीस हज़ार गाय — बैल
45 और तीस हज़ार पाँच सौ गधे,
46 और सोलह हज़ार नुफ़ूस — ए — इंसान ी।
47 और बनी — इस्राईल के इस आधे में से मूसा ने ख़ुदावन्द
के हुक्म के मुवाफ़िक़, क्या इंसान और क्या हैवान हर पचास
पीछे एक को लेकर लावियों को दिया जो ख़ुदावन्द के घर की
मुहाफ़िज़त करते थे।
48 तब वह फ़ौजी सरदार जो हज़ारों और सैकड़ों सिपाहियों के
सरदार थे, मूसा के पास आकर
49 उससे कहने लगे, "तेरे ख़ादिमों ने उन सब जंगी मर्दों को जो
हमारे मातहत हैं गिना, और उनमें से एक जवान भी कम न हुआ।
50 इसलिए हम में से जो कुछ जिसके हाथ लगा, या'नी सोने

के ज़ेवर और पाज़ेब और कंगन और अंगूठियाँ और मुन्दरें और
बाज़ूबन्द यह सब हम ख़ुदावन्द के हदिये के तौर पर ले आए हैं
ताकि हमारी जानों के लिए ख़ुदावन्द के सामने कफ़्फ़ारा दिया
जाए।”
51 चुनाँचे मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने उनसे यह सब
सोने के घड़े हुए ज़ेवर ले लिए।
52 और उस हदिये का सारा सोना जो हज़ारों और सैकड़ों के
सरदारों ने ख़ुदावन्द के सामने पेश कर, वह या'नी, तकरीबन 190
कि. ग्रा. या'नीसोलह हज़ार सात सौ पचास मिस्काल था।
53 क्यूँकि जंगी मर्दों में से हर एक कुछ न कुछ लूट कर ले आया
था।
54 तब मूसा और इली'एलियाज़र काहिन उस सोने को जो
उन्होंने हज़ारों और सैकड़ों के सरदारों से लिया था, ख़ेमा — ए
— इजितमा'अ में लाए ताकि वह ख़ुदावन्द के सामने बनी —
इस्राईल की यादगार ठहरे।

32

[illegible]

1 और बनी रूबिन और बनी जद्द के पास चौपायों के बहुत
बड़े बड़े ग़ोल थे। इसलिए जब उन्होंने या'ज़ेर और जिल'आद
के मुल्कों को देखा कि यह मक़ाम चौपायों के लिए बहुत अच्छे
हैं,
2 तो उन्होंने जाकर मूसा और इली'एलियाज़र काहिन और
जमा'अत के सरदारों से कहा कि,
3 'अतारात और दीबोन और या'ज़ेर और निमरा और हस्बोन,
इली'आली और शबाम और नबू और बऊन,
4 या'नी वह मुल्क जिस पर ख़ुदावन्द ने इस्राईल की जमा'अत
को फ़तह दिलाई है, चौपायों के लिए बहुत अच्छा है और तेरे
ख़ादिमों के पास चौपाये हैं।

5 इसलिए अगर हम पर तेरे करम की नज़र है तो इसी मुल्क
को अपने ख़ादिमों की मीरास कर दे, और हम को यरदन पार न
ले जा।
6 मूसा ने बनी रूबिन और बनी जद्द से कहा, “क्या तुम्हारे भाई
लड़ाई में जाएँ और तुम यहीं बैठे रहो?
7 तुम क्यूँ बनी — इस्राईल को पार उतर कर उस मुल्क में जाने
से, जो ख़ुदावन्द ने उन को दिया है, बेदिल करते हो?
8 तुम्हारे बाप दादा ने भी, जब मैंने उनको क़ादिस बरनी' से
भेजा कि मुल्क का हाल दरियाफ़्त करें तो ऐसा ही किया था।
9 क्यूँकि जब वह वादी — ए — इस्काल में पहुँचे और उस मुल्क
को देखा, तो उन्होंने बनी — इस्राईल को बे — दिल कर दिया,
ताकि वह उस मुल्क में जो ख़ुदावन्द ने उनको 'इनायत किया न
जाएँ।
10 और उसी दिन ख़ुदावन्द का ग़ज़ब भड़का और उसने क़सम
खाकर कहा, कि
11 उन लोगों में से जो मिस्र से निकल कर आये हैं बीस बरस
और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का कोई शख़्स उस मुल्क को नहीं
देखने पाएगा, जिसके देने की क़सम मैंने अब्रहाम और इस्हाक़
और या'क़ूब से खाई; क्यूँकि उन्होंने मेरी पूरी पैरवी नहीं की।
12 मगर युफ़ना क़िन्ज़ी का बेटा कालिब और नून का बेटा
यशू'अ उसे देखेंगे, क्यूँकि उन्होंने ख़ुदावन्द की पूरी पैरवी की है।
13 सो ख़ुदावन्द का क़हर इस्राईल पर भड़का और उसने उनकी
वीरान में चालीस बरस तक आवारा फिराया, जब तक कि उस
नसल के सब लोग जिन्होंने ख़ुदावन्द के सामने गुनाह किया था,
नाबूद न हो गए।
14 और देखो, तुम जो गुनाहगारों की नसल हो, अब अपने बाप
दादा की जगह उठे हो, ताकि ख़ुदावन्द के क़हर — ए — शदीद
की इस्राईलियों पर ज़्यादा कराओ।
15 क्यूँकि अगर तुम उस की पैरवी से फिर जाओ तो वह उनको

फिर वीरान में छोड़ देगा, और तुम इन सब लोगों को हलाक कराओगे।"
16 तब वह उसके नज़दीक आकर कहने लगे, हम अपने चौपायों
के लिए यहाँ भेड़साले और अपने बाल — बच्चों के लिए शहर
बनाएँगे,
17 लेकिन हम ख़ुद हथियार बाँधे हुए तैयार रहेंगे के बनी —
इस्राईल के आगे आगे चलें, जब तक कि उनको उनकी जगह तक
न पहुँचा दें; और हमारे बाल — बच्चे इस मुल्क के बाशिन्दों की
वजह से फ़सीलदार शहरों में रहेंगे।
18 और हम अपने घरों को फिर वापस नहीं आएँगे जब तक बनी
— इस्राईल का एक — एक आदमी अपनी मीरास का मालिक न
हो जाए।
19 और हम उनमें शामिल होकर यरदन के उस पार या उससे
आगे, मीरास न लेंगे क्यूँकि हमारी मीरास यरदन के इस पार
पश्चिम की तरफ़ हम को मिल गई।"
20 मूसा ने उनसे कहा, अगर तुम यह काम करो और ख़ुदावन्द
के सामने हथियारबन्द होकर लड़ने जाओ,
21 और तुम्हारे हथियार बन्द जवान ख़ुदावन्द के सामने यरदन
पार जाएँ, जब तक कि ख़ुदावन्द अपने दुश्मनों को अपने सामने
से दफ़ा' न करे,
22 और वह मुल्क ख़ुदावन्द के सामने क़ब्ज़े में न आ जाए;
तो इसके बाद तुम वापस आओ, फिर तुम ख़ुदावन्द के सामने
और इस्राईल के आगे बेगुनाह ठहरोगे और यह मुल्क ख़ुदावन्द
के सामने तुम्हारी मिल्कियत हो जाएगा।
23 लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो तुम ख़ुदावन्द के
गुनाहगार ठहरोगे; और यह जान लो कि तुम्हारा गुनाह तुम को
पकड़ेगा।
24 इसलिए तुम अपने बाल बच्चों के लिए शहर और अपनी
भेड़ — बकरियों के लिए भेड़साले बनाओ; जो तुम्हारे मुँह से

निकला है वही करो।"
25 तब बनी जद्द और बनी रूबिन ने मूसा से कहा कि "तेरे
ख़ादिम, जैसा हमारे मालिक का हुक्म है वैसा ही करेंगे।
26 हमारे बाल बच्चे और हमारी बीवियाँ, हमारी भेड़ बकरियाँ
और हमारे सब चौपाये जिल'आद के शहरों में रहेंगे;
27 लेकिन हम जो तेरे ख़ादिम हैं, इसलिए हमारा एक — एक
हथियारबन्द जवान ख़ुदावन्द के सामने लड़ने को पार जाएगा,
जैसा हमारा मालिक कहता है।"
28 तब मूसा ने उनके बारे में इली'एलियाज़र काहिन और नून के
बेटे यशू'अ और इस्राईली क़बाइल के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों
को वसीयत की
29 और उनसे यह कहा कि "अगर बनी जद्द और बनी रूबिन का
एक — एक मर्द ख़ुदावन्द के सामने तुम्हारे साथ यरदन के पार
हथियारबन्द होकर लड़ाई में जाए और उस मुल्क पर तुम्हारा
क़ब्ज़ा हो जाए, तो तुम जिल'आद का मुल्क उनकी मीरास कर
देना।
30 लेकिन अगर वह हथियार बाँध कर तुम्हारे साथ पार न
जाएँ, तो उनको भी मुल्क — ए — कना'न ही में तुम्हारे बीच
मीरास मिले।"
31 तब बनी जद्द और बनी रूबिन ने जवाब दिया, जैसा
ख़ुदावन्द ने तेरे ख़ादिमों को हुक्म दिया है, हम वैसा ही करेंगे।
32 हम हथियार बाँध कर ख़ुदावन्द के सामने उस पार मुल्क
— ए — कना'न को जाएँगे, लेकिन यरदन के इस पार ही हमारी
मीरास रहे।"
33 तब मूसा ने अमोरियों के बादशाह सीहोन की मम्लकत और
बसन के बादशाह 'ओज की मम्लकत को, या'नी उनके मुल्कों को
और शहरों को जो उन अतराफ़ में थे, और उस सारी नवाही के
शहरों को बनी जद्द और बनी रूबिन और मनस्सी बिन यूसुफ़ के
आधे क़बीले को दे दिया।

34 तब बनी जद्द ने तब बनी जद्द ने दिबोन और 'अतारात और
अरो'ईर,
35 और 'अतारात, शोफ़ान, और या'ज़ेर, और युगबिहा,
36 और बैत निमरा, और बैत हारन, फ़सीलदार शहर और
भेड़साले बनाए।
37 और बनी रूबिन ने हस्बोन, और इली'आली, और
करयताइम,
38 और नबो, और बालम'ऊन के नाम बदलकर उनको और
शिबमाह को बनाया, और उन्होंने अपने बनाए हुए शहरों के दूसरे
नाम रख्खे।
39 और मनस्सी के बेटे मकीर की नसल के लोगों ने जाकर
जिल'आद को ले लिया, और अमोरियों को जो वहाँ बसे हुए थे
निकाल दिया।
40 तब मूसा ने जिल'आद मकीर बिन मनस्सी को दे दिया। तब
उसकी नसल के लोग वहाँ सुकूनत करने लगे।
41 और मनस्सी के बेटे याईर ने उस नवाही की बस्तियों की
जाकर ले लिया और उनका नाम *हव्वहत या'ईर रख्खा
42 और नूबह ने कनात और उसके देहात को अपने क़ब्ज़े में कर
लिया और अपने ही नाम पर उस का भी नाम नूबह रख्खा।

33

1 जब बनी — इस्राईल मूसा और हारून के मातहत दल बाँधे
हुए मुल्क — ए — मिस्र से निकल कर चले तो जैल की मंज़िलों
पर उन्होंने क़याम किया।
2 और मूसा ने उनके सफ़र का हाल उनकी मंज़िलों के मुताबिक़
ख़ुदावन्द के हुक्म से लिखा किया; इसलिए उनके सफ़र की
मंज़िलें यह हैं।

* **32:41** मतलब जेर का गाँव

3 पहले महीने की पंद्रहवी तारीख़ की उन्होंने *रा'मसीस से
रवानगी की। फ़सह के दूसरे दिन सब बनी — इस्राईल के लोग
सब मिस्रियों की आँखों के सामने बड़े फ़ख़्र से रवाना †हुए।
4 उस वक़्त मिस्री अपने पहलौठों को, जिनको ख़ुदावन्द ने मारा
था दफ़न कर रहे थे। ख़ुदावन्द ने उनके मा'बूदों को भी सज़ा दी
थी।
5 इसलिए बनी — इस्राईल ने रा'मसीस से रवाना होकर
सुक्कात में ख़ेमे डाले।
6 और सुक्कात से रवाना होकर एताम में, जो वीरान से मिला
हुआ है मुक़ीम हुए।
7 फिर एताम से रवाना होकर हर हखीरोत को, जो बा'ल सफ़ोन
के सामने है मुड़ गए और मिजदाल के सामने ख़ेमे डाले।
8 फिर उन्होंने फ़ी हख़ीरोत के सामने से कूच किया और समन्दर
के बीच से गुज़र कर वीरान में दाख़िल हुए, और दश्त — ए —
एताम में तीन दिन की राह चल कर मारा में पड़ाव किया।
9 और मारा से रवाना होकर एलीम में आए। और एलीम में
पानी के बारह चश्मे और खजूर के सत्तर दरख़्त थे, इसलिए
उन्होंने यहीं ख़ेमे डाल लिए।
10 और एलीम से रवाना होकर उन्होंने बहर — ए — क़ुलज़ुम
के किनारे ख़ेमे खड़े किए।
11 और बहर — ए — क़ुलज़ुम से चल कर सीन के जंगल में
ख़ेमाज़न हुए।
12 और सीन के जंगल से रवाना होकर दफ़का में ठहरे।
13 और दफ़का से रवाना होकर अलूस में मुक़ीम हुए।
14 और अलूस से चल कर रफ़ीदीम में ख़ेमे डाले। यहाँ इन
लोगों को पीने के लिए पानी न मिला।

---

* **33:3** रामसीस के साथ शहर जोड़ें † **33:3** इब्री कैलेंडर का पहला महिना मार्च
और अप्रैल के बीच पड़ता है, फ़सेह का दूसरा दिन पहले महीने का पन्द्रहवादिन क़रार
दिया जाता है —

15 और रफ़ीदीम से रवाना होकर दश्त — ए — सीना में ठहरे।
16 और सीना के जंगल से चल कर क़बरोत हतावा में ख़ेमें खड़े
किए।
17 और क़बरोत हतावा से रवाना होकर हसीरात में ख़ेमे डाले।
18 और हसीरात से रवाना होकर रितमा में ख़ेमे डाले।
19 और रितमा से रवाना होकर रिम्मोन फ़ारस में ख़ेमें खड़े
किए।
20 और रिमोन फ़ारस से जो चले तो लिबना में जाकर मुक़ीम
हुए।
21 और लिबना से रवाना होकर रैस्सा में ख़ेमे डाले।
22 और रैस्सा से चलकर कहीलाता में ख़ेमे खड़े किए।
23 और कहीलाता से चल कर कोह — ए — साफ़र के पास
ख़ेमा किया।
24 कोह — ए — साफ़र से रवाना होकर हरादा में ख़ेमाज़न
हुए।
25 और हरादा से सफ़र करके मकहीलोत में क़याम किया।
26 और मकहीलोत से रवाना होकर तहत में ख़ेमें खड़े किए।
27 तहत से जो चले तो तारह में आकर ख़ेमे डाले।
28 और तारह से रवाना होकर मितक़ा में क़याम किया।
29 और मितका से रवाना होकर हशमूना में ख़ेमे डाले।
30 और हशमूना से चल कर मौसीरोत में ख़ेमे खड़े किए।
31 और मौसीरोत से रवाना होकर बनी या'कान में ख़ेमे डाले।
32 और बनी या'कान से चल कर होर हज्जिदजाद में ख़ेमाज़न
हुए।
33 और हीर हज्जिदजाद से रवाना होकर यूतबाता में ख़ेमें खड़े
किए।
34 और यूतबाता से चल कर 'अबरूना में ख़ेमे डाले।
35 और 'अबरूना से चल कर “अस्यून जाबर में ख़ेमा किया।

36 और 'अस्यून जाबर से रवाना होकर सीन के जंगल में, जो
क़ादिस है क़याम किया।
37 और क़ादिस से चल कर कोह — ए — होर के पास, जो मुल्क
— ए — अदोम की सरहद है ख़ेमाज़न हुए।
38 यहाँ हारून काहिन ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ कोह —
ए — होर पर चढ़ गया और उसने बनी — इस्राईल के मुल्क — ए
— मिस्र से निकलने के चालीसवें बरस के पाँचवें महीने की पहली
तारीख़ को वहीं वफ़ात पाई।
39 और जब हारून ने कोह — ए — होर पर वफ़ात पाई तो वह
एक सौ तेईस बरस का था।
40 और 'अराद के कना'नी बादशाह को, जो मुल्क — ए —
कना'न के दख्खिन में रहता था, बनी इस्राईल की आमद की ख़बर
मिली।
41 और इस्राईली कोह — ए — होर से रवाना होकर ज़लमूना
में ठहरे।
42 और ज़लमूना से रवाना होकर फूनोन में ख़ेमे डाले।
43 और फूनोन से रवाना होकर ओबूत में क़याम किया।
44 और ओबूत से रवाना होकर 'अय्यी अबारीम में जो मुल्क
— ए — मोआब की सरहद पर है ख़ेमे डाले,
45 और 'अय्यीम से रवाना होकर दीबोन जद्द में ख़ेमाज़न हुए।
46 और दीबोन जद्द से रवाना होकर 'अलमून दबलातायम में
ख़मे खड़े किए।
47 और 'अलमून दबलातायम से रवाना होकर 'अबारीम के
कोहिस्तान में, जो नबी के सामने है ख़ेमा किया।
48 और 'अबारीम के कोहिस्तान से चल कर मोआब के मैदानों
में, जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे वाके' है ख़ेमाज़न हुए।
49 और यरदन के किनारे बैत यसीमोत से लेकर अबील सतीम
तक मोआब के मैदानों में उन्होंने ख़ेमे डाले।

50 और ख़ुदावन्द ने मोआब के मैदानों में, जो यरीहू के सामने
यरदन के किनारे वाके' है, मूसा से कहा कि,
51 "बनी — इस्राईल से यह कह दे कि जब तुम यरदन को उबूर
करके मुल्क — ए — कना'न में दाख़िल हो,
52 तो तुम उस मुल्क के सारे बाशिन्दों को वहाँ से निकाल देना,
और उनके शबीहदार पत्थरों को और उनके ढाले हुए बुतों को तोड़
डालना, और उनके सब ऊँचे मक़ामों को तबाह कर देना।
53 और तुम उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उसमें बसना, क्यूँकि मैंने
वह मुल्क तुम को दिया है कि तुम उसके मालिक बनो।
54 और तुम पर्ची डाल कर उस मुल्क को अपने घरानों में मीरास
के तौर पर बाँट लेना। जिस ख़ान्दान में ज़्यादा आदमी हों उसको
ज़्यादा, और जिसमें थोड़े हों उसको थोड़ी मीरास देना; और जिस
आदमी का पर्चा जिस जगह के लिए निकले वही उसके हिस्से
में मिले। तुम अपने आबाई क़बाइल के मुताबिक़ अपनी अपनी
मीरास लेना।
55 लेकिन अगर तुम उस मुल्क के बाशिन्दों को अपने आगे से
दूर न करो, तो जिनको तुम बाक़ी रहने दोगे वह तुम्हारी आँखों
में ख़ार और तुम्हारे पहलुओं में काँटे होंगे, और उस मुल्क में जहाँ
तुम बसोगे तुम को दिक़ करेंगे।
56 और आख़िर को यूँ होगा कि जैसा मैंने उनके साथ करने का
इरादा किया वैसा ही तुम से करूँगा।"

34

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,
2 "बनी — इस्राईल को हुक्म कर, और उनको कह दे कि जब
तुम मुल्क — ए — कना'न में दाख़िल हो; यह वही मुल्क है जो

तुम्हारी मीरास होगा, या'नी कनान का मुल्क म'ए अपनी हुदूद
— ए — अरबा' के
3 तो तुम्हारी दख्खिनी सिम्त सीन के जंगल से लेकर मुल्क —
ए — अदोम के किनारे किनारे हो, और तुम्हारी दख्खिनी सरहद
दरिया — ए — शोर के आख़िर से शुरू' होकर पश्चिम को जाए।
4 वहाँ से तुम्हारी सरहद 'अक़राबियम की चढ़ाई के दख्खिन
तक पहुँच कर मुड़े, और सीन से होती हुई क़ादिस बर्नी'अ के
दख्खिन में जाकर निकले, और हसर अद्दार से होकर 'अज़मून तक
पहुँचे।
5 फिर यही सरहद 'अज़मून से होकर घूमती हुई मिस्र की नहर
तक जाए और समन्दर के किनारे पर ख़त्म हो।
6 "और पश्चिमी सिम्त में बड़ा समन्दर और उसका साहिल हो,
इसलिए यही तुम्हारी पश्चिमी सरहद ठहरे।
7 "और उत्तरी सिम्त में तुम बड़े समन्दर से कोह — ए — होर
तक अपनी हद्द रखना।
8 फिर कोह — ए — होर से हमात के मदख़ल तक तुम इस
तरह अपनी हद्द मुक़र्रर करना कि वह सिदाद से जा मिले।
9 और वहाँ से होती हुई ज़िफ़रून को निकल जाए और हसर
'एनान पर जाकर ख़त्म हो, यह तुम्हारी उत्तरी सरहद हो।
10 "और तुम अपनी पूरबी सरहद हसर 'एनान से लेकर सफ़ाम
तक बाँधना।
11 और यह सरहद सफ़ाम से रिबला तक जो 'ऐन के पश्चिम
में है जाए, और वहाँ से नीचे को उतरती हुई किन्नरत की झील के
पूरबी किनारे तक पहुँचे:
12 और फिर यरदन के किनारे किनारे नीचे को जाकर दरिया
— ए — शोर पर ख़त्म हो। इन हदों के अन्दर का मुल्क तुम्हारा
होगा।"
13 तब मूसा ने बनी — इस्राईल को हुक्म दिया, "यही वह

ज़मीन है जिसे तुम पर्ची डाल कर मीरास में लोगे, और इसी के बारे में ख़ुदावन्द ने हुक्म दिया है कि वह साढ़े नौ क़बीलों को दी जाए।

14 क्यूँकि बनी रूबिन के क़बीले ने अपने आबाई ख़ान्दानों के मुवाफ़िक, और बनी जद्द के क़बीले ने भी अपने आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ मीरास पा ली, और बनी मनस्सी के आधे क़बीले ने भी अपनी मीरास पा ली;

15 या'नी इन ढाई क़बीलों को यरदन के इसी पार यरीहू के सामने पश्चिम की तरफ़ जिधर से सूरज निकलता है मीरास मिल चुकी है।"

[illegible]

16 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,

17 'जो अश्ख़ास इस मुल्क को मीरास के तौर पर तुम को बाँट देंगे उन के नाम यह हैं, या'नी इली'एलियाज़र काहिन और नून का बेटा यशू'अ।

18 और तुम ज़मीन को मीरास के तौर पर बाँटने के लिए हर क़बीले से एक सरदार को लेना।

19 और उन आदमियों के नाम यह हैं: यहूदाह के क़बीले से यफुना का बेटा कालिब,

20 और बनी शमौन के क़बीले से अम्मीहूद का बेटा समूएल,

21 और बिनयमीन के क़बीले से किसलून का बेटा इलीदाद,

22 और बनी दान के क़बीले से एक सरदार बुक्की बिन युगली,

23 और बनी यूसुफ़ में से या'नी बनी मनस्सी के क़बीले से एक सरदार हनीएल बिन अफ़ूद,

24 और बनी इफ़्राईम के क़बीले से एक सरदार क़मूएल बिन सिफ़्तान,

25 और बनी ज़बूलून के क़बीले से एक सरदार इलिसफ़न बिन फ़रनाक,

26 और बनी इश्कार के क़बीले से एक सरदार फ़लतीएल बिन 'अज़्ज़ान,
27 और बनी आशर के क़बीले से एक सरदार अख़ीहूद बिन शलूमी,
28 और बनी नफ़ताली के क़बीले से एक सरदार फ़िदाहेल बिन 'अम्मीहूद।"
29 यह वह लोग हैं जिनको ख़ुदावन्द ने हुक्म दिया कि मुल्क — ए — कना'न में बनी — इस्राईल को मीरास तक़्सीम कर दें।

35

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द ने मोआब के मैदानों में, जो यरीहू के सामने *यरदन के किनारे वाके' हैं, मूसा से कहा कि,
2 "बनी इस्राईल को हुक्म कर, कि अपनी मीरास में से जो उनके क़ब्ज़े में आए लावियों की रहने के लिए शहर दें, और उन शहरों के 'इलाक़े भी तुम लावियों को दे देना।
3 यह शहर उनके रहने के लिए हों; उनके 'इलाक़े उनके चौपायों और माल और सारे जानवरों के लिए हों।
4 और शहरों के 'इलाक़े जो तुम लावियों को दो वह हर शहर की दीवार से शुरू' करके बाहर चारों तरफ़ हज़ार — हज़ार हाथ के फेर में हों।
5 और तुम शहर के बाहर पश्चिम की तरफ़ दो हज़ार हाथ, और दक्खिन की तरफ़ दो हज़ार हाथ, और पश्चिम की तरफ़ दो हज़ार हाथ, और उत्तर की तरफ़ दो हज़ार हाथ इस तरह पैमाइश करना के शहर उनके बीच में आ जाए। उनके शहरों के इतनी ही 'इलाक़े हों।

* **35:1** यरदन नदी

6 और लावियों के उन शहरों में से जो तुम उनको दो, छः पनाह के शहर ठहरा देना जिनमें ख़ूनी भाग जाएँ। इन शहरों के 'अलावा बयालीस शहर और उनको देना;

7 या'नी सब मिला कर अठतालीस शहर लावियों को देना और इन शहरों के साथ इनके 'इलाक़े भी हों।

8 और वह शहर बनी — इस्राईल की मीरास में से यूँ दिए जाएँ। जिनके क़ब्ज़े में बहुत से हों उनसे थोड़े शहर लेना। हर क़बीला अपनी मीरास के मुताबिक़ जिसका वह वारिस हो लावियों के लिए शहर दे।"

□□□□□□□□□□ □□ □□□

9 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,

10 "बनी — इस्राईल से कह दे कि जब तुम यरदन को पार करके मुल्क — ए — कना'न में पहुँच जाओ,

11 तो तुम कई ऐसे शहर मुक़र्रर करना जो तुम्हारे लिए पनाह के शहर हों, ताकि वह ख़ूनी जिससे अनजाने में ख़ून हो जाए वहाँ भाग जा सके।

12 इन शहरों में तुम को इन्तक़ाम लेने वाले से पनाह मिलेगी, ताकि ख़ूनी जब तक वह फ़ैसले के लिए जमा'अत के आगे हाज़िर न हो तब तक मारा न जाए।

13 और पनाह के जो शहर तुम दोगे वह छः हों।

14 तीन शहर तो यरदन के पार और तीन मुल्क — ए — कना'न में देना। यह पनाह के शहर होंगे।

15 इन छहों शहरों में बनी — इस्राईल को और उन मुसाफ़िरों और परदेसियों को जो तुम में क़याम करते हैं, पनाह मिलेगी ताकि जिस किसी से अनजाने में ख़ून हो जाए वह वहाँ भाग जा सके।

16 'और अगर कोई किसी को लोहे के हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह ख़ूनी ठहरेगा और वह ख़ूनी ज़रूर मारा जाए।

17 या अगर कोई ऐसा पत्थर हाथ में लेकर जिससे आदमी मर
सकता हो, किसी को मारे और वह मर जाए, तो वह ख़ूनी ठहरेगा
और वह ख़ूनी ज़रूर मारा जाए।
18 या अगर कोई चोबी आला हाथ में लेकर जिससे आदमी मर
सकता हो, किसी को मारे और वह मर जाए, तो वह ख़ूनी ठहरेगा
और वह ख़ूनी ज़रूर मारा जाए।
19 ख़ून का इन्तक़ाम लेने वाला ख़ूनी को आप ही क़त्ल करे;
जब वह उसे मिले तब ही उसे मार डाले।
20 और अगर कोई किसी को 'अदावत से धकेल दे या घात
लगा कर कुछ उस पर फेंक दे और वह मर जाए,
21 या दुश्मनी से उसे अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए;
तो वह जिसने मारा हो ज़रूर क़त्ल किया जाए क्यूँकि वह ख़ूनी
है। ख़ून का इन्तक़ाम लेने वाला इस ख़ूनी को जब वह उसे मिले
मार डाले।
22 'लेकिन अगर कोई किसी को बग़ैर 'अदावत के नागहान
धकेल दे या बग़ैर घात लगाए उस पर कोई चीज़ डाल दे,
23 या उसे बग़ैर देखे कोई ऐसा पत्थर उस पर फेंके जिससे
आदमी मर सकता हो, और वह मर जाए; लेकिन यह न तो उसका
दुश्मन और न उसके नुक़सान का ख्वाहान था;
24 तो जमा'अत ऐसे क़ातिल और ख़ून के इन्तक़ाम लेने वाले
के बीच इन ही हुक्मों के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे;
25 और जमा'अत उस क़ातिल को ख़ून के इन्तक़ाम लेने वाले
के हाथ से छुड़ाए और जमा'अत ही उसे पनाह के उस शहर में
जहाँ वह भाग गया था वापस पहुँचा दे, और जब तक सरदार
काहिन जो पाक तेल से मम्सूह हुआ था मर न जाए तब तक वह
वहीं रहे।
26 लेकिन अगर वह ख़ूनी अपने पनाह के शहर की सरहद से,
जहाँ वह भाग कर गया हो किसी वक़्त बाहर निकले,

27 और ख़ून के इन्तक़ाम लेने वाले की वह पनाह के शहर की
सरहद के बाहर मिल जाए और इन्तक़ाम लेने वाला क़ातिल को
क़त्ल कर डाले, तो वह ख़ून करने का मुजरिम न होगा;
28 क्यूँकि ख़ूनी को लाज़िम था कि सरदार काहिन की वफ़ात
तक उसी पनाह कि शहर में रहता, लेकिन सरदार काहिन के मरने
के बाद ख़ूनी अपनी मौरूसी जगह को लौट जाए।
29 "इसलिए तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल — दर —
नसल यह बातें फ़ैसले के लिए क़ानून ठहरेंगी।
30 अगर कोई किसी को मार डाले तो कातिल गवाहों की
शहादत पर क़त्ल किया जाए, लेकिन एक गवाह की शहादत से
कोई मारा न जाए।
31 और तुम उस क़ातिल से जो वाजिब — उल — क़त्ल हो
दियत न लेना बल्कि वह ज़रूर ही मारा जाए।
32 और तुम उससे भी जो किसी पनाह के शहर को भाग गया
हो, इस ग़र्ज़ से दियत न लेना कि वह सरदार काहिन की मौत से
पहले फिर मुल्क में रहने को लौटने पाए।
33 इसलिए तुम उस मुल्क को जहाँ तुम रहोगे नापाक न करना,
क्यूँकि ख़ून मुल्क को नापाक कर देता है; और उस मुल्क के लिए
जिसमें ख़ून बहाया जाए अलावा क़ातिल के ख़ून के और किसी
चीज़ का कफ़्फ़ारा नहीं लिया जा सकता।
34 और तुम अपनी क़याम के मुल्क को जिसके अन्दर मैं रहूँगा,
गन्दा भी न करना; क्यूँकि मैं जो ख़ुदावन्द हूँ, इसलिए बनी —
इस्राईल के बीच रहता हूँ।"

36

[illegible]

1 और बनी यूसुफ़ के घरानों में से बनी जिल'आद बिन मकीर
बिन मनस्सी के आबाई ख़ान्दानों के सरदार मूसा और उन अमीरों

के पास जाकर जो बनी इस्राईल के आबाई ख़ान्दानों के सरदार थे
कहने लगे,
2 “ख़ुदावन्द ने हमारे मालिक को हुक्म दिया था कि पर्ची डाल
कर यह मुल्क मीरास के तौर पर बनी — इस्राईल को देना; और
हमारे मालिक को ख़ुदावन्द की तरफ़ से हुक्म मिला था, कि हमारे
भाई सिलाफ़िहाद की मीरास उसकी बेटियों को दी जाए।
3 लेकिन अगर वह बनी — इस्राईल के और क़बीलों के
आदमियों से ब्याही जाएँ, तो उनकी मीरास हमारे बाप — दादा
की मीरास से निकल कर उस क़बीले की मीरास में शामिल की
जाएगी जिसमें वह ब्याही जाएँगी; यूँ वह हमारे हिस्से की मीरास
से अलग हो जाएगी।
4 और जब बनी — इस्राईल का साल — ए — यूबली आएगा,
तो उनकी मीरास उसी क़बीले की मीरास से मुल्हक़ की जाएगी
जिसमें वह ब्याही जाएँगी। यूँ हमारे बाप — दादा के क़बीले की
मीरास से उनका हिस्सा निकल जाएगा।”
5 तब मूसा ने ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ बनी — इस्राईल
को हुक्म दिया और कहा कि “बनी यूसुफ़ के क़बीले के लोग ठीक
कहते हैं।
6 इसलिए सिलाफ़िहाद की बेटियों के हक़ में ख़ुदावन्द का हुक्म
यह है कि वह जिनको पसन्द करें उन्हीं से ब्याह करें, लेकिन अपने
बापदादा के क़बीले ही के ख़ान्दानों में ब्याही जाएँ।
7 यूँ बनी — इस्राईल की मीरास एक क़बीले से दूसरे क़बीले में
नहीं जाने पाएगी; क्यूँकि हर इस्राईली को अपने बाप — दादा के
क़बीले की मीरास को अपने क़ब्ज़े में रखना होगा।
8 और अगर बनी इस्राईल के किसी क़बीले में कोई लड़की हो
जो मीरास की, मालिक हो तो वह अपने बाप के क़बीले के किसी
ख़ानदान में ब्याह करे ताकि हर इस्राईली अपने बाप दादा की
मीरास पर क़ाईम रहे।
9 यूँ किसी की मीरास एक क़बीले से दूसरे क़बीले में नहीं जाने

पाएगी; क्यूँकि बनी — इस्राईल के क़बीलों को लाज़िम है कि
अपनी अपनी मीरास अपने — अपने क़ब्ज़े में रख्खें।"
10 और सिलाफ़िहाद की बेटियों ने जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को
हुक्म दिया था वैसा ही किया।
11 क्यूँकि महलाह और तिरज़ाह और हुजलाह और मिल्काह
और नू'आह जो सिलाफ़िहाद की बेटियाँ थीं, वह अपने चचेरे
भाइयों के साथ ब्याही गई,
12 या'नी वह यूसुफ़ के बेटे मनस्सी की नसल के ख़ान्दानों में
ब्याही गई, और उनकी मीरास, उनके आबाई ख़ान्दान के क़बीले
में क़ाईम रही।
13 जो हुक्म और फ़ैसले ख़ुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' मोआब
के मैदानों में जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे वाक़े' है बनी
इस्राईल को दिए वह यही हैं।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc